रुकू–172 (10 यूनुस : 1–10)

الٓرٰ ۟ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝١ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ
اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ
مُّبِيْنٌ ۝٢ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ

بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ اِلَيْهِ
مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤ هُوَ
الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّ الْقَمَرَ نُوْرًا وَّ قَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا
عَدَدَ السِّنِيْنَ وَ الْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَا خَلَقَ
اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا
يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَ رَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ اطْمَاَنُّوْا بِهَا وَ الَّذِيْنَ هُمْ
عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧ۙ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۝٨ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ
بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩
دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَ اٰخِرُ
دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ۧ

अलिफ़, लाम, रा, ये उस ये उस किताब की आयात हैं जो हिकमत व दानिश से लबरेज़ है। क्या लोगों के लिए यह एक अजीब बात हो गई कि हमने खुद उन्हीं में से एक आदमी पर

वहय भेजी कि (ग़फ़लत में पड़े हुए) लोगों को चौंका दे और जो मान लें उनको ख़ुशख़बरी दे दे कि उनके लिए उनके रब पास सच्ची इज़्ज़त व सरफ़राज़ी है? (इसपर) मुनकिरीन ने कहा कि यह शख़्स तो खुला जादूगर है। हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब वही ख़ुदा है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, फिर तख़्ते-सल्तनत पर जलवागर होकर कायनात का इन्तिज़ाम चला रहा है। कोई शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वाला नहीं है इल्ला यह कि उसकी इजाज़त के बाद शिफ़ाअत करे। यही अल्लाह तुम्हारा रब है, लिहाज़ा तुम इसी की इबादत करो। फिर क्या तुम होश में न आओगे? उसी की तरफ़ तुम सबको पलटकर जाना है, यह अल्लाह का पक्का वादा है। बेशक पैदाइश की इबतिदा वही करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए उनको इनसाफ़ के साथ जज़ा दे, और जिन्होंने कुफ़्र का तरीक़ा इख़्तियार किया वे खौलता हुआ पानी पिएँ और दर्दनाक सज़ा भुगतें उस इनकारे-हक़ की पादाश में जो वे करते रहे। वही है जिसने सूरज को उजियाला बनाया और चाँद को चमक दी और चाँद के घटने-बढ़ने की मंज़िलें ठीक-ठीक मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम उससे बरसों और तारीख़ों के हिसाब मालूम करो। अल्लाह ने ये सब कुछ बरहक ही पैदा किया है। वह अपनी निशानियों को खोल-खोलकर पेश कर रहा है उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। यक़ीनन रात और दिन के उलट-फेर में और हर उस चीज़ में जो अल्लाह ने ज़मीन

और आसमानों में पैदा की है, निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो (ग़लतबीनी और ग़लतरवी से) बचना चाहते हैं। हक़ीक़त यह है कि जो लोग हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं रखते और दुनिया की ज़िन्दगी ही राज़ी और मुत्मइन हो गए हैं, और जो लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं, उनका आख़िरी ठिकाना जहन्नम होगा उन बुराइयों की पादाश में जिनका इकतिसाब वे (अपने इस ग़लत अक़ीदे और ग़लत तर्ज़े-अमल की वजह से) करते रहे। और यह भी हक़ीक़त है कि जो लोग ईमान लाए (यानी जिन्होंने उन सदाक़तों को क़बूल कर लिया जो इस किताब में पेश की गई हैं) और नेक अमल करते रहे उन्हें उनका रब उनके ईमान की वजह से सीधी राह चलाएगा, नेमतभरी जन्नतों में उनके नीचे नहरें बहेंगी, वहाँ उनकी सदा यह होगी कि 'पाक है तू ऐ ख़ुदा, उनकी दुआ यह होगी कि 'सलामती हो' और उनकी हर बात का ख़ात्मा इसपर होगा कि ''सारी तारीफ़ अल्लाह रब्बुल-आलमीन ही के लिए है।''

रुकू–173 (10 यूनुस : 11–20)

وَ لَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ
اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ⑪
وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا
كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑫ وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ

قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ وَ مَا كَانُوْا
لِیُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْقَوْمَ الْمُجْرِمِیْنَ ۝۱۳ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ
خَلٰٓىِٕفَ فِی الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَیْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝۱۴ وَ اِذَا
تُتْلٰی عَلَیْهِمْ اٰیَاتُنَا بَیِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ
بِقُرْاٰنٍ غَیْرِ هٰذَاۤ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا یَكُوْنُ لِیْۤ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ
تِلْقَآئِ نَفْسِیْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا یُوْحٰۤی اِلَیَّ ۚ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ
عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ۝۱۵ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ
عَلَیْكُمْ وَ لَاۤ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖؗ فَقَدْ لَبِثْتُ فِیْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝۱۶ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ
بِاٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝۱۷ وَ یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَا یَضُرُّهُمْ وَ لَا یَنْفَعُهُمْ وَ یَقُوْلُوْنَ هٰۤؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ
قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا یَعْلَمُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِی الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ
وَ تَعٰلٰی عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ۝۱۸ وَ مَا كَانَ النَّاسُ اِلَّاۤ اُمَّةً وَّاحِدَةً
فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِیَ بَیْنَهُمْ فِیْمَا
فِیْهِ یَخْتَلِفُوْنَ ۝۱۹ وَ یَقُوْلُوْنَ لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ
اِنَّمَا الْغَیْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ۝۲۰ ع

अगर कहीं अल्लाह लोगों के साथ बुरा मामला करने में भी उतनी ही जल्दी करता जीतनी वे दुनिया की भलाई माँगने में जल्दी करते हैं तो उनकी मुहलते-अमल कभी की ख़त्म कर दी गई होती। (मगर हमारा यह तरीक़ा नहीं है) इसलिए हम उन लोगों को जो हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं रखते उनकी सरकशी में भटकने के लिए छुट दे देते हैं। इनसान का हाल यह है कि जब उसपर कोई सख़्त वक़्त आता है तो खड़े और बैठे और लेटे हमको पुकारता है, मगर जब हम उसकी मुसीबत टाल देते हैं तो ऐसा चल निकलता है कि गोया उसने कभी अपने किसी बुरे वक़्त पर हमको पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुज़र जाने वालें के लिए उनके करतूत ख़ुशनुमा बना दिया गए हैं। लोगों, तुमसे पहले की क़ौमों को हमने हलाक़ कर दिया जब उन्होंने ज़ुल्म की रविश इख़्तियार की और उनके रसूल उनके पास खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए और उन्होंने ईमान लाकर ही न दिया। इस तरह हम मुजरिमों को उनके जरायम का बदला दिया करते हैं। अब उनके बाद हमने तुमको जमीन में उनकी जगह दी है, ताकि देखें, तुम कैसे अमल करते हो। जब उन्हें हमारी साफ़-साफ़ बातें सुनाई जाती हैं तो वे लोग जो हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं रखते, कहते हैं कि ''इसके बजाय कोई और क़ुरआन लाओ या इसमें कुछ तरमीम करो''" ऐ नबी, उनसे कहो, ''मेरा यह काम नहीं है कि अपनी तरफ़ से इसमें कोई तग़य्युर व तबद्दुल कर लूँ। मैं तो बस उस वहय का पैरौ हूँ जो मेरे पास भेजी जाती है। अगर मैं अपने रब की

नाफ़रमानी करूँ तो मुझे एक बड़े हौलनाक दिन के अज़ाब का डर है।'' और कहो ''अगर अल्लाह की मशीयत यही होती तो मैं यह क़ुरआन तुम्हें कभी न सुनाता और अल्लाह तुम्हें उसकी ख़बर तक न देता। आख़िर इससे पहले मैं एक उम्र तुम्हारे दरमियान गुज़ार चुका हूँ, क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते? फिर उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा जो एक झूटी बात गढ़ कर अल्लाह की तरफ़ मंसूब करे या अल्लाह की वाक़ई आयात को झुटा करार दे। यकीनन मुजरिम कभी फ़लाह नहीं पा सकते।'' ये लोग अल्लाह के सिवा उनकी परस्तिश कर रहे हैं जो इनको न नुकसान पहुँचा सकते हैं, न नफ़ा, और कहते यह हैं कि ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं। ऐ नबी, इनसे कहो ''क्या तुम अल्लाह को उस बात की ख़बर देते हो जिसे वह न आसमानों में जानता है न ज़मीन में?'' पाक है वह और बाला व बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। इबतिदाअन सारे इनसान एक ही उम्मत थे, बाद में उन्होंने मुख़्तलिफ़ अक़ीदे और मसलक बना लिया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले ही एक बात तय न कर ली गई होती तो जिस चीज़ में वे बाहम इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उसका फ़ैसला कर दिया जाता। और यह जो वे कहते हैं कि इस नबी पर इसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों न उतारी गई, तो उनसे कहो, ''ग़ैब का मालिक व मुख़्तार तो अल्लाह ही है, अच्छा, इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।''

وَ اِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ
فِیْۤ اٰیَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا یَكْتُبُوْنَ مَا
تَمْكُرُوْنَ ﴿۲۱﴾ هُوَ الَّذِیْ یُسَیِّرُكُمْ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ حَتّٰۤی اِذَا
كُنْتُمْ فِی الْفُلْكِ ۚ وَ جَرَیْنَ بِهِمْ بِرِیْحٍ طَیِّبَةٍ وَّ فَرِحُوْا بِهَا
جَآءَتْهَا رِیْحٌ عَاصِفٌ وَّ جَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ ظَنُّوْۤا
اَنَّهُمْ اُحِیْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۚ۬ لَىِٕنْ اَنْجَیْتَنَا
مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۲۲﴾ فَلَمَّاۤ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ یَبْغُوْنَ
فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْیُكُمْ عَلٰۤی اَنْفُسِكُمْ ۙ
مَّتَاعَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ؗ ثُمَّ اِلَیْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۳﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ
فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا یَاْكُلُ النَّاسُ وَ الْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰۤی اِذَاۤ
اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَ ازَّیَّنَتْ وَ ظَنَّ اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ
عَلَیْهَاۤ ۙ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَیْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِیْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ
بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ اللّٰهُ یَدْعُوْۤا
اِلٰی دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۲۵﴾
لِلَّذِیْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰی وَ زِیَادَةٌ ؕ وَ لَا یَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ

لَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ الَّذِيْنَ
كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ بِمِثْلِهَا ۙ وَ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ
مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَاۤ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ
مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَ يَوْمَ
نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَ
شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا
تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ
عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿۲۹﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّاۤ اَسْلَفَتْ وَ رُدُّوْۤا
اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۳۰﴾ ع

लोगों का हाल यह है कि मुसीबत के बाद जब हम उनको रहमत का मज़ा चखाते हैं तो फ़ौरन ही वे हमारी निशानियों के मामले में चालबाज़ियाँ शुरू कर देते हैं। इनसे कहो, ''अल्लाह अपनी चाल में तुमसे ज़्यादा तेज़ है, उसके फ़रिश्ते तुम्हारी सब मक्कारियों को कलमबंद कर रहे है।'' वह अल्लाह ही है जो तुमको ख़ुशकी और तरी में चलाता है। चुनाँचे जब तुम कश्तियों में सवार होकर बादे-मवाफ़िक़ पर फ़रहाँ व शादाँ सफ़र कर रहे होते हो और फिर यकायक बादे-मुख़ालिफ़ का ज़ोर होता है और हर तरफ़ से मौजों के थपेड़े लगते हैं और मुसाफ़िर समझ लेते हैं कि तूफ़ान में घिर गए, उस वक़्त सब अपने दीन को अल्लाह ही के लिए

ख़ालिस करके उससे दुआएँ माँगते हैं कि ''अगर तूने हमको इस बला से नजात दे दी तो हम शुक्रगुज़ार बन्दे बनेंगे।'' मगर जब वह उनको बचा लेता है तो फिर वही लोग हक़ से मुनहरिफ़ होकर ज़मीन में बग़ावत करने लगते हैं। लोगो, तुम्हारी यह बग़ावत तुम्हारे ही ख़िलाफ़ पड़ रही है। दुनिया की ज़िन्दगी के चन्द रोज़ा मज़े हैं (लूट लो), फिर हमारी तरफ़ तुम्हें पलटकर आना है, उस वक़्त हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कुछ करते रहे हो। दुनिया की ये ज़िन्दगी (जिसके नशे में मस्त होकर तुम हमारी निशानियों से गफ़लत बरत रहे हो) इसकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से हमने पानी बरसाया तो ज़मीन की पैदावार, जिसे आदमी और जानवर सब खाते हैं, खूब घनी हो गई, फिर ऐन उस वक़्त जबकि ज़मीन अपनी बहार पर थी और खेतियाँ बनी-सँवरी खड़ी थीं और उनके मालिक समझ रहे थे कि अब हम इनसे फ़ायदा उठाने पर क़ादिर हैं। यकायक रात को या दिन को हमारा हुक्म आ गया और हमने उसे ऐसा ग़ारत करके रख दिया कि गोया कल वहाँ कुछ था ही नहीं। इस तह हम निशानियाँ खोल-खोलकर पेश करते हैं उन लोगों के लिए जो सोचने-समझने वाले हैं। (तुम इस नापायदार ज़िन्दगी के फ़रेब में मुब्तला हो रहे हो) और अल्लाह तुम्हें दारुस-सलाम की तरफ़ दावत दे रहा है। (हिदायत उसके इख़्तियार में है) जिसको वह चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। जिन लोगों ने भलाई का तरीक़ा इख़्तियार किया उनके लिए भलाई है और मज़ीद फ़ज़्ल। उनके चेहरों पर रुसियाही और

ज़िल्लत न छाएगी। वे जन्नत के मुसतहिक़ हैं जहाँ वे हमेशा रहेंगे। और जिन लोगों ने बुराइयाँ कमाई उनकी बुराई जैसी है वैसा बदला पाएँगे, ज़िल्लत उनपर मुसल्लत होगी, कोई अल्लाह से उनको बचाने वाला न होगा, उनके चेहरों पर ऐसी तारीकी छाई हुई होगी जैसे रात के सियाह परदे उनपर पड़े हुए हों, वह दोज़ख़ के मुसतहिक़ हैं जहाँ वे हमेशा रहेंगे। जिस रोज़ हम उन सबको एक साथ (अपनी अदालत में) इकट्ठा करेंगे, फिर उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया है कहेंगे कि ठहर जाओ तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए शरीक भी, फिर हम उनके दरमियान से अजनबियत का परदा हटा देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि ''तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे। हमारे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है कि (तुम अगर हमारी इबादत करते भी थे तो) हम तुम्हारी इस इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे।'' उस वक़्त हर शख़्स अपने किए का मज़ा चख लेगा, सब अपने हक़ीक़ी मालिक की तरफ़ फेर दिए जाएँगे और वे सारे झूट जो उन्होंने गढ़ रखे थे गुम हो जाएँगे।

रुकू–175 (10 यूनुस : 31–40)

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَ
الْاَبْصَارَ وَ مَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ
مَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَذٰلِكُمُ
اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۖۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿۳۲﴾

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٣
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝٣٤ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ
مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى
الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟
كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝٣٥ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ
مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٣٦ وَمَا كَانَ هٰذَا
الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ
يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٧ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٣٨ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا
بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٩ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَ
مِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝٤٠ ع

उनसे पूछो, ''कौन तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क देता है? ये समाअत और बीनाई कि कुव्वतें किसके इख़्तियार में हैं? कौन बेजान में से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता

है? कौन इस नज़्मे-आलम की तदबीर कर रहा है?" वे ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह। कहो, फिर तुम (हक़ीक़त के ख़िलाफ़ चलने से) परहेज़ नहीं करते? तब तो यही अल्लाह तुम्हारा हक़ीक़ी रब है। फिर हक़ के बाद गुमराही के सिवा और क्या बाक़ी रह गया? आख़िर यह तुम किधर फिराए जा रहे हो? (ऐ नबी, देखो) इस तरह नाफ़रमानी इख़्तियार करने वालों पर तुम्हारे रब की बात सादिक़ आ गई कि वे मान कर न देंगे। इनसे पूछो, तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो तख़लीक़ की इबतिदा भी करता हो और फिर उसका इआदा भी करे?- कहो वह सिर्फ अल्लाह है जो तख़लीक़ की इबतिदा भी करता है और उसका इआदा भी, फिर तुम यह किस उलटी राह पर चलाए जा रहे हो? इनसे पूछो, तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई ऐसा भी है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता हो? कहो, वह सिर्फ़ अल्लाह है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है। फिर भला बताओ, जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है वह इसका ज़्यादा मुसतहिक़ है कि उसकी पैरवी की जाए या वह जो खुद राह नहीं पाता इल्ला यह कि उसकी रहनुमाई की जाए? आख़िर तुम्हें हो क्या गया है, कैसे उलटे-पुलटे फैसले करते हो? हक़ीक़त यह है कि उनमें से अकसर लोग महज़ क़ियास व गुमान के पीछे चले जा रहे हैं, हालाँकि गुमान हक़ की ज़रूरत को कुछ भी पूरा नहीं करता। जो कुछ ये कर रहे हैं अल्लाह उसको ख़ूब जानता है। और यह क़ुरआन वह चीज़ नहीं है जो अल्लाह की वहय व तालीम के बग़ैर तसनीफ़ कर लिया जाए, बल्कि यह

तो जो कुछ पहले आ चुका था उसकी तस्दीक़ और अल-किताब की तफ़सील है। इसमें कोई शक़ नहीं कि यह फ़रमाँरवा-ए-कायनात की तरफ़ से है। क्या ये लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने इसे ख़ुद तसनीफ़ कर लिया है? कहो, ''अगर तुम अपने इस इल्ज़ाम में सच्चे हो तो एक सूरा इस जैसी तसनीफ़ कर लाओ और एक ख़ुदा को छोड़कर जिस-जिस को बुला सकते हो मदद के लिए बुला लो।'' अस्ल यह है कि जो चीज़ उनके इल्म की गिरिफ़्त में नहीं आई और जिसका मआल भी उनके सामने नहीं आया, उसको उन्होंने (ख़ाह-मख़ाह अटकल-पच्चू) झुटला दिया। इसी तरह तो इनसे पहले के लोग भी झुटला चुके हैं, फिर देख लो उन ज़ालिमों का क्या अंजाम हुआ। इनमें से कुछ लोग ईमान लाएँगे और कुछ नहीं लाएँगे और तेरा रब इन मुफ़सिदों को खूब जानता है।

रुकू-176 (10 यूनुस : 41-53)

وَ اِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَ لَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ
اَعْمَلُ وَ اَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ
اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَ لَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ
يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَ لَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّ لٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَ
يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ

بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَ مَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۴۵﴾
وَ اِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ
ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ
رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ
مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ
ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ
فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ
عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ اَثُمَّ اِذَا
مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ
قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا
كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ يَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؔ قُلْ اِيْ وَ رَبِّيْٓ اِنَّهٗ
لَحَقٌّ ؔ وَ مَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۵۳﴾ ع

अगर ये तुझे झुटलाते हैं तो कह दे कि ''मेरा अमल मेरे लिए और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए, जो कुछ मैं करता हूँ उसकी ज़िम्मेदारी से तुम बरी हो और जो कुछ तुम कर रहे हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।'' इनमें से बहुत-से लोग हैं जो तेरी बातें सुनतें हैं, मगर क्या तू बहरों को सुनाएगा ख़ाह वे कुछ न समझते हों? इनमें बहुत-से लोग हैं जो तुझे देखते हैं, मगर क्या तू अन्धों

को राह बताएगा ख़ाह उन्हें कुछ न सूझता हो? हक़ीक़त यह है कि अल्लाह लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता, लोग ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं। (आज ये दुनिया की ज़िन्दगी में मस्त हैं) और जिस रोज़ अल्लाह इनको इकट्ठा करेगा तो (यही दुनिया की ज़िन्दगी इन्हें ऐसी महसूस होगी) गोया ये महज़ एक घड़ी भर आपस में जान-पहचान करने को ठहरे थे। (उस वक़्त तहक़ीक़ हो जाएगा कि) फ़िल-वाक़े सख़्त घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह की मुलाकात को झुटलाया और हरगिज़ वे राहे-रास्त पर न थे। जिन बुरे नताइज से हम उन्हें डरा रहे हैं उनका कोई हिस्सा हम तेरे जीते-जी दिखा दें या इससे पहले ही तुझे उठा लें, बहरहाल उन्हें आना हमारी तरफ़ ही है और जो कुछ ये कर रहे हैं उसपर अल्लाह गवाह है। हर उम्मत के लिए एक रसूल है। फिर जब किसी उम्मत के पास उसका रसूल आ जाता है तो उसका फ़ैसला पूरे इनसाफ़ के साथ चुका दिया जाता है और उसपर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाता। कहते हैं अगर तुम्हारी यह धमकी सच्ची है तो आख़िर यह कब पूरी होगी? कहो, ''मेरे इख़्तियार में तो ख़ुद अपना नफ़ा व ज़रर भी नहीं, सब कुछ अल्लाह की मशीयत पर मौक़ूफ़ है। हर उम्मत के लिए मुहलत की एक मुद्दत है, जब यह मुद्दत पूरी हो जाती है तो घड़ी भर की तक़दीम व ताख़ीर भी नहीं होती।'' इनसे कहो, ''कभी तुमने यह भी सोचा है कि अगर अल्लाह का अज़ाब अचानक रात को या दिन को आ जाए (तो तुम क्या कर सकते हो?) आख़िर ऐसी कौन-सी चीज़ है

जिसके लिए मुजरिम जल्दी मचाएँ? क्या जब वह तुमपर आ पड़े उसी वक़्त तुम उसे मानोगे?- अब बचना चाहते हो? हालाँकि तुम ख़ुद ही इसके जल्दी आने का तक़ाज़ा कर रहे थे!'' फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो, जो कुछ तुम कमाते रहे हो उसकी पादाश के सिवा और क्या बदला तुमको दिया जा सकता है? फिर पूछते हैं क्या वाक़ई यह सच है जो तुम कह रहे हो? कहो, ''मेरे रब की क़सम, यह बिल्कुल सच है, और तुम इतना बल-बूता नहीं रखते कि उसे ज़ुहूर में आने से रोक दो।''

रुकू–177 (10 यूनुस : 54–60)

وَ لَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَ اَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَ هُمْ لَا
يُظْلَمُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ
شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ
بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ
مِّنْهُ حَرَامًا وَّ حَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾

अगर हर उस शख़्स के पास जिसने ज़ुल्म किया है, रुए-ज़मीन की दौलत भी हो तो उस अज़ाब से बचने के लिए वह उसे फ़िदये में देने पर आमादा हो जाएगा। जब ये लोग उस अज़ाब को देख लेंगे तो दिल ही दिल में पछताएँगे। मगर उनके दरमियान पूरे इनसाफ़ से फ़ैसला किया जाएगा, कोई ज़ुल्म उनपर न होगा। सुनो! आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह का है। सुन रखो! अल्लाह का वादा सच्चा है मगर अकसर इनसान जानते नहीं हैं। वही ज़िन्दगी बख़्शता है और वही मौत देता है और उसी की तरफ़ तुम सब को पलटना है। लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत आ गई है। यह वह चीज़ है जो दिलों के अमराज़ की शिफ़ा है और जो इसे क़बूल कर लें उनके लिए रहनुमाई और रहमत है। ऐ नबी, कहो कि ''यह अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी है कि यह चीज़ उसने भेजी, इसपर तो लोगों को ख़ुशी मनानी चाहिए, यह उन चीज़ों से बेहतर है जिन्हें लोग समेट रहे रहे हैं।'' ऐ नबी, इनसे कहो, ''तुम लोगों ने कभी यह भी सोचा है कि जो रिज़्क़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारा था उसमें से तुमने ख़ुद ही किसी को हराम और किसी को हलाल ठहरा लिया। इनसे पूछो, ''अल्लाह ने तुमको इसकी इजाज़त दी थी? या तुम अल्लाह पर इफ़तिरा कर रहे हो?'' जो लोग अल्लाह

पर यह झूटा इफ़तिरा बाँधते हैं उनका क्या गुमान है कि क़ियामत के रोज़ उनसे क्या मामला होगा? अल्लाह तो लोगों पर मेहरबानी की नज़र रखता है मगर अकसर इनसान ऐसे हैं जो शुक्र नहीं करते।

रुकू–178 (10 यूनुस : 61–70)

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ
عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ
عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ
مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾ اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ۚ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ؕ
لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ
اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ؕ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ
لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ
فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ
يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ
الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ

أَتَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى
اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

ऐ नबी, तुम जिस हाल में भी होते हो और क़ुरआन में से जो कुछ भी सुनाते हो, और लोगो, तुम भी जो कुछ करते हो उस सब के दौरान में हम तुमको देखते रहते हैं। कोई ज़र्रा बराबर चीज़ आसमान और ज़मीन में ऐसी नहीं है, न छोटी न बड़ी, जो तेरे रब की नज़र से पोशीदा हो और एक साफ़ दफ़तर में दर्ज न जो हो। सुनो! जो अल्लाह के दोस्त हैं, जो ईमान लाए और जिन्होंने तक़वा का रवैया इख़्तियार किया, उनके लिए किसी ख़ौफ़ और रंज का मौका नहीं है। दुनिया और आख़िरत दोनों ज़िन्दगियों में उनके लिए बशारत ही बशारत है। अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं। यही बड़ी कामयाबी है। ऐ नबी, जो बातें ये लोग तुमपर बनाते हैं वे तुझे रंजीदा न करें, इज़्ज़त सारी की सारी ख़ुदा के इख़्तियार में है। और वह सब कुछ सुनता और जानता है। अगाह रहो! आसमानों के बसने वाले हों या ज़मीन के, सब के सब अल्लाह के ममलूक हैं। और जो लोग अल्लाह के सिवा कुछ (अपने ख़ुदसाख़्ता) शरीकों को पुकार रहे हैं वे निरे वहम व गुमान के पैरौ हैं और महज़ क़ियासआराइयाँ करते हैं। वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई कि उसमें सुकून हासिल करो और

दिन को रौशन बनाया। इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो (खुले कानों से पैग़म्बर की दावत को) सुनते हैं। लोगों ने कह दिया कि अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया है। सुब्हानल्लाह! वह तो बेनियाज़ है, आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसकी मिल्क है। तुम्हारे पास इस क़ौल के लिए आख़िर दलील क्या है? क्या तुम अल्लाह के मुताल्लिक़ वे बातें कहते हो जो तुम्हारे इल्म में नहीं हैं? ऐ नबी, कह दो कि जो लोग अल्लाह पर झूटे इफ़तिरा बाँधते हैं वे हरगिज़ फ़लाह नहीं पा सकते। दुनिया की चन्द-रोज़ा ज़िन्दगी में मज़े कर लें, फिर हमारी तरफ़ उनको पलटना है, फिर हम उस कुफ़्र के बदले जिसका इर्तिकाब वे कर रहे हैं उनको सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएँगे।

रुकू–179 (10 यूनुस : 71–82)

وَ اتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ
عَلَيْكُمْ مَّقَامِیْ وَ تَذْكِيْرِیْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا
اَمْرَكُمْ وَ شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا
اِلَیَّ وَ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۷۱﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ
اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۷۲﴾ فَكَذَّبُوْهُ
فَنَجَّيْنٰهُ وَ مَنْ مَّعَهٗ فِی الْفُلْكِ وَ جَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَ اَغْرَقْنَا
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۷۳﴾
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا

كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ
الْمُعْتَدِيْنَ ۝۷۴ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَ هٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَ مَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝۷۵ فَلَمَّا
جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۷۶ قَالَ
مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَ لَا يُفْلِحُ
السّٰحِرُوْنَ ۝۷۷ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَ
تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ؕ وَ مَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝۷۸ وَ
قَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝۷۹ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ
لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝۸۰ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا
جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝۸۱ وَ يُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝۸۲ ع

इनको नूह का किस्सा सुनाओ, उस वक़्त का किस्सा जब उसने अपनी क़ौम से कहा था कि ‘‘ऐ बिरादराने-क़ौम, अगर मेरा तुम्हारे दरमियान रहना और अल्लाह की आयात सुना-सुनाकर तुम्हें ग़फ़लत से बेदार करना तुम्हारे लिए नाक़ाबिले-बरदाश्त हो गया है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है, तुम अपने ठहराए हुए शरीकों को साथ लेकर एक मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला कर लो और जो मंसूबा तुम्हारे पेशे-नज़र हो उसको ख़ूब सोच-समझ लो ताकि

उसका कोई पहलू तुम्हारी निगाह से पोशीदा न रहे, फिर मेरे ख़िलाफ़ उसको अमल में ले आओ और मुझे हरगिज़ मुहलत न दो। तुमने मेरी नसीहत से मुँह मोड़ा (तो मेरा क्या नुक़सान किया) मैं तुमसे किसी अज्र का तलबगार न था, मेरा अज्र तो अल्लाह के ज़िम्मे है। और मुझे हुक्म दिया गया है कि (ख़ाह कोई माने या न माने) मैं ख़ुद मुस्लिम बनकर रहूँ।''- उन्होंने उसे झुटलाया और नतीजा यह हुआ कि हमने उसे और उन लोगों को जो उसके साथ कश्ती में थे, बचा लिया और उन्हीं को ज़मीन में जानशीन बनाया और उन सब लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी आयात को झुटलाया था। पस देख लो कि जिन्हें मुतनब्बेह किया गया था (और फिर भी उन्होंने मानकर न दिया) उनका क्या अंजाम हुआ। फिर नूह के बाद हमने मुख़्तलिफ़ पैग़म्बरों को उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजा और वे उनके पास खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए, मगर जिस चीज़ को उन्होंने पहले झुटला दिया था उसे फिर मानकर न दिया। इस तरह हम हद से गुज़र जाने वालों के दिलों पर ठप्पा लगा देते हैं। फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा, मगर उन्होंने अपनी बड़ाई का घमंड किया और वे मुजरिम लोग थे। पस जब हमारे पास से हक़ उनके सामने आया तो उन्होंने कह दिया कि यह तो खुला जादू है। मूसा ने कहा, ''तुम हक़ को यह कहते हो जबकि वह तुम्हारे सामने आ गया? क्या यह जादू है? हालाँकि जादूगर फ़लाह नहीं

पाया करते।'' उन्होंने जवाब में कहा, ''क्या तू इसलिए आया है कि हमें उस तरीक़े से फेर दे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है और ज़मीन में बड़ाई तुम दोनों की क़ायम हो जाए? तुम्हारी बात तो हम मानने वाले नहीं हैं।'' और फ़िरऔन ने (अपने आदमियों से) कहा कि ''हर माहिरे-फ़न जादूगर को मेरे पास हाज़िर करो।''- जब जादूगर आ गए तो मूसा ने उनसे कहा, ''जो कुछ तुम्हें फेंकना है फेंको।'' फिर जब उन्होंने अपने अंछर फेंक दिए तो मूसा ने कहा, ''यह जो कुछ तुमने फेंका है यह जादू है। अल्लाह अभी इसे बातिल किए देता है, मुफ़सिदों के काम को अल्लाह सुधारने नहीं देता, और अल्लाह अपने फ़रमानों से हक़ कर दिखाता है, ख़ाह मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो।''

रुकू–180 (10 यूनुस : 83–92)

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَ
مَلَا۠ىِٕهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَ اِنَّهٗ
لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَ قَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ
فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿۸۴﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿۸۵﴾ وَ نَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰى وَ اَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّ اجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ

وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَ قَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَلَاَهٗ
زِيْنَةً وَّ اَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَ اشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا
حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۸۸﴾ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا
فَاسْتَقِيْمَا وَ لَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾ وَ جٰوَزْنَا
بِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَ جُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّ عَدْوًا ۭ
حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِىْٓ
اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۹۰﴾ آٰلْئٰنَ وَ قَدْ
عَصَيْتَ قَبْلُ وَ كُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۹۱﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ
بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ۭ وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ
اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾ ع

(फिर देखो कि) मूसा को उसकी क़ौम में से चन्द नौजवानों के सिवा किसी ने न माना, फ़िरऔन के डर से और ख़ुद अपनी क़ौम के सरबर-आउर्दा लोगों के डर से (जिन्हें ख़ौफ था कि) फ़िरऔन उनको अज़ाब में मुब्तला करेगा। और वाक़िया यह है कि फ़िरऔन ज़मीन में ग़लबा रखता था और वह उन लोगों में से था जो किसी हद पर रुकते नहीं हैं। मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ‘‘लोगो, अगर तुम वाक़ई अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसपर

भरोसा करो अगर मुसलमान हो।'' उन्होंने जवाब दिया, ''हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब, हमें ज़ालिम लोगों के लिए फ़ितना न बना और अपनी रहमत से हमको काफ़िरों से नजात दे।'' और हमने मूसा और उसके भाई को इशारा किया कि ''मिस्र में चन्द मकान अपनी क़ौम के लिए मुहैया करो और अपने उन मकानों को क़िब्ला ठहरा लो और नमाज़ क़ायम करो और अहले-ईमान को बशारत दे दो।'' मूसा ने दुआ की, ''ऐ हमारे रब, तूने फ़िरऔन और उनके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत और अमवाल से नवाज़ रखा है। ऐ रब, क्या यह इसलिए है कि वे लोगों को तेरी राह से भटकाएँ? ऐ रब, उनके माल ग़ारत कर दे और उनके दिलों पर ऐसी मुहर कर दे कि ईमान न लाएँ जब तक कि दर्दनाक अज़ाब न देख लें।'' अल्लाह तआला ने जवाब में फ़रमाया, ''तुम दोनों की दुआ कबूल की गई। साबित-क़दम रहो और उन लोगों के तरीक़े की हरगिज़ पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते।'' और हम बनी-इसराईल को समुन्दर से गुज़ार ले गए। फिर फ़िरऔन और उसके लश्कर ज़ुल्म और ज़्यादती की ग़र्ज़ से उनके पीछे चले। हत्ता कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो बोल उठा, ''मैंने मान लिया कि ख़ुदावन्दे-हक़ीक़ी उसके सिवा कोई नहीं है जिसपर बनी-इसराईल ईमान लाए, और मैं भी सारे-इताअत झुका देने वालों में से हूँ।'' (जवाब दिया गया) ''अब ईमान लाता है! हालाँकि इससे पहले तक तो नाफ़रमानी करता रहा और फ़साद करने वालों में से था। अब तो हम सिर्फ़ तेरी लाश

ही को बचाएँगे ताकि तू बाद की नस्लों के लिए निशाने-इबरत बने अगरचे बहुत-से इनसान ऐसे हैं जो हमारी निशानियों से गफ़लत बरतते हैं।''

रुकू–181 (10 यूनुस : 93–103)

وَ لَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ۚ
فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰی جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ یَقْضِیْ بَیْنَهُمْ یَوْمَ
الْقِیٰمَةِ فِیْمَا كَانُوْا فِیْهِ یَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِیْ شَكٍّ مِّمَّاۤ
اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِیْنَ یَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ
جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِیْنَ ﴿٩٤﴾ وَ لَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ
حَقَّتْ عَلَیْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَ لَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰیَةٍ
حَتّٰی یَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ ﴿٩٧﴾ فَلَوْ لَا كَانَتْ قَرْیَةٌ اٰمَنَتْ
فَنَفَعَهَاۤ اِیْمَانُهَاۤ اِلَّا قَوْمَ یُوْنُسَ ؕ لَمَّاۤ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ
عَذَابَ الْخِزْیِ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَ مَتَّعْنٰهُمْ اِلٰی حِیْنٍ ﴿٩٨﴾ وَ لَوْ
شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِی الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِیْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ
النَّاسَ حَتّٰی یَكُوْنُوْا مُؤْمِنِیْنَ ﴿٩٩﴾ وَ مَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ یَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَی الَّذِیْنَ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ

انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَ النُّذُرُ عَنْ
قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠١ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝١٠٢ ثُمَّ
نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٣ ع

हमने बनी-इसराईल को बहुत अच्छा ठिकाना दिया और निहायत उम्दा वासाइले-ज़िन्दगी उन्हें अता किए। फिर उन्होंने बाहम इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस वक़्त जब कि इल्म उनके पास आ चुका था। यक़ीनन तेरा रब क़ियामत के रोज़ उनके दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं। अब अगर तुझे इस हिदायत की तरफ़ से कुछ भी शक हो जो हमने तुझपर नाज़िल की है तो उन लोगों से पूछ ले जो पहले से किताब पढ़ रहे हैं। फ़िल-वाक़े यह तेरे पास हक़ ही आया है तेरे रब की तरफ़ से, लिहाज़ा तू शक करने वालों में से न हो, और उन लोगो में न शामिल हो जिन्होंने अल्लाह की आयात को झुटलाया है वरना तू नुकसान उठाने वालों में से होगा। हक़ीक़त यह है कि जिन लोगों पर तेरे रब का क़ौल रास्त आ गया है उनके सामने ख़्राह कोई निशानी आ जाए वे कभी ईमान लाकर नहीं देते जब तक कि दर्दनाक अज़ाब सामने आता न देख लें। फिर क्या ऐसी कोई मिसाल है कि एक बस्ती अज़ाब देखकर ईमान लाई हो और

उसका ईमान उसके लिए नफ़ाबख़्श साबित हुआ हो? यूनुस की क़ौम के सिवा (इसकी कोई नज़ीर नहीं)। वह क़ौम जब ईमान ले आई थी तो अलबत्ता हमने उसपर से दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का अज़ाब टाल दिया था और उसको एक मुद्दत तक ज़िन्दगी से बहरामंद होने का मौक़ा दे दिया था। अगर तेरे रब की मशीयत यह होती (कि ज़मीन में सब मोमिन व फ़रमाँबरदार ही हों) तो सारे अहले-जमीन ईमान ले आए होते। फिर क्या तू लोगों को मजबूर करेगा कि वे मोमिन हो जाएँ? कोई मुतनफ़्फ़िस अल्लाह के इज़्न के बग़ैर ईमान नहीं ला सकता, और अल्लाह का तरीक़ा यह है कि जो लोग अक़्ल से काम नहीं लेते वह उनपर गन्दगी डाल देता है। उनसे कहो, ''ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है उसे आँखें खोलकर देखो।'' और जो लोग ईमान लाना ही नहीं चाहते उनके लिए निशानियाँ और तंबीहें आख़िर क्या मुफ़ीद हो सकती हैं? अब ये लोग इसके सिवा और किस चीज़ के मुन्तज़िर हैं कि वही बुरे दिन देखें जो उनसे पहले गुज़रे हुए लोग देख चुके हैं? इनसे कहो, ''अच्छा, इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।'' फिर (जब ऐसा वक़्त आता है तो) हम अपने रसूलों को और उन लोगों को बचा लिया करते हैं जो ईमान लाए हों। हमारा यही तरीक़ा है। हम पर यह हक़ है कि मोमिनों को बचा लें।

रुकू—182 (10 यूनुस : 104—109)

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖ وَ
اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَ اَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ
حَنِيْفًا ۚ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَ لَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَا يَنْفَعُكَ وَ لَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ وَ
اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَ اِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ
فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۷﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ
اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ
وَ مَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۱۰۸﴾ وَ اتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَ اصْبِرْ حَتّٰى
يَحْكُمَ اللّٰهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۱۰۹﴾

ऐ नबी, कह दो कि ''लोगो, अगर तुम अभी तक मेरे दीन के मुताल्लिक़ किसी शक में हो तो सुन लो कि तुम अल्लाह के सिवा जिनकी बन्दगी करते हो मैं उनकी बन्दगी नहीं करता, बल्कि सिर्फ़ उसी ख़ुदा की बन्दगी करता हूँ जिसके क़ब्ज़े में तुम्हारी मौत है। मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान लाने वालों में से हूँ। और मुझसे फ़रमाया गया है कि यकसू होकर अपने आपको ठीक-ठीक इस दीन पर क़ायम कर दे, और हरगिज़-हरगिज़ मुशरिकों में से न हो। और अल्लाह को छोड़कर किसी ऐसी हस्ती को न पुकार

जो तुझे न फ़ायदा पहुँचा सकती है न नुकसान, अगर तू ऐसा करेगा तो ज़ालिमों में से होगा। अगर अल्लाह तुझे किसी मुसीबत में डाले तो ख़ुद उसके सिवा कोई नहीं जो उस मुसीबत को टाल दे, और अगर वह तेरे हक में किसी भलाई का इरादा करे तो उसके फ़ज़्ल को फेरने वाला भी कोई नहीं है। वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है अपने फ़ज़्ल से नवाज़ता है और वह दरगुज़र करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।'' ऐ मुहम्मद, कह दो कि ''लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ आ चुका है। अब जो सीधी राह इख़्तियार करे उसकी रास्तरवी उसी के लिए मुफ़ीद है, जो गुमराह रहे उसकी गुमराही उसी के लिए तबाहकुन है। और मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवालेदार नहीं हूँ।'' और ऐ नबी, तुम उस हिदायत की पैरवी किए जाओ जो तुम्हारी तरफ़ बज़रीए वहय भेजी जा रही है, और सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वही बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।

रुकू–183 (11 हूद : 1–8)

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ﴿۱﴾
اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّ بَشِيْرٌ ۙ﴿۲﴾ وَّ اَنِ
اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى
اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّ يُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ
اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿۳﴾ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَ هُوَ

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤ اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا
مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا
يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٥
وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَ يَعْلَمُ
مُسْتَقَرَّهَا وَ مُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦ وَ هُوَ الَّذِيْ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّ كَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ
لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَ لَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ
بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَ
لَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰۤى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا
يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨ ع

अलिफ़, लाम, रा। फ़रमान है, जिसकी आयतें पुख़ता और मुफ़स्सल इरशाद हुई हैं, एक दाना और बाख़बर हस्ती की तरफ़ से कि तुम न बन्दगी करो मगर सिर्फ़ अल्लाह की। मैं उसकी तरफ़ से तुमको ख़बरदार करने वाला भी हूँ और बशारत देने वाला भी। और यह कि तुम अपने रब से माफ़ी चाहो और उसकी तरफ़ पलट आओ तो वह एक मुद्दत-ख़ाह तक तुमको अच्छा सामने-ज़िन्दगी देगा, और हर साहिबे-फ़ज़्ल को उसका फ़ज़्ल अता

करेगा। लेकिन अगर तुम मुँह फेरते हो तो मैं तुम्हारे हक़ में एक बड़े हौलनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ। तुम सबको अल्लाह की तरफ पलटना है और वह सब कुछ कर सकता है। देखो ये लोग अपने सीनों को मोड़ते हैं ताकि उससे छिप जाएँ। ख़बरदार, जब ये कपड़ों से अपने आपको ढांकते हैं, अल्लाह उनके छिपे को भी जानता है और खुले को भी, वह तो उन भेदों से भी वाक़िफ़ है जो सीनों में हैं। ज़मीन में चलने वाला कोई जानदार ऐसा नहीं है जिसका रिज़्क अल्लाह के ज़िम्मे न हो और जिसके मुताल्लिक़ वह न जानता हो कि कहाँ वह रहता है, और कहाँ वह सौंपा जाता है, सब कुछ एक साफ़ दफ़्तर में दर्ज है। और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया– जबकि इससे पहले उसका अर्श पानी पर था– ताकि तुमको आज़मा कर देखे कि तुम में कौन बेहतर अमल करने वाला है। अब अगर ऐ नबी, तुम कहते हो कि लोगो, मरने के बाद तुम दोबारा उठाए जाओगे, तो मुनकिरीन फ़ौरन बोल उठते हैं कि यह तो सरीह जादूगरी है। और अगर हम एक ख़ास मुद्दत तक उनकी सज़ा को टालते हैं तो वे कहने लगते हैं आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है? सुनो! जिस रोज़ उस सज़ा का वक़्त आ गया तो वह किसी के फेरे न फिर सकेगा और वही चीज़ उनको आ घेरेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

रुकू–184 (11 हूद : 9–24)

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ

كَفُوْرٌ ﴿۹﴾ وَ لَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ
السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿۱۰﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ
بَعْضَ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَ ضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۱۲﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ
مُفْتَرَيٰتٍ وَّ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۱۳﴾ فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ بِعِلْمِ
اللّٰهِ وَ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَ هُمْ فِيْهَا لَا
يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَ
حَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى
بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَ يَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰۤى
اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ
الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ
افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَ يَقُوْلُ

الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿۱۸﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ يَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۭ وَ
هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۹﴾ اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ
وَ مَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۭ
مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَ مَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿۲۰﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۱﴾ لَا جَرَمَ
اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿۲۲﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَ اَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿۲۳﴾ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَ الْاَصَمِّ وَ الْبَصِيْرِ وَ
السَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾

अगर कभी हम इनसान को अपनी रहमत से नवाज़ने के बाद फिर उससे महरूम कर देते हैं तो वह मायूस होता है और नाशुक्री करने लगता है। और अगर उस मुसीबत के बाद जो उसपर आई थी हम उसे नेमत का मज़ा चखाते हैं तो कहता है मेरे तो सारे दलिद्दर पार हो गए, फिर वह फुला नहीं समता और अकड़ने लगता है। इस ऐब से पाक अगर कोई हैं तो बस वे लोग जो सब्र करने वाले और नेकूकार हैं और वही हैं जिनके लिए दरगुज़र भी है और बड़ा अज्र भी। तो ऐ पैग़म्बर, कहीं ऐसा न

हो कि तुम इन चीज़ों को (बयान करने से) छोड़ दो जो तुम्हारी तरफ़ वहय की जा रही है और इस बात पर दिल तंग हो कि वे कहेंगे, ''इस शख़्स पर कोई ख़ज़ाना क्यों न उतारा गया?'' या यह कि ''इसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न आया?'' तुम तो महज़ ख़बरदार करने वाले हो, आगे हर चीज़ का हवालेदार अल्लाह है। क्या ये कहते हैं कि पैग़म्बर ने यह किताब ख़ुद घड़ ली हैं? कहो, ''अच्छा यह बात है तो इस जैसी घड़ी हुई दस सूरतें तुम बना लाओ और अल्लाह के सिवा और जो-जो (तुम्हारे माबूद) हैं उनको मदद के लिए बुला सकते हो तो बुला लो अगर (उन्हें माबूद समझने में) सच्चे हो। अब अगर वे (तुम्हारे माबूद) तुम्हारी मदद को नहीं पहुँचते तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से नाज़िल हुई है और यह कि अल्लाह के सिवा कोई हक़ीक़ी माबूद नहीं है। फिर क्या तुम (इस अम्रे-हक़ के आगे) सरे-तसलीम ख़म करते हो?'' जो लोग बस इस दुनिया की ज़िन्दगी और इसकी ख़ुशनुमाइयों के तालिब होते हैं उनकी कारगुज़ारी का सारा फल हम यहीं उनको दे देते हैं और उसमें से उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। मगर आख़िरत में ऐसे लोगों के लिए आग के सिवा कुछ नहीं है। (वहाँ मालूम हो जाएगा कि) जो कुछ उन्होंने दुनिया में बनाया वह सब मालिया-मेट हो गया और अब उनका सारा किया-धरा महज़ बातिल है। फिर भला वह शख़्स जो अपने रब की तरफ़ से एक साफ शहादत रखता था, इसके बाद एक गवाह भी परवरदिगार की तरफ़ से (उस शहादत की ताईद में) आ

गया, और पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत के तौर पर आई हुई भी मौजूद थी (क्या वह भी दुनियापरस्तों की तरह इससे इनकार कर सकता है?) ऐसे लोग तो इसपर ईमान ही लाएँगे। और इनसानी गरोहों में से जो कोई इसका इनकार करे तो उसके लिए जिस जगह का वादा है, वह दोज़ख़ है। पस ऐ पैग़म्बर, तुम इस चीज़ की तरफ़ से किसी शक में न पड़ना, यह हक है तुम्हारे रब की तरफ़ से मगर अकसर लोग नहीं मानते। और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े? ऐसे लोग अपने रब के हुज़ूर में पेश होंगे और गवाह शहादत देंगे कि ये हैं वे लोग जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था। सुनो! ख़ुदा की लानत है ज़ालिमों पर - उन ज़ालिमों पर जो ख़ुदा के रास्ते से लोगों को रोकते हैं, उसके रास्ते को टेढ़ा करना चाहते हैं, और आख़िरत का इनकार करते हैं - वे ज़मीन में अल्लाह को बेबस करने वाले न थे और न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई उनका हामी था। इन्हें अब दोहरा अज़ाब दिया जाएगा। वे न किसी की सुन ही सकते थे और न ख़ुद ही उन्हें कुछ सूझता था। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको ख़ुद घाटे में डाला और वह सब कुछ इनसे खोया गया जो इन्होंने गढ़ रखा था। नागुज़ीर है कि वही आख़िरत में सबसे बढ़कर घाटे में रहें। रहे वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब ही के होकर रहे, तो यक़ीनन वे जन्नती लोग हैं और जन्नत में वे हमेशा रहेंगे। इन दोनों फ़रीक़ों की मिसाल ऐसी है जैसे एक आदमी तो हो अंधा

और बहरा और दूसरा हो देखने और सुनने वाला, क्या ये दोनों यकसाँ हो सकते हैं? क्या तुम (इस मिसाल से) कोई सबक नहीं लेते?

रुकू–185 (11 हूद : 25–35)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ٘ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۵﴾ۙ اَنْ لَّا
تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّىْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۶﴾ فَقَالَ
الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَ مَا
نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّاْىِ ۚ وَ مَا نَرٰى
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ يٰقَوْمِ
اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَ اٰتٰىنِىْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ
فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَ اَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَ يٰقَوْمِ لَاۤ
اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ لٰكِنِّىْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَ
يٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ
لَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَ لَاۤ اَقُوْلُ اِنِّىْ
مَلَكٌ وَّ لَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ
خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّىْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا

يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ
اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ
لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَاِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ؕ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَ
اَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ؑ

और ऐसे ही हालात थे जब हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा था। (उसने कहा), ‘‘मैं तुम लोगों को साफ़-साफ़ ख़बरदार करता हूँ कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो वरना मुझे अंदेशा है कि तुमपर एक रोज़ दर्दनाक अज़ाब आएगा।’’ जवाब में उसकी कौम के सरदार, जिन्होंने उसकी बात मानने से इनकार किया था, बोलो, ‘‘हमारी नज़र में तो तुम इसके सिवा कुछ नहीं हो कि बस एक इनसान हो हम जैसे। और हम देख रहे हैं कि हमारी क़ौम में से बस उन लोगों ने, जो हमारे यहाँ अराज़िल थे, बे सोचे-समझे तुम्हारी पैरवी इख़्तियार कर ली है। और हम कोई चीज़ भी ऐसी नहीं पाते जिसमें तुम लोग हमसे कुछ बढ़े हुए हो, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।’’ उसने कहा, ‘‘ऐ बिरादराने-क़ौम, ज़रा सोचो तो सही कि अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक खुली शहादत पर क़ायम था और फिर उसने मुझको

अपनी ख़ास रहमत से भी नवाज़ दिया। मगर वह तुमको नज़र न आई तो आख़िर हमारे पास क्या ज़रीया है कि तुम मानना न चाहो और हम ज़बरदस्ती उसको तुम्हारे सर चिपेक दें? और ऐ बिरादराने-क़ौम, मैं उस काम पर तुमसे कोई माल नहीं माँगता, मेरा अज्र तो अल्लाह के ज़िम्मे है। और मैं उन लोगों को धक्के देने से भी रहा जिन्होंने मेरी बात मानी है, वे आप ही अपने रब के हुज़ूर जाने वाले हैं। मगर मैं देखता हूँ कि तुम लोग जहालत बरत रहे हो। और ऐ क़ौम, अगर मैं इन लोगों को धुतकार दूँ तो ख़ुदा की पकड़ से कौन मुझे बचाने आएगा? तुम लोगों की समझ में क्या इतनी बात भी नहीं आती? और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, न यह कहता हूँ कि मै ग़ैब का इल्म रखता हूँ, न यह मेरा दावा है कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और यह भी मैं नहीं कह सकता कि जिन लोगों को तुम्हारी आँखें हिकारत से देखती हैं उन्हें अल्लाह ने कोई भलाई नहीं दी। उनके नफ़्स का हाल अल्लाह ही बेहतर जानता है। अगर मैं ऐसा कहूँ तो ज़ालिम हूँगा।'' आख़िरकार उन लोगों ने कहा कि ''ऐ नूह, तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत कर लिया। अब तो बस वह अज़ाब ले आओ जिसकी तुम हमें धमकी देते हो अगर सच्चे हो।'' नूह ने जवाब दिया, ''वह तो अल्लाह ही लाएगा अगर चाहेगा, और तुम इतना बलबूता नहीं रखते कि उसे रोक दो। अब अगर मैं तुम्हारी कुछ ख़ैरख़ाही करना भी चाहूँ तो मेरी ख़ैरख़ाही तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं दे सकती जब कि अल्लाह ही ने तुम्हें भटका देने का इरादा

कर लिया हो, वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना है।'' ऐ नबी, क्या ये लोग कहते हैं कि इस शख़्स ने ये सब कुछ खुद गढ़ लिया है? इनसे कहो, ''अगर मैंने यह खुद गढ़ा है तो मुझपर अपने जुर्म की ज़िम्मेदारी है, और जो जुर्म तुम कर रहे हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।''

रुकू–186 (11 हूद : 36–49)

وَ اُوْحِیَ اِلٰی نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ یُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا
تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ ۳۶ وَ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْیُنِنَا وَ وَحْیِنَا
وَ لَا تُخَاطِبْنِیْ فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۳۷ وَ یَصْنَعُ
الْفُلْكَ ۫ وَ كُلَّمَا مَرَّ عَلَیْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ
تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ۳۸ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ
مَنْ یَّاْتِیْهِ عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَ یَحِلُّ عَلَیْهِ عَذَابٌ مُّقِیْمٌ ۳۹ حَتّٰۤی اِذَا
جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِیْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ وَ
اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَیْهِ الْقَوْلُ وَ مَنْ اٰمَنَ ؕ وَ مَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا
قَلِیْلٌ ۴۰ وَ قَالَ ارْكَبُوْا فِیْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَ مُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ
رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۴۱ وَ هِیَ تَجْرِیْ بِهِمْ فِیْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَ نَادٰی
نُوْحُ اِبْنَهٗ وَ كَانَ فِیْ مَعْزِلٍ یّٰبُنَیَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَ لَا تَكُنْ مَّعَ
الْكٰفِرِیْنَ ۴۲ قَالَ سَاٰوِیْۤ اِلٰی جَبَلٍ یَّعْصِمُنِیْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا

عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَ حَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ
فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿۴۳﴾ وَ قِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَ يٰسَمَآءُ
اَقْلِعِيْ وَ غِيْضَ الْمَآءُ وَ قُضِيَ الْاَمْرُ وَ اسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَ
قِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَ نَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ
مِنْ اَهْلِيْ وَ اِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَ اَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۴۵﴾ قَالَ
يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖۗ فَلَا تَسْـَٔلْنِ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّيْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۴۶﴾
قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اِلَّا
تَغْفِرْ لِيْ وَ تَرْحَمْنِيْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۴۷﴾ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ
مِّنَّا وَ بَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ عَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَ اُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ
ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۸﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَاۤ
اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَاۤ اَنْتَ وَ لَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ
اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾ ع

नूह पर वहय की गई कि तुम्हारी क़ौम में से जो लोग ईमान ला चुके, बस वे ला चुके, अब कोई मानने वाला नहीं है। उनके करतूतों पर ग़म खाना छोड़ दो और हमारी निगरानी में हमारी वहय के मुताबिक़ एक कश्ती बनानी शुरू कर दो। और देखो जिन

लोगों ने ज़ुल्म किया है उनके हक़ में मुझसे कोई सिफ़ारिश न करना, ये सारे के सरे अब डूबने वाले हैं। नूह कश्ती बना रहा था और उसकी क़ौम के सरदारों में से जो कोई उसके पास से गुज़रता था वह उसका मज़ाक उड़ाता था। उसने कहा, ''अगर तुम हमपर हँसते हो तो हम भी तुमपर हँस रहे हैं, अनक़रीब तुम्हें ख़ुद मालूम हो जाएगा कि किसपर वह अज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर देगा और किस पर वह बला टूट पड़ती है जो टाले न टलेगी।'' यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और वह तन्नूर उबल पड़ा तो हमने कहा, ''हर क़िस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा कश्ती में रख लो, अपने घरवालों को भी-सिवाय उन अशख़ास के जिनकी निशानदेही पहले की जा चुकी है- उसमें सवार करा दो और उन लोगों को भी बिठा लो जो ईमान लाए हैं।'' और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे। नूह ने कहा, ''सवार हो जाओ इसमें, अल्लाह ही के नाम से है इसका चलना भी और इसका ठहरना भी, मेरा रब बड़ा ग़फ़ूर व रहीम है।'' कश्ती इन लोगों को लिए चली जा रही थी और एक-एक मौज पहाड़ की तरह उठ रही थी। नूह का बेटा दूर फ़ासिले पर था। नूह ने पुकार कर कहा, ''बेटा, हमारे साथ सवार हो जा, काफ़िरों के साथ न रहा।'' उसने पलटकर जवाब दिया, ''मैं अभी एक पहाड़ पर चढ़ जाता हूँ जो मुझे पानी से बचा लेगा।'' नूह ने कहा, ''आज कोई चीज अल्लाह के हुक्म से बचाने वाली नहीं है सिवाय इसके कि अल्लाह ही किसी पर रहम फरमाए।'' इतने में

एक मौज दोनों के दरमियान हायल हो गई और वह भी डुबने वालों में शामिल हो गया। हुक्म हुआ, ''ऐ ज़मीन अपना सारा पानी निगल जा और ऐ आसमान रुक जा।'' चुनाँचे पानी ज़मीन में बैठ गया, फ़ैसला चुका दिया गया, कश्ती जूदी पर टिक गई, और कह दिया गया कि दूर हुई ज़ालिमों की कौम! नूह ने अपने रब को पुकारा। कहा, ''ऐ रब, मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है और तेरा वादा सच्चा है और तू सब हाकिमों से बड़ा और बेहतर हाकिम है।'' जवाब में इरशाद हुआ, ''ऐ नूह, वह तेरे घरवालों में से नहीं है, वह तो एक बिगड़ा हुआ काम है, लिहाज़ा तू उस बात की मुझसे दरख़ास्त न कर जिसकी हक़ीक़त तू नहीं जानता, मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि अपने आपको जाहिलों की तरह न बना ले।'' नूह ने फ़ौरन अर्ज किया, ''ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इससे कि वह चीज़ तुझसे माँगू जिसका मुझे इल्म नहीं। अगर तूने मुझे माफ़ न किया और रहम न फ़रमाया तो मैं बरबाद हो जाऊँगा।'' हुक्म हुआ, ''ऐ नूह उतर जा, हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतें हैं तुझपर और उन गरोहों पर जो तेरे साथ है, और कुछ गरोह ऐसे भी हैं जिनको हम कुछ मुद्दत सामाने-ज़िन्दगी बख़्शेंगे फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।'' ऐ नबी, ये ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वहय कर रहे हैं। इससे पहले न तुम उनको जानते थे और न तुम्हारी क़ौम। पस सब्र करो, अंजामे-कार मुत्तक़ियों ही के हक़ में है।

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ
اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى الَّذِىْ فَطَرَنِىْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَ يٰقَوْمِ
اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّ
يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَ لَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا
جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّ مَا نَحْنُ بِتَارِكِىْۤ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَ مَا نَحْنُ لَكَ
بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۳﴾ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّىْۤ
اُشْهِدُ اللّٰهَ وَ اشْهَدُوْۤا اَنِّىْ بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ ۙ مِنْ دُوْنِهٖ
فَكِيْدُوْنِىْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۵۵﴾ اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّىْ وَ
رَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۶﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَ
يَسْتَخْلِفُ رَبِّىْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَ لَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۵۷﴾ وَ لَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَ نَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۸﴾ وَ تِلْكَ عَادٌ ۟ۙ
جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَ عَصَوْا رُسُلَهٗ وَ اتَّبَعُوْۤا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ
عَنِيْدٍ ﴿۵۹﴾ وَ اُتْبِعُوْا فِىْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ

عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾

और आद की तरफ़ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा, "ऐ बिरादराने-क़ौम, अल्लाह की बन्दगी करो, तुम्हारा कोई ख़ुदा उसके सिवा नहीं है। तुमने महज झूठ गढ़ रखे हैं। ऐ बिरादराने-क़ौम, इस काम पर मैं तुमसे कोई अज्र नहीं चाहता, मेरा अज्र तो उसके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया है, क्या तुम अक्ल से ज़रा काम नहीं लेते? और ऐ मेरी क़ौम के लोगो, अपने रब से माफ़ी चाहो, फिर उसकी तरफ पलटो, वह तुमपर आसमान के दहाने खोल देगा और तुम्हारी मौजूदा कुव्वत पर मज़ीद कुव्वत का इज़ाफ़ा करेगा। मुजरिम बनकर (बन्दगी से) मुँह न फेरो।" उन्होंने जवाब दिया, "ऐ हूद, तू हमारे पास कोई सरीह शहादत लेकर नहीं आया है और तेरे कहने से हम अपने माबूदों को नहीं छोड़ सकते, और तुझपर हम ईमान लाने वाले नहीं हैं। हम तो यह समझते हैं कि तेरे ऊपर हमारे माबूदों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने कहा, "मैं अल्लाह की शहादत पेश करता हूँ। और तुम गवाह रहो कि यह जो अल्लाह के सिवा दूसरों को तुमने ख़ुदाई में शरीक ठहरा रखा है इससे मैं बेजार हूँ। तुम सब के सब मिलकर मेरे ख़िलाफ़ अपनी करनी में कसर न उठा रखो और मुझे जरा मुहलत न दो, मेरा भरोसा अल्लाह पर है जो मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी। कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो। बेशक मेरा रब सीधी राह पर है।

अगर तुम मुँह फेरते हो तो फेर लो। जो पैग़ाम देकर मैं तुम्हारे पास भेजा गया था वह मैं तुमको पहुँचा चुका हूँ। अब मेरा रब तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम को उठाएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। यक़ीनन मेरा रब हर चीज़ पर निगराँ है।'' फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे नजात दे दी और एक श़ख्स अज़ाब से उन्हें बचा लिया। ये हैं आद, अपने रब की आयात से इन्होंने इनकार किया, उसके रसूलों की बात न मानी, और हर जब्बार दुश्मने-हक़ की पैरवी करते रहे। आख़िरकार इस दुनिया में भी उनपर फिटकार पड़ी और क़ियामत के रोज़ भी। सुनो! आद ने अपने रब से कुफ़्र किया। सुनो! दूर फेंक दिए गए आद, हूद की क़ौम के लोग।

रुकू–188 (11 हूद : 61–68)

وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا
فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾ قَالُوْا
يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا
يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَ اِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۶۲﴾ قَالَ
يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ اٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً
فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ

تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَ يٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ
اَرْضِ اللّٰهِ وَ لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾
فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ
مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾
وَ اَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۙ﴿٦٧﴾
كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا
لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, ‘‘ऐ मेरी क़ौम के लोगो, अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई खुदा नहीं है। वही है जिसने तुमको ज़मीन से पैदा किया है और यहाँ तुमको बसाया है। लिहाज़ा तुम उससे माफ़ी चाहो और उसकी तरफ पलट आओ, यक़ीनन मेरा रब क़रीब है और वह दुआओं का जवाब देने वाला है। उन्होंने कहा, ‘‘ऐ सालेह, इससे पहले तू हमारे दरमियान ऐसा शख़्स था जिससे बड़ी तवक़्क़ुआत वाबस्ता थीं। क्या तू हमें उन माबूदों की परस्तिश से रोकना चाहता है जिनकी परस्तिश हमारे बाप-दादा करते थे? तू जिस तरीके की तरफ़ हमें बुला रहा है उसके बारे में हमको सख्त शुबहा है जिसने हमें खलजान में डाल रखा है।’’ सालेह ने

कहा, ''ऐ बिरादराने-कौम, तुमने कुछ इस बात पर भी ग़ौर किया कि अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक साफ शहादत रखता था, और फिर उसने अपनी रहमत से भी मुझको नवाज़ दिया तो इसके बाद अल्लाह की पकड़ से मुझे कौन बचाएगा, अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ? तुम मेरे किस काम आ सकते हो सिवाय इसके कि मुझे और ज़्यादा ख़सारे में डाल दो। और ऐ मेरी क़ौम के लोग, देखो यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। इसे ख़ुदा की ज़मीन में चरने के लिए आज़ाद छोड़ दो। इससे ज़रा तारुज न करना वरना कुछ ज़्यादा देर न गुज़रेगी कि तुमपर ख़ुदा का अज़ाब आ जाएगा। मगर उन्होंने ऊँटनी को मार डाला। इसपर सालेह ने उनको ख़बरदार कर दिया कि ''बस अब तीन दिन अपने घरों में और रह-बस लो। यह ऐसी मीआद है जो झूटी न साबित होगी।'' आख़िरकार जब हमारे फ़ैसले का वक़्त आ गया तो हमने अपनी रहमत से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से उनको महफ़ूज रखा। बेशक तेरा रब ही दरअस्ल ताक़तवर और बालादस्त है। रहे वे लोग जिन्होंने ज़ुल्म किया था तो एक सख़्त धमाके ने उनको धर लिया और वे अपनी बस्तियों में इस तरह बेहिस व हरकत पड़े के पड़े रह गए कि गोया वे वहाँ कभी बसे ही न थे। सुनो! समूद ने अपने रब से कुफ़्र किया। सुनो। दूर फेंक दिए गए समूद!

وَ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ
فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿۶۹﴾ فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ
اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَ اَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ
اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿۷۰﴾ؕ وَ امْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا
بِاِسْحٰقَ ۙ وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿۷۱﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَ اَنَا
عَجُوْزٌ وَّ هٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿۷۲﴾ قَالُوْۤا
اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ بَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ
اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿۷۳﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَ جَآءَتْهُ
الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿۷۴﴾ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ
مُّنِيْبٌ ﴿۷۵﴾ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ
وَ اِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿۷۶﴾ وَ لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا
سِیْٓءَ بِهِمْ وَ ضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿۷۷﴾ وَ
جَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَ مِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ
قَالَ يٰقَوْمِ هٰۤؤُلَآءِ بَنَاتِىْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ لَا تُخْزُوْنِ
فِىْ ضَيْفِىْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿۷۸﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا
فِىْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَ اِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿۷۹﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِىْ بِكُمْ

قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ
يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ
اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ
الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۬ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾ۙ
مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾ ع

और देखो! इबराहीम के पास हमारे फ़रिश्ते ख़ुशखबरी लिए हुए पहुँचे। कहा तुमपर सलाम हो। इबराहीम ने जवाब दिया कि तुमपर भी सलाम हो। फिर कुछ देर न गुज़री कि इबराहीम एक भुना हुआ बछड़ा (उनकी ज़ियाफ़त के लिए) ले आया। मगर जब देखा कि उनके हाथ खाने पर नहीं बढ़ते तो वह उनसे मुश्तबह हो गया और दिल में उनसे ख़ौफ़ महसूस करने लगा। उन्होंने कहा, ''डरो नहीं, हम तो लूत की क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं।'' इबराहीम की बीवी भी खड़ी हुई थी, वह यह सुनकर हँस दी। फिर हमने उसको इसहाक़ की और इसहाक़ के बाद याकूब की ख़ुशख़बरी दी। वह बोली, ''हाय मेरी कमबख़्ती! क्या अब मेरे यहाँ औलाद होगी जबकि मैं बुढ़िया फूँस हो गई और मेरे मियाँ भी बूढ़े हो चुके? यह तो बड़ी अजीब बात है।'' फ़रिश्तों ने कहा, ''अल्लाह के हुक्म पर ताज्जुब करती हो? इबराहीम के घरवालो, तुम लोगों पर तो अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हैं, और यकीनन

अल्लाह निहायत क़ाबिले-तारीफ़ और बड़ी शान वाला है।'' फिर जब इबराहीम की घबराहट दूर हो गई और (औलाद की बशारत से) उसका दिल ख़ुश हो गया तो उसने क़ौमे-लूत के मामले में हमसे झगड़ा शुरू किया। हक़ीक़त में इबराहीम बड़ा हलीम और नर्म दिल आदमी था और हर हाल में हमारी तरफ़ रुजूअ करता था। (आख़िरकार हमारे फ़रिश्तों ने उससे कहा) ''ऐ इबराहीम, इससे बाज़ आ जाओ, तुम्हारे रब का हुक्म हो चुका है और अब उन लोगों पर वह अज़ाब आकर रहेगा जो किसी के फेरे नहीं फिर सकता।'' और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास पहुँचे तो उनकी आमद से वह बहुत घबराया और दिल तंग हुआ और कहने लगा कि आज बड़ी मुसीबत का दिन है। (इन मेहमानों का आना था कि) उसकी क़ौम के लोग बेइख़्तियार उसके घर की तरफ दौड़ पड़े। पहले से वे ऐसी ही बदकारियों के ख़ूगर थे। लूत ने उनसे कहा, ''भाइयो, ये मेरी बेटियाँ मौजूद हैं, ये तुम्हारे लिए पाकीज़ातर हैं। कुछ ख़ुदा का ख़ौफ़ करो और मेरे मेहमानों के मामले में मुझे ज़लील न करो। क्या तुममें कोई भला आदमी नहीं?'' उन्होंने जवाब दिया, ''तुझे तो मालूम ही है कि तेरी बेटियों में हमारा कोई हिस्सा नहीं है। और तू यह भी जानता है कि हम चाहते क्या है।'' लूत ने कहा, ''काश, मेरे पास इतनी ताक़त होती कि तुम्हें सीधा कर देता, या कोई मज़बूत सहारा ही होता कि उसकी पनाह लेता।'' तब फ़रिश्तों ने उससे कहा कि ''ऐ लूत, हम तेरे रब के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं, ये लोग तेरा कुछ न बिगाड़

सकेंगे। बस तू कुछ रात रहे अपने अहलो-अयाल को लेकर निकल जा। और देखो तुममें से कोई शख़्स पीछे पलटकर न देखे। मगर तेरी बीवी (साथ नहीं जाएगी) क्योंकि उसपर भी वही कुछ गुजरने वाला है जो इन लोगों पर गुज़रना है। उनकी तबाही के लिए सुबह का वक़्त मुक़र्रर है - सुबह होते अब देर ही कितनी है!'' फिर जब हमारे फ़ैसले का वक़्त आ पहुँचा तो हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उसपर पकी हुई मिट्टी के पत्थर ताबड़-तोड़ बरसाए जिनमें से हर पत्थर तेरे रब के हाँ निशानज़दा था। और ज़ालिमों से यह सज़ा कुछ दूर नहीं है।

रुकू-190 (11 हूद : 84-95)

وَ اِلٰی مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ وَ لَا تَنْقُصُوا الْمِكْیَالَ وَ الْمِیْزَانَ اِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ بِخَیْرٍ وَّ
اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ مُّحِیْطٍ ﴿۸۴﴾ وَ یٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْیَالَ
وَ الْمِیْزَانَ بِالْقِسْطِ وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْیَآءَهُمْ وَ لَا تَعْثَوْا فِی
الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ﴿۸۵﴾ بَقِیَّتُ اللّٰهِ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۚ۬ وَ
مَاۤ اَنَا عَلَیْكُمْ بِحَفِیْظٍ ﴿۸۶﴾ قَالُوْا یٰشُعَیْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ
نَّتْرُكَ مَا یَعْبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِیْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ
لَاَنْتَ الْحَلِیْمُ الرَّشِیْدُ ﴿۸۷﴾ قَالَ یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰی
بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَ رَزَقَنِیْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَ مَاۤ اُرِیْدُ اَنْ

أُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا
اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۸۸﴾
وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ
نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۹﴾
وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا
يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ
وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿۹۱﴾ قَالَ يٰقَوْمِ
اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ
رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۹۲﴾ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ
كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿۹۳﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا
شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا
الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۙ﴿۹۴﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ
اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿۹۵﴾ ع

और मदयन वालों की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो, अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई खुदा नहीं है। और नाप-तौल में कमी न

किया करो। आज मैं तुमको अच्छे हाल में देख रहा हूँ, मगर मुझे डर है कि कल तुमपर ऐसा दिन आएगा जिसका अज़ाब सबको घेर लेगा। और ऐ बिरादराने-क़ौम, ठीक-ठीक इनसाफ़ के साथ पूरा नापो और तौलो और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दिया करो और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो। अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और बहरहाल मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगराने-कार नहीं हूँ।'' उन्होंने जवाब दिया, ''ऐ शुऐब, क्या तेरी नमाज़ तुझे यह सिखाती है कि हम उन सारे माबूदों को छोड़ दें जिनकी परस्तिश हमारे बाप-दादा करते थे? या यह कि हमको अपने माल में अपने मंशा के मुताबिक़ तसर्रुफ़ करने का इख़्तियार न हो? बस तू ही तो एक आली ज़र्फ़ और रास्त-बाज आदमी रह गया है!'' शुऐब ने कहा, ''भाइयो! तुम ख़ुद ही सोचो कि अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक खुली शहादत पर था और फिर उसने मुझे अपने हाँ से अच्छा रिज़्क़ भी अता किया (तो उसके बाद मैं तुम्हारी गुमराहियों और हरामख़ोरियों में तुम्हारा शरीके-हाल कैसे हो सकता हूँ?) और मैं हरगिज़ यह नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुमको रोकता हूँ उनका ख़ुद इर्तिकाब करूँ। मैं तो इस्लाह करना चाहता हूँ जहाँ तक भी मेरा बस चले। और यह जो कुछ मैं करना चाहता हूँ। उसका सारा इनहिसार अल्लाह की तौफ़ीक़ पर है, उसी पर मैंने भरोसा किया और हर मामले में उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ। और ऐ बिरादराने-क़ौम, मेरे ख़िलाफ़ तुम्हारी हटधर्मी कहीं यह नौबत न पहुँचा दे कि आख़िरकार तुमपर भी वही अज़ाब आकर रहे जो नूह या हूद या

सालेह की क़ौम पर आया था। और लूत की क़ौम तो तुमसे कुछ ज़्यादा दूर भी नहीं है। देखो! अपने रब से माफ़ी माँगो और उसकी तरफ़ पलट आओ, बेशक मेरा रब रहीम है और अपनी मख़लूक़ से मुहब्बत रखता है।'' उन्होंने जवाब दिया, ''ऐ शुऐब, तेरी बहुत-सी बातें तो हमारी समझ ही में नहीं आतीं, और हम देखते हैं कि तू हमारे दरमियान एक बेज़ोर आदमी है, तेरी बिरादरी न होती तो हम कभी का तुझे संगसार कर चुके होते, तेरा बल-बूता तो इतना नहीं है कि हमपर भारी हो।'' शुऐब ने कहा, ''भाइयो, क्या मेरी बिरादरी तुमपर अल्लाह से ज़्यादा भारी है कि तुमने (बिरादरी का तो ख़ौफ़ किया और) अल्लाह को बिल्कुल पसे-पुश्त डाल दिया? जान रखो कि जो कुछ तुम कर रहे हो वह अल्लाह की गिरिफ़्त से बाहर नहीं है। ऐ मेरी क़ौम के लोगो, तुम अपने तरीक़े पर काम किए जाओ और मैं अपने तरीक़े पर करता रहूँगा, जल्दी ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर ज़िल्लत का अज़ाब आता है और कौन झूठा है। तुम भी इन्तिज़ार करो और मैं भी तुम्हारे साथ चश्मे-बराह हूँ।'' आख़िरकार जब हमारे फ़ैसले का वक़्त आ गया तो हमने अपनी रहमत से शुऐब और उसके साथी मोमिनों को बचा लिया और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको एक सख़्त धमाके ने ऐसा पकड़ा कि वे अपनी बस्तियों में बेहिस व हरकत पड़े के पड़े रह गए गोया वे कभी वहाँ रहे-बसे ही न थे। सुनो! मदयनवाले भी दूर फेंक दिया गए जिस तरह समूद फेंके गए थे ।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۹۶﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ
مَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَ مَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿۹۷﴾ يَقْدُمُ
قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَ بِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿۹۸﴾ وَ
اُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿۹۹﴾
ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّ حَصِيْدٌ ﴿۱۰۰﴾ وَ مَا
ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَمَاۤ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ
يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَ مَا زَادُوْهُمْ
غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿۱۰۱﴾ وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِيَ ظَالِمَةٌ ؕ
اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ
الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿۱۰۳﴾ وَ
مَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ؕ﴿۱۰۴﴾ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّ سَعِيْدٌ ﴿۱۰۵﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ
لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ شَهِيْقٌ ۙ﴿۱۰۶﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ
الْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿۱۰۷﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ
سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اِلَّا
مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿۱۰۸﴾ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ

هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَ اِنَّا
لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿۱۰۹﴾ ع

और मूसा को हमने अपनी निशानियों और खुली सनदे-मामूरियत के साथ फ़िरऔन और उसके आयने-सल्तनत की तरफ़ भेजा, मगर उन्होंने फ़िरऔन के हुक्म की पैरवी की, हालाँकि फ़िरऔन का हुक्म रास्ती पर न था। क़ियामत के रोज़ वह अपनी क़ौम के आगे-आगे होगा और अपनी पेशवाई में उन्हें दोज़ख़ की तरफ़ ले जाएगा। कैसी बदतर जाए-वुरुद है यह जिसपर कोई पहुँचे। और उन लोगों पर दुनिया में भी लानत पड़ी और क़ियामत के रोज़ भी पड़ेगी। कैसा बुरा सिला है यह जो किसी को मिले! ये चन्द बस्तियों की सरगुज़श्त है जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इनमें से बाज़ अब भी खड़ी हैं और बाज़ की फ़सल कट चुकी है। हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, उन्होंने आप ही अपने ऊपर सितम ढाया और जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो उनके वे माबूद जिन्हें वे अल्लाह को छोड़कर पुकारा करते थे उनके कुछ काम न आ सके और उन्होंने हलाकत व बरबादी के सिवा उन्हें कुछ फ़ायदा न दिया। और तेरा रब जब किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है तो फिर उसकी पकड़ ऐसी ही हुआ करती है, फ़िल-वाके उसकी पकड़ बड़ी सख़्त और दर्दनाक होती है। हक़ीक़त यह है कि इसमें एक निशानी है हर उस शख़्स के लिए जो अज़ाबे-आख़िरत का ख़ौफ़ करे। वह एक दिन होगा जिसमें सब लोग जमा होंगे और फिर जो

कुछ उस रोज़ होगा सबकी आँखों के सामने होगा। हम उसके लाने में कुछ बहुत ज़्यादा ताख़ीर नहीं कर रहे हैं, बस एक गिनी चुनी मुद्दत उसके लिए मुक़र्रर है। जब वह आएगा तो किसी को बात करने की मजाल न होगी, इल्ला यह कि ख़ुदा की इजाज़त से कुछ अर्ज़ करे। फिर कुछ लोग उस रोज़ बदबख़्त होंगे और कुछ नेकबख़्त। जो बदबख़्त होंगे वे दोज़ख़ में जाएँगे (जहाँ गर्मी और प्यास की शिद्दत से) वे हँफेंगे और फुंकारे मारेंगे और इसी हालत में वे हमेशा रहेंगे जब तक कि ज़मीन व आसमान क़ायम हैं, इल्ला यह कि तेरा रब कुछ और चाहे। बेशक तेरा रब पूरा इख़्तियार रखता है कि जो चाहे करे। रहे वे लोग जो नेकबख़्त निकलेंगे, तो वे जन्नत में जाएँगे और वहाँ हमेशा रहेंगे जब तक ज़मीन और आसमान क़ायम हैं, इल्ला यह कि तेरा रब कुछ और चाहे। ऐसी बख़्शिश उनको मिलेगी जिसका सिलसिला कभी मुन्कतअ न होगा। पस ऐ नबी, तू उन माबूदों की तरफ़ से किसी शक में न रह जिनकी ये लोग इबादत कर रहे हैं। ये तो (बस लकीर के फकीर बने हुए) उसी तरह पूजा-पाट किए जा रहे हैं जिस तरह पहले इनके बाप-दादा करते थे, और हम इनका हिस्सा इन्हें भरपूर देंगे बग़ैर इसके कि इसमें कुछ काट कसर हो।

रुकू—192 (11 हूद : 110—123)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۱۰﴾ وَ اِنَّ

كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱۱﴾
فَاسْتَقِمْ كَمَاۤ اُمِرْتَ وَ مَنْ تَابَ مَعَكَ وَ لَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَ لَا تَرْكَنُوْۤا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَ
مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ
طَرَفَيِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ
ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۚ﴿۱۱۴﴾ وَ اصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَلَوْ لَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ
يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَ
اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَ مَا كَانَ
رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ
لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۙ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا مَنْ
رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَ لِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ
جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَ كُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ
اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَ جَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَ
مَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَ قُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا
عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۙ﴿۱۲۱﴾ وَ انْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ لِلّٰهِ

غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ
عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

हम इससे पहले मूसा को भी किताब दे चुके हैं और उसके बारे में भी इख़्तिलाफ़ किया गया था (जिस तरह आज इस किताब के बारे में किया जा रहा है जो तुम्हें दी गई है)। अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले ही तय न कर दी गई होती तो उन इख़्तिलाफ़ करने वालों के दरमियान कभी का फ़ैसला चुका दिया गया होता। यह वाक़िआ है कि ये लोग उसकी तरफ़ से शक और ख़लजान में पड़े हुए हैं। और यह भी वाक़िआ है कि तेरा रब उन्हें उनके आमाल का पूरा-पूरा बदला देकर रहेगा, यक़ीनन वह उनकी सब हरकतों से बाख़बर है। पस ऐ नबी, तुम और तुम्हारे वे साथी जो (कुफ़्र व बगावत से ईमान व इताअत की तरफ़) पलट आए हैं, ठीक-ठीक राहे-रास्त पर साबित कदम रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया है। और बन्दगी की हद से तजावुज़ न करो। जो कुछ तुम कर रहे हो उसपर तुम्हारा रब निगाह रखता है। इन ज़ालिमों की तरफ़ ज़रा न झुकना वरना जहन्नम की लपेट में आ जाओगे और तुम्हें कोई ऐसा वली व सरपरस्त न मिलेगा जो ख़ुदा से तुम्हें बचा सके, और कहीं से तुम को मदद न पहुँचेगी। और देखो, नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और कुछ रात गुज़रने पर। दरहक़ीक़त नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं, यह एक याददिहानी है उन लोगों के लिए जो ख़ुदा को याद रखने वाले हैं।

और सब्र कर, अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र कभी ज़ाया नहीं करता। फिर क्यों न उन क़ौमों में जो तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं ऐसे अहले-ख़ैर मौजूद रहे जो लोगों को ज़मीन में फ़साद बरपा करने से रोकते? ऐसे लोग निकले भी तो बहुत कम, जिनको हमने उन क़ौम में से बचा लिया, वरना ज़ालिम लोग तो उन्हीं मज़ों के पीछे पड़े रहे जिनके सामान उन्हें फ़रावानी के साथ दिए गए थे और वे मुजरिम बनकर रहे। तेरा रब ऐसा नहीं है कि बस्तियों को नाहक तबाह कर दे हालाँकि उनके बाशिन्दे इस्लाह करने वाले हों। बेशक तेरा रब अगर चाहता तो तमाम इनसानों को एक गरोह बना सकता था, मगर अब तो वे मुख़्तलिफ़ तरीक़ों ही पर चलते रहेंगे और बेराहरवियों से सिर्फ़ वे लोग बचेंगे जिनपर तेरे रब की रहमत है। इसी (आज़ादी-ए-इन्तिख़ाब व इख़्तियार और इमतिहान) के लिए तो उसने उन्हें पैदा किया था। और तेरे रब की वह बात पूरी हो गई जो उसने कही थी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इनसानों सबसे भर दूँगा। और ऐ नबी, ये पैग़म्बरों के क़िस्से जो हम तुम्हें सुनाते हैं, ये वे चीज़ें हैं जिनके ज़रीए से हम तुम्हारे दिल को मज़बूत करते हैं। इनके अन्दर तुमको हक़ीक़त का इल्म मिला और ईमान लाने वालों को नसीहत और बेदारी नसीब हुई। रहे वे लोग जो ईमान नहीं लाते, तो उनसे कह दो कि तुम अपने तरीक़े पर काम करते रहो और हम अपने तरीक़े पर किए जाते हैं, अंजामे-कार का तुम भी इन्तिज़ार करो और हम भी मुन्तज़िर हैं। आसमानों और ज़मीन में जो कुछ छिपा हुआ है सब अल्लाह के कब्ज़ए-क़ुदरत, में है और सारा मामला उसी की तरफ़ रुजूअ

किया जाता है। पस ऐ नबी, तू उसकी बन्दगी कर और उसी पर भरोसा रख, जो कुछ तुम लोग कर रहे हो तेरा रब उससे बेख़बर नहीं है।

रुकू–193 (12 यूसुफ़ : 1–6)

الٓرٰ ۟ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝١ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا
لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَ اِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ
الْغٰفِلِيْنَ ۝٣ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ
كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا
تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٥ وَ كَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَ يُعَلِّمُكَ مِنْ
تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَ عَلٰۤى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ
اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۝٦ ع

अलिफ़, लाम, रा। ये उस किताब की आयात हैं जो अपना मुद्दा साफ़-साफ़ बयान करती है। हमने इसे नाज़िल किया है क़ुरआन बनाकर अरबी ज़बान में ताकि तुम (अहले-अरब इसको अच्छी तरह समझ सको। ऐ नबी, हम इस क़ुरआन को तुम्हारी तरफ़ वहय करके बेहतरीन पैराए में वाक़िआत और हक़ायक़ तुमसे

बयान करते हैं, वरना इससे पहले तो (इन चीज़ों से) तुम बिल्कुल ही बेख़बर थे। यह उस वक़्त का ज़िक्र है जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, ''अब्बा जान, मैंने ख़ाब देखा है कि ग्यारह सितारे हैं और सूरज और चाँद हैं और वे मुझे सजदा कर रहे हैं। "जवाब में उसके बाप ने कहा, ''बेटा यह खाब अपने भाइयों को न सुनाना वरना वे तेरे दरपै आज़ार हो जाएँगे, हक़ीक़त यह है कि शैतान आदमी का खुला दुश्मन है। और ऐसा ही होगा (जैसा तूने ख़ाब में देखा है कि), तेरा रब तूझे (अपने काम के लिए) मुन्तख़ब करेगा और तुझे बातों की तह तक पहुँचना सिखाएगा और तेरे ऊपर और आले-याकूब पर अपनी नेमत उसी तरह पूरी करेगा जिस तरह इससे पहले वह तेरे बुज़ुर्गों, इबराहीम और इसहाक़ पर कर चुका है, यक़ीनन तेरा रब अलीम और हकीम है।''

रुकू–194 (12 यूसुफ़ : 7–20)

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَ اِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ۝٧ اِذْ قَالُوْا
لَيُوْسُفُ وَ اَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَ نَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا
لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۚ۝٨ اِۨقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ
وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ۝٩ قَالَ قَآئِلٌ
مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَ اَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ
السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ۝١٠ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى

يُوْسُفَ وَ اِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿۱۱﴾ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَ يَلْعَبْ وَ اِنَّا
لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿۱۲﴾ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَ اَخَافُ اَنْ
يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَ اَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳﴾ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَ
نَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَ اَجْمَعُوْٓا اَنْ
يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا
وَ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَ جَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿۱۶﴾ۭ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ
اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَ تَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَ
مَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَ لَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَ جَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ
بِدَمٍ كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ
وَ اللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَ جَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا
وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ۭ وَ اَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۭ
وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ شَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ
مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَ كَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿۲۰﴾ ع

हक़ीक़त यह है कि यूसुफ़ और उसके भाइयों के क़िस्से में इन पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। यह क़िस्सा यूँ शुरू होता है कि उसके भाइयों ने आपस में कहा, ''यह यूसुफ़ और इसका भाई, दोनों हमारे वालिद को हम सबसे ज़्यादा महबूब हैं, हालाँकि

हम एक पूरा जथा हैं, सच्ची बात यह है कि हमारे अब्बा जान बिल्कुल ही बहक गए हैं। चलो यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या उसे कहीं फेंक दो ताकि तुम्हारे वालिद की तवज्जुह सिर्फ़ तुम्हारी ही तरफ़ हो जाए। यह काम कर लेने के बाद फिर नेक बन रहना।'' इसपर उनमें से एक बोला, ''यूसुफ़ को क़त्ल न करो, अगर कुछ करना ही है तो उसे किसी अंधे कुँए में डाल दो, कोई आता-जाता काफ़िला उसे निकाल ले जाएगा।'' इस क़रारदाद पर उन्होंने जाकर अपने बाप से कहा, ''अब्बा जान, क्या बात है कि आप यूसुफ़ के मामले में हमपर भरोसा नहीं करते हालाँकि हम उसके सच्चे ख़ैरख़ाह हैं? कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए, कुछ चर-चुग लेगा और खेल-कूद से भी दिल बहलाएगा। हम उसकी हिफ़ाज़त को मौजूद हैं।'' बाप ने कहा, ''तुम्हारा उसे ले जाना मुझे शाक़ गुज़रता है और मुझे अंदेशा है कि कहीं उसे भेड़िया न फाड़ खाए जबकि तुम उससे ग़ाफ़िल हो।'' उन्होंने जवाब दिया, ''अगर हमारे होते उसे भेड़िये ने खा लिया, जबकि हम एक जत्था हैं, तब तो हम बड़े ही निकम्मे होंगे।'' इस तरह इसरार करके जब वे उसे ले गए और उन्होंने तय कर लिया कि उसे एक अंधे कुँए में छोड़ दें, तो हमने यूसुफ़ को वहय की कि ''एक वक़्त आएगा जब तू इन लोगों को इनकी यह हरकत जताएगा, ये अपने फ़ेल के नताइज से बेख़बर हैं।'' शाम को वे रोते-पीटते अपने बाप के पास आए और कहा, ''अब्बा जान, हम दौड़ का मुक़ाबला करने में लग गए थे और यूसुफ़ को हमनें अपने सामान के पास छोड़ दिया था कि

इतने में भेड़िया आकर उसे खा गया। आप हमारी बात का यकीन न करेंगे चाहे हम सच्चे ही हों।'' और वे यूसुफ़ के कमीज़ पर झूट-मूट का ख़ून लगाकर ले आए थे। यह सुनकर उनके बाप ने कहा, ''बल्कि तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हारे लिए एक बड़े काम को आसान बना दिया। अच्छा, सब्र करूँगा और बख़ूबी सब्र करूँगा, जो बात तुम बना रहे हो उसपर अल्लाह ही से मदद माँगी जा सकती है।'' उधर एक काफ़िला आया और उसने अपने सक्के को पानी लाने के लिए भेजा। सक्के ने जो कुएँ में डोल डाला तो (यूसुफ़ को देखकर) पुकार उठा, ''मुबारक हो यहाँ तो एक लड़का है।'' उन लोगों ने उसको माले-तिजारत समझकर छिपा लिया, हालाँकि जो कुछ वे कर रहे थे ख़ुदा उससे बाख़बर था। आख़िरकार उन्होंने थोड़ी-सी क़ीमत पर चन्द दिरहमों के एवज़ उसे बेच डाला और वे उसकी क़ीमत के मामले में कुछ ज़्यादा के उम्मीदवार न थे।

रुकू–195 (12 यूसुफ़ : 21–29)

وَ قَالَ الَّذِی اشۡتَرٰىهُ مِنۡ مِّصۡرَ لِامۡرَاَتِهٖۤ اَكۡرِمِیۡ مَثۡوٰىهُ عَسٰۤی اَنۡ
یَّنۡفَعَنَاۤ اَوۡ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَ كَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِیُوۡسُفَ فِی الۡاَرۡضِ ۫ وَ
لِنُعَلِّمَهٗ مِنۡ تَاۡوِیۡلِ الۡاَحَادِیۡثِ ؕ وَ اللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤی اَمۡرِهٖ وَ لٰكِنَّ
اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۱﴾ وَ لَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَیۡنٰهُ حُكۡمًا وَّ عِلۡمًا ؕ
وَ كَذٰلِكَ نَجۡزِی الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۲۲﴾ وَ رَاوَدَتۡهُ الَّتِیۡ هُوَ فِیۡ بَیۡتِهَا عَنۡ

نَّفْسِهٖ وَ غَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَ قَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ
رَبِّيْۤ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝۲۳ وَ لَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَ
هَمَّ بِهَا لَوْ لَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَ
الْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ۝۲۴ وَ اسْتَبَقَا الْبَابَ وَ قَدَّتْ
قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّ اَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ
اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۲۵ قَالَ هِيَ
رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ
قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَ هُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝۲۶ وَ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ
قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَ هُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۲۷ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ
مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ۝۲۸ يُوْسُفُ
اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَ اسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ
الْخٰطِـِٕيْنَ ۝۲۹

मिस्र के जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा उसने अपनी बीवी से कहा, ‘‘इसको अच्छी तरह रखना, बईद नहीं कि यह हमारे लिए मुफ़ीद साबित हो या हम इसे बेटा बना लें।’’ इस तरह हमने यूसुफ़ के लिए उस सरज़मीन में क़दम जमाने की सूरत निकाली और उसे मामलाफ़हमी की तालीम देने का इन्तिज़ाम किया। अल्लाह अपना

काम करके रहता है, मगर अकसर लोग जानते नहीं हैं। और जब वह अपनी पूरी जवानी को पहुँचा तो हमने उसे कुव्वते-फ़ैसला और इल्म अता किया, इस तरह हम नेक लोगों को जज़ा देते हैं। जिस औरत के घर में वह था वह उसपर डोरे डालने लगी और एक रोज़ दरवाज़ा बन्द करके बोली, ''आ जा।'' यूसुफ़ ने कहा, ''ख़ुदा की पनाह, मेरे रब ने तो मुझे अच्छी मंज़िलत बख़्शी (और मैं यह काम करूँ), ऐसे ज़ालिम कभी फ़लाह नहीं पाया करते।'' वह उसकी तरफ़ बढ़ी और यूसुफ़ भी उसकी तरफ बढ़ता अगर अपने रब की बुरहान न देख लेता, ऐसा हुआ, ताकि हम उससे बदी और बेहयाई को दूर कर दें, दरहक़ीक़त वह हमारे चुने हुए बन्दों में से था। आख़िरकार यूसुफ़ और वह आगे-पीछे दरवाज़े की तरफ़ भागे और उसने पीछे से यूसुफ़ का कमीस (खींचकर) फाड़ दिया। दरवाज़े पर दोनों ने उसके शौहर को मौजूद पाया। उसे देखते ही औरत कहने लगी, ''क्या सजा है उस शख़्स की जो तेरी घरवाली पर नीयत ख़राब करे? इसके सिवा और क्या सजा हो सकती है कि वह क़ैद किया जाए या उसे सख़्त अज़ाब दिया जाए? यूसुफ़ ने कहा, ''यही मुझे फाँसने की कोशिश कर रही थी।'' उस औरत के अपने कुंबेवालों में से एक शख़्स ने (क़रीने की) शहादत पेश की कि ''अगर यूसुफ़ का कमीस आगे से फटा हो तो औरत सच्ची है और यह झूटा, और अगर इसका कमीस पीछे से फटा है तो औरत झूटी है और यह सच्चा।'' जब शौहर ने देखा कि यूसुफ़ का कमीस पीछे से फटा है तो उसने कहा,

‘‘यह तुम औरतों की चालाकियाँ हैं, वाकई बड़े ग़ज़ब की होती हैं तुम्हारी चालें। यूसुफ, इस मामले से दरगुज़र कर। और ऐ औरत, तू अपने कुसूर की माफ़ी माँग, तू ही अस्ल में ख़ताकार थी।’’

रुकू–196 (12 यूसुफ़ : 30–35)

وَ قَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٠ فَلَمَّا سَمِعَتْ
بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَ اَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّ اٰتَتْ كُلَّ
وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ قَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ
وَ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا
مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝٣١ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ وَ لَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ
عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَ لَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَ لَيَكُوْنًا
مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝٣٢ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ ۚ
وَ اِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَ اَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝٣٣
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝٣٤ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى
حِيْنٍ ۝٣٥ ع

शहर की औरतें आपस में चर्चा करने लगीं कि ‘‘अज़ीज़ की बीवी

अपने नौजवान ग़ुलाम के पीछे पड़ी हुई है, मुहब्बत ने उसको बेक़ाबू कर रखा है, हमारे नज़दीक तो वह सरीह ग़लती कर रही है।'' उसने जो उनकी ये मक्काराना बातें सुनीं तो उनको बुलावा भेज दिया और उनके लिए तकियादार मजलिस आरास्ता की और ज़ियाफ़त में हर एक के आगे एक-एक छुरी रख दी, (फिर ऐन उस वक़्त जबकि वे फल काट-काटकर खा रही थीं) उसने यूसुफ़ को इशारा किया कि उनके सामने निकल आ। जब उन औरतों की निगाह उसपर पड़ी तो वे दंग रह गई और अपने हाथ काट बैठीं और बेसाख़्ता पुकार उठीं, ''हाशा लिल्लाह, यह शख़्स इनसान नहीं है, यह तो कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है।'' अज़ीज़ की बीवी ने कहा, ''देख लिया, यह है वह शख़्स जिसके मामले में तुम मुझपर बातें बनाती थीं। बेशक मैंने इसे रिझाने की कोशिश की थी मगर यह बच निकला, अगर यह मेरा कहना न मानेगा तो क़ैद किया जाएगा और बहुत ज़लील व ख़ार होगा।'' यूसुफ़ ने कहा, ''ऐ मेरे रब! क़ैद मुझे मंज़ूर है, बनिस्बत इसके कि मैं वह काम करूँ जो ये लोग मुझसे चाहते हैं। और अगर तूने इनकी चालों को मुझसे दफ़ा न किया तो मैं इनके दाम में फँस जाऊँगा और जाहिलों में शामिल हो रहूँगा''- उसके रब ने उसकी दुआ क़बूल की और उन औरतों की चालें उससे दफ़ा कर दीं, बेशक वही है जो सबकी सुनता और सब कुछ जानता है। फिर उन लोगों को यह सूझी कि एक मुद्दत के लिए उसे क़ैद कर दें हालाँकि वे (उसकी पाकदमानी और ख़ुद अपनी औरतों के बुरे अतवार की) सरीह निशानियाँ देख चुके थे।

وَ دَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَیٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّیْۤ اَرٰىنِیْۤ اَعْصِرُ
خَمْرًا ۚ وَ قَالَ الْاٰخَرُ اِنِّیْۤ اَرٰىنِیْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِیْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّیْرُ
مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِیْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ لَا یَاْتِیْكُمَا
طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖۤ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِیْلِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّاْتِیَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا
عَلَّمَنِیْ رَبِّیْ ؕ اِنِّیْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ اتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ
یَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ
اللّٰهِ عَلَیْنَا وَ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۸﴾
یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۳۹﴾ؕ
مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ
اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا
اِلَّاۤ اِیَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾
یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا فَیَسْقِیْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَ اَمَّا الْاٰخَرُ
فَیُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّیْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِیَ الْاَمْرُ الَّذِیْ فِیْهِ
تَسْتَفْتِیٰنِ ﴿۴۱﴾ؕ وَ قَالَ لِلَّذِیْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِیْ عِنْدَ رَبِّكَ٘
فَاَنْسٰىهُ الشَّیْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِی السِّجْنِ بِضْعَ سِنِیْنَ ﴿۴۲﴾ؕ

क़ैदख़ाने में दो गुलाम और भी उसके साथ दाख़िल हुए। एक रोज़ उनमें से एक ने कहा, ''मैंने ख़ाब देखा है कि मैं शराब कशीद कर रहा हूँ। दूसरे ने कहा, ''मैंने देखा कि मेरे सर पर रोटियाँ रखी हैं और परिन्दे उनको खा रहे हैं।'' दोनों ने कहा, ''हमें इसकी ताबीर बताइए, हम देखते हैं कि आप एक नेक आदमी हैं।'' यूसुफ़ ने कहा, ''यहाँ जो खाना तुम्हें मिला करता है उसके आने से पहले मैं तुम्हें इन ख़ाबों की ताबीर बता दूँगा। यह उन उलूम में से है जो मेरे रब ने मुझे अता किए हैं। वाक़िआ यह है कि मैंने उन लोगों का तरीक़ा छोड़कर जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और आख़िरत का इनकार करते हैं, अपने बुज़ुर्गों, इबराहीम, इसहाक़ और याक़ूब का तरीक़ा इख़्तियार किया है। हमारा यह काम नहीं है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक़ ठहराएँ। दरहक़ीक़त यह अल्लाह का फ़ज़्ल है हमपर और तमाम इनसानों पर (कि उसने अपने सिवा किसी का बन्दा हमें नहीं बनाया), मगर अकसर लोग शुक्र नहीं करते। ऐ ज़िन्दां के साथियो, तुम ख़ुद ही सोचो कि बहुत-से मुतफ़र्रिक़ रब बेहतर हैं या वह एक अल्लाह जो सबपर ग़ालिब है? उसको छोड़कर तुम जिनकी बन्दगी कर रहे हो वे इसके सिवा कुछ नहीं है कि बस चन्द नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे आबा व अजदाद ने रख लिए हैं, अल्लाह ने उसके लिए कोई सनद नाज़िल नहीं की। फ़रमाँरवाई का इक़तिदार अल्लाह के सिवा किसी के लिए नहीं है। उसका हुक्म है कि ख़ुद उसके सिवा तुम किसी की बन्दगी न करो। यही ठेठ सीधा

तरीकए-ज़िन्दगी है, मगर अकसर लोग जानते नहीं हैं। ऐ ज़िन्दां के साथियो, तुम्हारे ख़ाब की ताबीर यह है कि तुममें से एक तो अपने रब (शाहे-मिस्र) को शराब पिलाएगा, रहा दूसरा तो उसे सूली पर चढ़ाया जाएगा और परिन्दे उसका सर नोच-नोचकर खाएँगे। फ़ैसला हो गया उस बात का जो तुम पूछ रहे थे।'' फिर उनमें से जिसके मुताल्लिक़ ख़याल था कि वह रिहा हो जाएगा उससे यूसुफ़ ने कहा कि ''अपने रब (शाहे-मिस्र) से मेरा ज़िक्र करना।'' मगर शैतान ने उसे ऐसा गफ़लत में डाला कि वह अपने रब (शाहे-मिस्र) से उसका ज़िक्र करना भूल गया और यूसुफ़ कई साल क़ैदख़ाने में पड़ा रहा।

रुकू–198 (12 यूसुफ़ : 43–49)

وَ قَالَ الْمَلِكُ اِنِّیْٓ اَرٰی سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّ
سَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ اُخَرَ یٰبِسٰتٍ ؕ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِیْ فِیْ
رُءْیَایَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْیَا تَعْبُرُوْنَ ۝٤٣ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَ
مَا نَحْنُ بِتَاْوِیْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِیْنَ ۝٤٤ وَ قَالَ الَّذِیْ نَجَا مِنْهُمَا وَ
ادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِیْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ۝٤٥ یُوْسُفُ اَیُّهَا
الصِّدِّیْقُ اَفْتِنَا فِیْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّ
سَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ اُخَرَ یٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّیْۤ اَرْجِعُ اِلَی النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
یَعْلَمُوْنَ ۝٤٦ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِیْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ

فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ
شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ
يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

एक रोज़ बादशाह ने कहा, ''मैंने ख़ाब में देखा है कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं, और अनाज की सात बालें हरी हैं और दूसरी सात सूखी। ऐ अहले-दरबार! मुझे इस ख़ाब की ताबीर बताओ अगर तुम ख़ाबों का मतलब समझते हो।'' लोगों ने कहा, ''यह तो परेशान ख़ाबों की बातों हैं और हम इस तरह के ख़ाबों का मतलब नहीं जानते।'' उन दो कैदियों में से जो शख़्स बच गया था और उसे एक मुद्दत-दराज़ के बाद अब बात याद आई, उसने कहा, ''मैं आप हजरात को इसकी तावील बताता हूँ, मुझे ज़रा (क़ैदख़ाने में यूसुफ़ के पास) भेज दीजिए।'' उसने जाकर कहा, ''यूसुफ़, ऐ सरापा रास्ती, मुझे इस ख़ाब का मतलब बता कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालें हरी हैं और सात सुखी, शायद कि मैं उन लोगों के पास वापस जाऊँ और शायद कि वे जान लें।'' यूसुफ़ ने कहा, ''सात बरस तक लगातार तुम खेती-बाड़ी करते रहोगे। उस दौरान में जो फ़सलें तुम काटे उनमें से बस थोड़ा-सा हिस्सा, जो तुम्हारी ख़ुराक़ के काम आए, निकालो और बाकी को उसकी बालों ही में रहने दो। फिर सात बरस बहुत सख़्त आएँगे। उस जमाने में वह

सब गल्ला खा लिया जाएगा जो तुम उस वक़्त के लिए जमा करोगे। अगर कुछ बचेगा तो बस वही जो तुमने महफ़ूज़ कर रखा हो। इसके बाद फिर एक साल ऐसा आएगा जिसमें बाराने-रहमत से लोगों की फ़रियादरसी की जाएगी और वे रस निचोड़ेंगे।''

रुकू–199 (12 यूसुफ़ : 50–57)

وَ قَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ
فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ
عَلِيْمٌ ۝۵۰ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ
حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ
حَصْحَصَ الْحَقُّ ٝ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۵۱
ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ
الْخَآئِنِيْنَ ۝۵۲
وَ مَآ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ
رَبِّيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵۳ وَ قَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ
لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ۝۵۴
قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ۝۵۵ وَ كَذٰلِكَ
مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ
بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَ لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۵۶ وَ لَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ

बादशाह ने कहा, ''उसे मेरे पास लाओ।'' मगर जब शाही फ़िरिस्तादा यूसुफ़ के पास पहुँचा तो उसने कहा, ''अपने रब के पास वापस जा और उससे पुछा कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे? मेरा रब तो उनकी मक्कारी से वाक़िफ़ ही है।'' इसपर बादशाह ने उन औरतों से दरयाफ़्त किया, ''तुम्हारा क्या तजरिबा है उस वक़्त का जब तुमने यूसुफ़ को रिझाने की कोशिश की थी?'' सबने यक ज़बान होकर कहा, ''हाशा लिल्लाह, हमने तो उसमें बदी का शाइबा तक न पाया।'' अज़ीज़ की बीवी बोल उठी, ''अब हक़ खुल चुका है, वह मैं ही थी जिसने उसको फुसलाने की कोशिश की थी, बेशक वह बिल्कुल सच्चा है।'' (यूसुफ़ ने कहा) ''इससे मेरी गरज़ यह थी कि (अज़ीज़) यह जान ले कि मैंने दरपरदा उसकी ख़ियानत नहीं की थी, और यह कि जो ख़ियानत करते हैं उनकी चालों को अल्लाह कामयाबी की राह पर नहीं लगाता। मैं कुछ अपने नफ़्स की बराअत नहीं कर रहा हूँ, नफ़्स तो बदी पर उकसाता ही है अल्ला यह कि किसी पर मेरे रब की रहमत हो, बेशक मेरा रब बड़ा ग़फ़ुरुर्रहीम है।'' बादशाह ने कहा, ''उन्हें मेरे पास लाओ ताकि मैं उनको अपने लिए मख़सूस कर लूँ।'' जब यूसुफ़ ने उससे गुफ़्तगू की तो उसने कहा, ''अब आप हमारे हाँ क़द्र व मंज़िलत रखते हैं और आपकी अमानत पर पूरा भरोसा है।'' यूसुफ़ ने कहा, ''मुल्क

के ख़ज़ाने मेरे सुपुर्द कीजिए, मैं हिफ़ाज़त करने वाला भी हूँ और इल्म भी रखता हूँ।'' इस तरह हमने उस सरज़मीन में यूसुफ़ के लिए इक्तिदार की राह हमवार की। वह मुख़्तार था कि उसमें जहाँ चाहे अपनी जगह बनाए, हम अपनी रहमत से जिसको चाहते हैं नवाज़ते हैं, नेक लोगों का अज्र हमारे हाँ मारा नहीं जाता, और आख़िरत का अज्र उन लोगों के लिए ज़्यादा बेहतर है जो ईमान ले आए और ख़ुदातरसी के साथ काम करते रहे।

रुकू–200 (12 यूसुफ़ : 58–68)

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝٥٨
وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِیْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا
تَرَوْنَ اَنِّیْۤ اُوْفِی الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝٥٩ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِیْ بِهٖ
فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِیْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ۝٦٠ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَ
اِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ۝٦١ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِیْ رِحَالِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَاۤ اِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٦٢
فَلَمَّا رَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَاۤ
اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝٦٣ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَاۤ
اَمِنْتُكُمْ عَلٰۤى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ
الرّٰحِمِيْنَ ۝٦٤ وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ

اِلَيۡهِمۡ ؕ قَالُوۡا يٰۤاَبَانَا مَا نَبۡغِىۡ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتۡ اِلَيۡنَا ۚ وَ
نَمِيۡرُ اَهۡلَنَا وَ نَحۡفَظُ اَخَانَا وَ نَزۡدَادُ كَيۡلَ بَعِيۡرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيۡلٌ
يَّسِيۡرٌ ﴿۶۵﴾ قَالَ لَنۡ اُرۡسِلَهٗ مَعَكُمۡ حَتّٰى تُؤۡتُوۡنِ مَوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ
لَتَاۡتُنَّنِىۡ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ يُّحَاطَ بِكُمۡ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوۡهُ مَوۡثِقَهُمۡ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى
مَا نَقُوۡلُ وَكِيۡلٌ ﴿۶۶﴾ وَ قَالَ يٰبَنِىَّ لَا تَدۡخُلُوۡا مِنۡۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّ
ادۡخُلُوۡا مِنۡ اَبۡوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغۡنِىۡ عَنۡكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ ؕ
اِنِ الۡحُكۡمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ ۚ وَ عَلَيۡهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ
الۡمُتَوَكِّلُوۡنَ ﴿۶۷﴾ وَ لَمَّا دَخَلُوۡا مِنۡ حَيۡثُ اَمَرَهُمۡ اَبُوۡهُمۡ ؕ مَا كَانَ
يُغۡنِىۡ عَنۡهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ اِلَّا حَاجَةً فِىۡ نَفۡسِ يَعۡقُوۡبَ
قَضٰٮهَا ؕ وَ اِنَّهٗ لَذُوۡ عِلۡمٍ لِّمَا عَلَّمۡنٰهُ وَ لٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا
يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶۸﴾ ع

यूसुफ़ के भाई मिस्र आए और उसके हाँ हाज़िर हुए। उसने उन्हें पहचान लिया मगर वे उससे नाआशन थे। फिर जब उसने उनका सामान तैयार करवा दिया तो चलते वक़्त उनसे कहा, ‘‘अपने सौतेले भाई को मेरे पास लाना। देखते नहीं हो कि मैं किस तरह पैमाना भरकर देता हूँ और कैसा अच्छा मेहमाननवाज़ हूँ। अगर तुम उसे न लाओगे तो मेरे पास तुम्हारे लिए कोई गल्ला नहीं है, बल्कि तुम मेरे क़रीब भी न फटकना।’’ उन्होंने कहा, ‘‘हम

कोशिश करेंगे कि वालिद साहब उसे भेजने पर राज़ी हो जाएँ, और हम ऐसा ज़रूर करेंगे।'' यूसुफ़ ने अपने गुलामों को इशारा किया कि ''इन लोगों ने गल्ले के एवज़ जो माल दिया है वह चुपके से इनके सामान ही में रख दो।'' यह यूसुफ़ ने इस उम्मीद पर किया कि घर पहुँचकर वे अपना वापस पाया हुआ माल पहचान जाएँगे (या इस फ़ैयाज़ी पर एहसानमन्द होंगे) और अजब नहीं कि फिर पलटें। जब वे अपने बाप क पास गए तो कहा, ''अब्बा जान, आइन्दा हमको गल्ला देने से इनकार कर दिया गया है, लिहाज़ा आप हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम गल्ला लेकर आएँ। और उसकी हिफ़ाज़त के हम ज़िम्मेदार हैं।'' बाप ने जवाब दिया, ''क्या मैं उसके मामले में तुमपर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा इससे पहले उसके भाई के मामले में कर चुका हूँ? अल्लाह ही बेहतर मुहाफ़िज़ है और वह सबसे बढ़कर रहम फ़रमाने वाला है।'' फिर जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनका माल भी उन्हें वापस कर दिया गया है। यह देखकर वे पुकार उठे, ''अब्बा जान, और हमें क्या चाहिए, देखिये यह हमारा माल भी हमें वापस दे दिया गया है। पस, अब हम जाएँगे और अपने अहलो-अयाल के लिए रसद लेकर आएँगे, अपने भाई की हिफ़ाज़त भी करेंगे और एक बारे-शुतुर और ज़्यादा भी लाएँगे, इतने गल्ले का इज़ाफ़ा आसानी के साथ हो जाएगा।'' उनके बाप ने कहा, ''मैं उसको हरगिज़ तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक कि तुम अल्लाह के नाम से मुझको पैमान न दे दो कि उसे मेरे पास

ज़रूर वापस लेकर आओगे, इल्ला यह कि तुम घेर ही लिए जाओ।'' जब उन्होंने उसको अपने-अपने पैमान दे दिए तो उसने कहा, ''देखो, हमारे इस कौल पर अल्लाह निगहबाग है।'' फिर उसने कहा, ''मेरे बच्चो, मिस्र के दारुस-सल्तनत में एक दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से जाना। मगर मैं अल्लाह की मशीयत से तुमको नहीं बचा सकता, हुक्म उसके सिवा किसी का भी नहीं चलता, उसी पर मैंने भरोसा किया है और जिसको भी भरोसा करना हो उसी पर करे।'' और वाक़िआ भी यही हुआ कि जब वे अपने बाप की हिदायत के मुताबिक़ शहर में (मुतफ़र्रिक़ दरवाज़ों से) दाख़िल हुआ तो उसकी यह एहतियाती तदबीर अल्लाह की मशीयत के मुक़ाबले में कुछ भी काम न आ सकी। हाँ, बस याक़ूब के दिल में जो एक खटक थी उसे दूर करने के लिए उसने अपनी-सी कोशिश कर ली। बेशक वह हमारी दी हुई तालीम से साहिबे-इल्म था मगर अकसर लोग मामले की हक़ीक़त को जानते नहीं हैं।

रुकू-201 (12 यूसुफ़ : 69-79)

وَ لَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا
تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ
السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ
لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَ اَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّا ذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ

صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّ اَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿۷۲﴾ قَالُوْا
تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿۷۳﴾
قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿۷۴﴾ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ
رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ
قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا
لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ
نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿۷۶﴾ قَالُوْۤا اِنْ
يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَ
لَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
تَصِفُوْنَ ﴿۷۷﴾ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ
اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۷۸﴾ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ
نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿۷۹﴾ ع

ये लोग यूसुफ़ के हुज़ूर पहुँचे तो उसने अपने भाई को अपने पास अलग बुला लिया और उसे बता दिया कि ''मैं तेरा वही भाई हूँ (जो खोया गया था), अब तू उन बातों का ग़म न कर जो ये लोग करते रहे हैं।'' जब यूसुफ़ उन भाइयों का सामान लदवाने लगा तो उसने अपने भाई के सामान में अपना प्याला रख दिया। फिर एक

पुकारने वाले ने पुकार कर कहा, ‘‘ऐ काफ़िले वालो, तुम लोग चोर हो।’’ उन्होंने पलटकर पुछा, ‘‘तुम्हारी क्या चीज़ खोई गई?’’ सरकारी मुलाज़िमों ने कहा, ‘‘बादशाह का पैमाना हमको नहीं मिलता।’’ (और उनके जमादार ने कहा) ‘‘जो शख़्स लाकर देगा उसके लिए एक-बारे-शुतुर इनाम है, इसका मैं ज़िम्मा लेता हूँ।’’ उन भाइयों ने कहा, ‘‘खुदा की क़सम, तुम लोग खूब जानते हो कि हम इस मुल्क में फ़साद करने नहीं आए हैं और हम चोरियाँ करने वाले लोग नहीं हैं।’’ उन्होंने कहा, ‘‘अच्छा, अगर तुम्हारी बात झूटी निकली तो चोरी की क्या सज़ा है?’’ उन्होंने कहा, ‘‘इसकी सज़ा? जिसके सामान में से चीज़ निकले वह आप ही अपनी सज़ा में रख लिया जाए, हमारे यहाँ तो ऐसे ज़ालिमों को सज़ा देने का यही तरीक़ा है।’’ तब यूसुफ़ ने अपने भाई से पहले उनकी खुरजियों की तलाशी लेनी शुरू की, फिर अपने भाई की खुरजी से गुमशुदा चीज़ बरामद कर ली- इस तरह हमने यूसुफ़ की ताईद अपनी तदबीर से की। उसका यह काम न था कि बादशाह के दीन (यानी मिस्र के शाही कानून) में अपने भाई को पकड़ता इल्ला यह कि अल्लाह ही ऐसा चाहे। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बलंद कर लेते हैं, और एक इल्म रखने वाला ऐसा है जो साहिबे-इल्म से बालातर है। उन भाइयों ने कहा, ‘‘यह चोरी करे तो कुछ ताज्जुब की बात भी नहीं, इससे पहले इसका भाई (यूसुफ़) भी चोरी कर चुका है।’’ यूसुफ़ उनकी यह बात सुनकर पी गया, हक़ीक़त उनपर न खोली, बस (ज़ेरे-लब) इतना कहकर

रह गया कि ''बड़े ही बुरे हो तुम लोग, (मेरे मुँह-दर-मुँह मुझपर ही) जो इलज़ाम तुम लोग लगा रहे हो उसकी हक़ीक़त ख़ुदा खूब जानता है।'' उन्होंने कहा, ''ऐ सरदारे-जी इक़्तिदार (अज़ीज़), इसका बाप बहुत बूढ़ा आदमी है, इसकी जगह आप हममें से किसी को रख लीजिए, हम आपको बड़ा ही नेक नफ़्स इनसान पाते हैं। यूसुफ ने कहा, ''पनाह बख़ुदा, दूसरे किसी शख़्स को हम कैसे रख सकते हैं? जिसके पास हमने अपना माल पाया है उसको छोड़कर दूसरे को रखेंगे तो हम ज़ालिम होंगे।''

रुकू–202 (12 यूसुफ़ : 80–93)

فَلَمَّا اسْتَيْــَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا
اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَ مِنْ قَبْلُ مَا
فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ
يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَ هُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا
يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَ مَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَ مَا كُنَّا
لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَ سْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَ الْعِيْرَ الَّتِيْۤ
اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ
اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَ تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَ
ابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا

تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿۸۵﴾ قَالَ
اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَ حُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾
يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَ اَخِيْهِ وَ لَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ
رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾
فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَ اَهْلَنَا الضُّرُّ وَ جِئْنَا
بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿۸۸﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَ
اَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿۸۹﴾ قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا
يُوْسُفُ وَ هٰذَآ اَخِيْ ٞ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَ يَصْبِرْ
فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ
عَلَيْنَا وَ اِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۱﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ
اللّٰهُ لَكُمْ ٞ وَ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ
عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَ اْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۳﴾ ع

जब वे यूसुफ़ से मायूस हो गए तो एक गोशे में जाकर आपस में मशविरा करने लगे। उनमें जो सबसे बड़ा था वह बोला, ‘‘तुम जानते नहीं हो कि तुम्हारे वालिद तुमसे ख़ुदा के नाम पर अहद व पैमान ले चुके हैं? और इससे पहले यूसुफ़ के मामले में जो तुम

कर चुके हो वह भी तुमको मालूम है। अब मैं तो यहाँ से हरगिज़ न जाऊँगा जब तक कि मेरे वालिद मुझे इजाज़त न दें, या फिर अल्लाह ही मेरे हक में कोई फ़ैसला फ़रमा दे कि वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है। तुम जाकर अपने वालिद से कहो कि अब्बा जान, आपको साहिबज़ादे ने चोरी की है। हमने उसे चोरी करते हुए नहीं देखा। जो कुछ हमें मालूम हुआ है बस वही बयान कर रहे हैं, और ग़ैब की निगहबानी तो हम न कर सकते थे। आप उस बस्ती के लोगों से पूछ लीजिए जहाँ हम थे। उस क़ाफ़िले से दरयाफ़्त कर लीजिए जिसके साथ हम आए हैं। हम अपने बयान में बिलकुल सच्चे है।'' बाप ने यह दास्तान सुनकर कहा, ''दरअस्ल तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हारे लिए एक और बड़ी बात को सहल बना दिया। अच्छा इसपर भी सब्र करूँगा और बख़ूबी करूँगा। क्या बईद कि अल्लाह उन सबको मुझसे ला मिलाए, वह सब कुछ जानता है और उसके सब काम हिकमत पर मब्नी हैं।'' फिर वह उनकी तरफ़ से मुँह फेरकर बैठ गया और कहने लगा कि ''हाय यूसुफ़!''- वह दिल ही दिल में ग़म से घुटा जा रहा था और उसकी आँखें सफ़ेद पड़ गई थीं- बेटों ने कहा, ''ख़ुदा रा! आप तो बस यूसुफ़ ही को याद किए जाते हैं। नौबत यह आ गई कि उसके ग़म में अपने आपको घुला देंगे या अपनी जान हलाक़ कर डालेंगे।'' उसने कहा, ''मैं अपनी परेशानी और अपने ग़म की फ़रियाद अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता, और अल्लाह से जैसा मैं वाक़िफ़ हूँ तुम नहीं हो। मेरे बच्चे, जाकर यूसुफ़ और

उसके भाई की कुछ टोह लगाओ, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, उसकी रहमत से तो बस काफ़िर ही मायूस हुआ करते हैं।'' जब ये लोग मिस्र जाकर यूसुफ़ की पेशी में दाख़िल हुए तो उन्होंने अर्ज़ किया कि ''ऐ सरदारे-बाइक़्तिदार, हम और हमारे अहलो-अयाल सख़्त मुसीबत में मुब्तला हैं, और हम कुछ हकीर-सी पूँजी लेकर आए हैं, आप हमें भरपूर ग़ल्ला इनायत फ़रमाएँ और हमको ख़ैरात दें, अल्लाह ख़ैरात देने वालों को जज़ा देता है।'' (यह सुनकर यूसुफ़ से न रहा गया) उसने कहा, ''तुम्हें कुछ यह भी मालूम है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था जबकि तुम नादान थे?'' वे चौंककर बोले, ''हाएँ! क्या तुम यूसुफ हो?'' उसने कहा, ''हाँ मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हमपर एहसान फ़रमाया। हक़ीक़त यह है कि अगर कोई तक़्वा और सब्र से काम ले तो अल्लाह के हाँ ऐसे नेक लोगों का अज्र मारा नहीं जाता।'' उन्होंने कहा, ''बख़ुदा कि तुमको अल्लाह ने हमपर फ़ज़ीलत बख़्शी और वाक़ई हम ख़ताकार थे।'' उसने जवाब दिया, ''आज तुमपर कोई गिरिफ़्त नहीं, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, वह सबसे बढ़कर रहम फ़रमाने वाला है। जाओ, मेरा यह कमीस ले जाओ और मेरे वालिद के मुहँ पर डाल दो, उनकी बीनाई पलट आएगी, और अपने सब अहलो-अयाल को मेरे पास ले आओ ।"

रुकू–203 (12 यूसुफ़ : 94–104)

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ

تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۴﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِیْ ضَلٰلِكَ الْقَدِیْمِ ﴿۹۵﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ
الْبَشِیْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِیْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚۙ
اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوْا یٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕیْنَ ﴿۹۷﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۹۸﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى یُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَیْهِ اَبَوَیْهِ وَ قَالَ
ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِیْنَ ﴿۹۹﴾ؕ وَ رَفَعَ اَبَوَیْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَ
خَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ قَالَ یٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِیْلُ رُءْیَایَ مِنْ قَبْلُ ٘ قَدْ
جَعَلَهَا رَبِّیْ حَقًّا ؕ وَ قَدْ اَحْسَنَ بِیْۤ اِذْ اَخْرَجَنِیْ مِنَ السِّجْنِ وَ جَآءَ
بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّیْطٰنُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ اِخْوَتِیْ ؕ
اِنَّ رَبِّیْ لَطِیْفٌ لِّمَا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۱۰۰﴾ رَبِّ قَدْ
اٰتَیْتَنِیْ مِنَ الْمُلْكِ وَ عَلَّمْتَنِیْ مِنْ تَاْوِیْلِ الْاَحَادِیْثِ ۚ فَاطِرَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِیّٖ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا
وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهِ اِلَیْكَ ۚ وَ
مَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْۤا اَمْرَهُمْ وَ هُمْ یَمْكُرُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَ مَاۤ اَكْثَرُ
النَّاسِ وَ لَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَ مَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰۴﴾ ع

जब यह काफ़िला (मिस्र से) रवाना हुआ तो उनके बाप ने (कनआन में) कहा, ''मैं यूसुफ़ की ख़ुशबू महसूस कर रहा हूँ, तुम लोग कहीं यह न कहने लगो कि मैं बुढ़ापे में सठिया गया हूँ।'' घर के लोग बोले, ''ख़ुदा की क़सम, आप अभी तक अपने उसी पुराने ख़ब्त में पड़े हुए हैं।'' फिर जब ख़ुशख़बरी लाने वाला आया तो उसने यूसुफ़ का कमीस याक़ूब के मुहँ पर डाल दिया और यकायक उसकी बिनाई औद कर आई। तब उसने कहा, ''मैं तुमसे कहता न था? मैं अल्लाह की तरफ़ से वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।'' सब बोल उठे, ''अब्बा जान, आप हमारे गुनाहों की बख़शिश के लिए दुआ करें, वाक़ई हम ख़ताकार थे।'' उसने कहा, ''मैं अपने रब से तुम्हारे लिए माफ़ी की दरख़ास्त करूँगा, वह बड़ा माफ़ करने वाला और रहीम है।'' फिर जब ये लोग यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने वालिदैन को अपने साथ बिठा लिया और (अपने सब कुंबे वालों से) कहा, ''चलो अब शहर में चलो, अल्लाह ने चाहा तो अमन-चैन से रहोगे।'' (शहर में दाख़िल होने के बाद) उसने अपने वालिदैन को उठाकर अपने पास तख़्त पर बिठाया और सब उसके आगे बेइख़्तियार सज्दे में झुक गए। यूसुफ़ ने कहा, ''अब्बा जान, यह ताबीर है मेरे उस ख़ाब की जो मैंने पहले देखा था। मेरे रब ने उसे हक़ीक़त बना दिया। उसका एहसान है कि उसने मुझे क़ैदख़ाने से निकाला, और आप लोगों को सहरा से लाकर मुझसे मिलाया, हालाँकि शैतान मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फ़साद डाल चुका था। वाक़िआ यह है कि

मेरा रब ग़ैर-महसूस तदबीरों से अपनी मशीयत पूरी करता है, बेशक वह अलीम और हकीम है। ऐ मेरे रब, तूने मुझे हुकूमत बख़्शी और मुझको बातों की तह तक पहुँचना सिखाया। ज़मीन व आसमान के बनाने वाले, तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा सरपरस्त है, मेरा ख़ात्मा इस्लाम पर कर और अंजामेकार मुझे सालिहीन के साथ मिला।'' ऐ नबी, यह क़िस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुमपर वहय कर रहे हैं, वरना तुम उस वक़्त मौजूद न थे जब यूसुफ़ के भाइयों ने आपस में इत्तिफ़ाक़ करके साज़िश की थी। मगर तुम ख़ाह कितना ही चाहो इनमें से अकसर लोग मानकर देने वाले नहीं हैं। हालाँकि तुम इस ख़िदमत पर उनसे कोई उजरत भी नहीं माँगते हो। यह तो एक नसीहत है जो दुनिया वालों के लिए आम है।

रुकू–204 (12 यूसुफ़ : 105–111)

وَ كَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَ هُمْ عَنْهَا
مُعْرِضُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَ مَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَ هُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿۱۰۶﴾
اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ
بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى
بَصِيْرَةٍ اَنَا وَ مَنِ اتَّبَعَنِيْ وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ مَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۸﴾
وَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ

قَبْلِهِمْ ؕ وَ لَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۹﴾
حَتّٰۤى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَ ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ
نَصْرُنَا فَنُجِّىَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَ لَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۰﴾
لَقَدْ كَانَ فِىْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيْثًا
يُّفْتَرٰى وَ لٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ تَفْصِيْلَ كُلِّ شَىْءٍ
وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ع

ज़मीन और आसमानों में कितनी ही निशानियाँ हैं जिनपर से ये लोग गुज़रते रहते हैं और जरा तवज्जुह नहीं करते। इनमें से अकसर अल्लाह को मानते हैं मगर इस तरह कि उसके साथ दूसरों को शरीक ठहराते हैं। क्या ये मुत्मइन हैं कि ख़ुदा के अज़ाब की कोई बाला इन्हें दबोच न लेगी या बेख़बरी में क़ियामत की घड़ी अचानक इनपर न आ जाएगी? तुम इनसे साफ़ कह दो कि ‘‘मेरा रास्ता तो यह है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, मैं खुद भी पूरी रौशनी में अपना रास्ता देख रहा हूँ और मेरे साथी भी, और अल्लाह पाक है और शिर्क करने वालों से मेरा कोई वास्ता नहीं।’’ ऐ नबी, तुमसे पहले हमने जो पैग़म्बर भेजे थे वे सब भी इनसान ही थे और इन्हीं बस्तियों के रहने वालों में से थे, और उन्हीं की तरफ़ हम वहय भेजते रहे हैं। फिर क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं हैं कि उन क़ौमों का अंजाम इन्हें नजर न आया जो इनसे पहले गुज़र चुकी हैं? यक़ीनन आख़िरत का घर

उन लोगों के लिए और ज़्यादा बेहतर है जिन्होंने (पैग़म्बरों की बात मानकर) तक़्वा की रविश इख़्तियार की। क्या अब भी तुम लोग न समझोगे? (पहले पैग़म्बरों के साथ भी यही होता रहा है कि वे मुद्दतों नसीहत करते रहे और लोगों ने सुनकर न दिया) यहाँ तक कि जब पैग़म्बर लोगों से मायूस हो गए और लोगों ने भी समझ लिया कि उनसे झूठ बोला गया था, तो यकायक हमारी मदद पैग़म्बरों को पहुँच गई। फिर जब ऐसा मौक़ा आ जाता है तो हमारा क़ायदा यह है कि जिसे हम चाहते हैं बचा लेते हैं और मुजरिमों पर से तो हमारा अज़ाब टाला ही नहीं जा सकता। अगले लोगों के इन किस्सों में अक़्ल व होश रखने वालों के लिए इबरत है। यह जो कुछ क़ुरआन में बयान किया जा रहा है ये बनावटी बातें नहीं हैं, बल्कि जो किताबें इससे पहले आई हुई हैं उन्हीं की तसदीक़ है और हर चीज़ की तफ़सील और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत।

रुकू–205 (13 राद : 1–7)

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝۱ اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ
عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ
كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ یُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ
بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝۲ وَ هُوَ الَّذِیْ مَدَّ الْاَرْضَ وَ جَعَلَ فِیْهَا

رَوَاسِيَ وَ اَنْهٰرًا ؕ وَ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ
يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ٣ وَ فِي
الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّ جَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّ زَرْعٌ وَّ نَخِيْلٌ
صِنْوَانٌ وَّ غَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۫ وَ نُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى
بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ٤ وَ اِنْ
تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ؕ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ٥ وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ
بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَ اِنَّ
رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ
الْعِقَابِ ٦ وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ
اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ٧ ع

अलिफ़, लाम, मीम, रा। ये किताबे-इलाही की आयात हैं, और जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है वह ऐन हक़ है, मगर (तुम्हारी क़ौम के) अकसर लोग मान नहीं रहे हैं। वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों को ऐसे सहारों के बग़ैर क़ायम किया जो तुमको नज़र आते हों, फिर वह अपने

तख़्ते-सल्तनत पर जलावाफ़रमा हुआ, और उसने आफ़ताब व माहताब को एक क़ानून का पाबन्द बनाया। इस सारे निज़ाम की हर चीज़ एक वक़्ते-मुक़र्रर तक के लिए चल रही है और अल्लाह ही इस सारे काम की तदबीर फ़रमा रहा है। वह निशानियाँ खोल-खोलकर बयान करता है शायद कि तुम अपने रब की मुलाक़ात का यक़ीन करो। और वही है जिसने यह ज़मीन फैला रखी है, इसमें पहाड़ों के खूँटे गाड़ रखे हैं और दरिया बहा दिया हैं। उसी ने हर तरह के फलों के जोड़े पैदा किए हैं और वही दिन पर रात तारी करता है। इन सारी चीज़ों में बड़ी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते हैं। और देखो, ज़मीन में अलग-अलग ख़ित्ते पाए जाते हैं जो एक-दूसरे से मुत्तसिल वाक़े हैं। अंगूर के बाग़ हैं, खेतियाँ हैं, खजूर के दरख़्त हैं जिनमें से कुछ इकहरे हैं कुछ दोहरे। सबको एक ही पानी सैराब करता है, मगर मज़े में हम किसी को बेहतर बना देते हैं और किसी को कमतर। इन सब चीज़ों में बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं। अब अगर तुम्हें ताज्जुब करना है तो ताज्जुब के क़ाबिल लोगों का यह क़ौल है कि ''जब हम मरकर मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा किए जाएँगे?'' ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब से कुफ़्र किया है। ये वे लोग हैं जिनकी गर्दनों में तौक़ पड़े हुए हैं। ये जहन्नमी हैं और जहन्नम में हमेशा रहेंगे। ये लोग भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि इनसे पहले (जो लोग इस रविश पर चले हैं

उनपर ख़ुदा के अज़ाब की) इबरतनाक मिसालें गुज़र चुकी हैं। हक़ीक़त यह है कि तेरा रब लोगों की ज़्यादतियों के बावजूद इनके साथ चश्मपोशी से काम लेते है, और यह भी हक़ीक़त है कि तेरा रब सख़्त सज़ा देने वाला है। ये लोग जिन्होंने तुम्हारी बात मानने से इनकार कर दिया है, कहते हैं कि ''इस शख़्स पर इसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों न उतरी?''- तुम तो महज़ ख़बरदार कर देने वाले हो, और हर क़ौम के लिए एक रहनुमा है।

रुकू–206 (13 राद : 8–18)

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَ
كُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿۸﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ
الْمُتَعَالِ ﴿۹﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ
مُسْتَخْفٍۭ بِالَّيْلِ وَ سَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿۱۰﴾ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ
يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا
بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا
مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿۱۱﴾ هُوَ الَّذِیْ يُرِيْكُمُ
الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ يُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿۱۲﴾ ۚ وَ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ
بِحَمْدِهٖ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَ يُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ
بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِی اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿۱۳﴾ ؕ لَهٗ

دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ
بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَ مَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَ
مَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَ لِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾ السجدة قُلْ مَنْ
رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ
لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَ
الْبَصِيْرُ ۙ۬ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَ النُّوْرُ ۬ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ
خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
وَّ هُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ
بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَ مِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي
النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
الْحَقَّ وَ الْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَ اَمَّا مَا يَنْفَعُ
النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ؕ ﴿۱۷﴾
لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؔؕ وَ الَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ
اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ۬ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ ع

अल्लाह एक-एक हामिला के पेट से वाक़िफ़ है, जो कुछ उसमें बनता है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उसमें कमी या बेशी होती है उससे भी वह बाख़बर रहता है। हर चीज़ के लिए उसके यहाँ एक मिक़दार मुक़र्रर है। वह पोशीदा और ज़ाहिर हर चीज़ का आलिम है। वह बुज़ुर्ग है और हर हाल में बालातर रहने वाला है। तुममें से कोई शख़्स ख़ाह ज़ोर से बात करे या आहिस्ता, और कोई रात की तारीकी में छिपा हो या दिन की रौशनी में चल रहा हो, उसके लिए सब यकसाँ हैं। हर शख़्स के आगे और पीछे उसके मुक़र्रर किए हुए निगाराँ लगे हुए हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देख-भाल कर रहे हैं। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह किसी क़ौम के हाल को नहीं बदलता जब तक कि वह ख़ुद अपने औसाफ़ को नहीं बदल देती। और जब अल्लाह किसी क़ौम की शामत लाने का फ़ैसला कर ले तो फिर वह किसी के टाले नहीं टल सकती, न अल्लाह के मुक़ाबले में ऐसी क़ौम का कोई हामी व मददगार हो सकता है। वही है जो तुम्हारे सामने बिजलियाँ चमकता है जिन्हें देखकर तुम्हें अंदेशे भी लाहिक़ होते हैं और उम्मीदें भी बंधती हैं। वही है जो पानी से लदे हुए बादल उठाता है। बादलों की गरज उसकी हम्द के साथ उसकी पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते उसकी हैबत से लरज़ते हुए उसकी तसबीह करते हैं। वह कड़कती हुई बिजलियों को भेजता है और (बसा-औकात) उन्हें जिसपर चाहता है ऐन उस हालत में गिरा देता है जब कि लोग अल्लाह के बारे में झगड़ रहे होते हैं।

फ़िल-वाके़ उसकी चाल बड़ी ज़बरदस्त है। उसी को पुकारना बरहक़ है। रहीं वे दूसरी हस्तियाँ जिन्हें उसको छोड़कर ये लोग पुकारते हैं, वे उनकी दुआओं का कोई जवाब नहीं दे सकतीं। उन्हें पुकारना तो ऐसा है जैसे कोई शख़्स पानी की तरफ़ हाथ फैलाकर उससे दरख़ास्त करे कि तू मेरे मुँह तक पहुँच जा, हालाँकि पानी उस तक पहुँचाने वाला नहीं। बस इसी तरह काफ़िरों की दुआएँ भी कुछ नहीं हैं मगर एक तीरे-बेहदफ़! वह तो अल्लाह ही है जिसको ज़मीन व आसमान की हर चीज़ तौअन व करहन सजदा कर रही है और सब चीजों के साए सुबह व शाम उसके आगे झुकते हैं। इनसे पूछो, आसमान व ज़मीन का रब कौन है?- कहो, अल्लाह। फिर उनसे कहो कि जब हक़ीक़त यह है तो क्या तुमने उसे छोड़कर ऐसे माबूदों को अपना कारसाज़ ठहरा लिया है जो खुद अपने लिए भी किसी नफ़े व नुक़सान का इख़्तियार नहीं रखते? कहो, क्या अंधा और आँखो वाला बराबर हुआ करता है? क्या रौशनी और तारीकियाँ यकसाँ होती हैं? और अगर ऐसा नहीं तो क्या इनके ठहराए हुए शरीकों ने भी अल्लाह की तरह कुछ पैदा किया है कि उसकी वजह से उनपर तख़्लीक़ का मामला मुश्तबह हो गया?- कहो हर चीज़ का ख़ालिक़ सिर्फ अल्लाह है और वह यकता है, सब पर ग़ालिब! अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया और हर नदी-नाला अपने ज़र्फ़ के मुताबिक़ उसे लेकर चल निकला। फिर जब सैलाब उठा तो सतह पर झाग भी आ गए। और ऐसे ही झाग उन धातों पर भी उठते हैं जिन्हें ज़ेवर

और बरतन वगैरह बनाने के लिए लोग पिघलाया करते हैं। इसी मिसाल से अल्लाह हक़ और बातिल के मामले को वाज़ेह करता है। जो झाग है वह उड़ जाया करता है और जो चीज इनसानों के लिए नाफ़े है वह ज़मीन में ठहर जाती है। इस तरह अल्लाह मिसालों से अपनी बात समझाता है। जिन लोग ने अपने रब की दावत कबूल कर ली उनके लिए भलाई है, जिन्होंने उसे कबूल न किया वे अगर ज़मीन की सारी दौलत के भी मालिक हों और उतनी ही और फ़राहम कर लें तो वह ख़ुदा की पकड़ से बचने के लिए उस सबको फ़िदये में दे डालने पर तैयार हो जाएँगे। ये वे लोग हैं जिनसे बुरी तरह हिसाब लिया जाएगा और उनका ठिकाना जहन्नम है, बहुत ही बुरा ठिकाना।

रुकू–207 (13 राद : 19–26)

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ
اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۙ﴿۱۹﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ لَا
يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۙ﴿۲۰﴾ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ
وَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ يَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ؕ﴿۲۱﴾ وَ الَّذِيْنَ صَبَرُوا
ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ
عَلَانِيَةً وَّ يَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى
الدَّارِ ۙ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَ مَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ

اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ
بَابٍ ۚ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ؕ﴿۲۴﴾ وَ الَّذِيْنَ
يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ
يُّوْصَلَ وَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ
الدَّارِ ﴿۲۵﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ وَ فَرِحُوْا
بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۧ﴿۲۶﴾

भला यह किस तरह मुमकिन है कि वह शख़्स जो तुम्हारे रब की इस किताब को जो उसने तुमपर नाज़िल की है हक़ जानता है और वह शख़्स जो इस हक़ीक़त की तरफ़ से अंधा है, दोनों यकसाँ हो जाएँ? नसीहत तो दानिशमन्द लोग ही कबूल किया करते हैं। और उनका तर्ज़े-अमल यह होता है कि अल्लाह के साथ अपने अहद को पूरा करते हैं, उसे मज़बूत बाँधने के बाद तोड़ नहीं डालते। उनकी रविश यह होती है कि अल्लाह ने जिन-जिन रवाबित को बरक़रार रखने का हुक्म दिया है उन्हें बरक़रार रखते हैं, अपने रब से डरते हैं और इस बात का ख़ौफ़ रखते हैं कि कहीं उनसे बुरी तरह हिसाब न लिया जाए। उनका हाल यह होता है कि अपने रब की रिज़ा के लिए सब्र से काम लेते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, हमारे दिए हुए रिज़्क में से अलानिया और पोशीदा ख़र्च करते हैं, और बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं।

आख़िरत का घर उन्हीं लोगों के लिए है। यानी ऐसे बाग़ जो उनकी अबदी क़ियामगाह होंगे। वे ख़ुद भी उनमें दाख़िल होंगे और उनके आबा व अजदाद और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से जो सालेह हैं वे भी उनके साथ वहाँ जाएँगे। मलाइका हर तरफ़ से उनके इस्तक़बाल के लिए आएँगे और उनसे कहेंगे, ''तुम पर सलामती है, तुमने दुनिया में जिस तरह सब्र से काम लिया उसकी बदौलत आज तुम इसके मुस्तहिक़ हुए हो''- पस क्या ही ख़ूब है यह आख़िरत का घर! रहे वे लोग जो अल्लाह के अहद को मज़बूत बाँध लेने के बाद तोड़ डालते हैं, जो उन राब्तों को काटते हैं जिन्हें अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वे लानत के मुस्तहिक़ हैं और उनके लिए आख़िरत में बहुत बुरा ठिकाना है। अल्लाह जिसको चाहता है रिज़्क की फ़राख़ी बख़्शता है और जिसे चाहता है नपा-तुला रिज़्क देता है। ये लोग दुनयावी ज़िन्दगी में मग्न हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में एक मताए- क़लील के सिवा कुछ भी नहीं।

रुकू–208 (13 राद : 27–31)

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ
يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ﴿٢٧﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
تَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ﴿٢٩﴾

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ
الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ
الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ
جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْــَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى
النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا
قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾

ये लोग जिन्होंने (रिसालते-मुहम्मदी को मानने से) इनकार कर दिया है, कहते हैं, ''इस शख़्स पर इसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों न उतरी''- कहो अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और वह अपनी तरफ़ आने का रास्ता उसी को दिखता है जो उसकी तरफ़ रुजूअ करे। ऐसे ही लोग हैं वे जिन्होंने (उस नबी की दावत को) मान लिया है और उनके दिलों को अल्लाह की याद से इत्मीनान नसीब होता है। ख़बरदार रहो! अल्लाह की याद ही वह चीज़ है जिससे दिलों को इत्मीनान नसीब हुआ करता है। फिर जिन लोगों ने दावते-हक़ को माना और नेक अमल किए वे ख़ुशनसीब हैं और उनके लिए अच्छा अंजाम है। ऐ नबी, इसी शान से हमने तुमको रसूल बनाकर भेजा है एक ऐसी क़ौम में

जिससे पहले बहुत-सी क़ौमें गुज़र चुकी हैं, ताकि तुम इन लोगों को वह पैग़ाम सुनाओ जो हमने तुमपर नाज़िल किया है इस हाल में कि ये अपने निहायत मेहरबान ख़ुदा के काफ़िर बने हुए हैं। इनसे कहो कि वही मेरा रब है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, उसी पर मैंने भरोसा किया और वही मेरा मलजा व मावा है। और क्या हो जाता अगर कोई ऐसा क़ुरआन उतार दिया जाता जिसके ज़ोर से पहाड़ चलने लगते, या ज़मीन शक हो जाती या मुरदे क़ब्रों से निकलकर बोलने लगते? (इस तरह की निशानियाँ देखा देना कुछ मुशकिल नहीं है) बल्कि सारा इख़तियार ही अल्लाह के हाथ में है। फिर क्या अहले-ईमान (अभी तक कुफ़्फ़ार की तलब के जवाब में किसी निशानी के ज़ुहूर की आस लगाए बैठे हैं और वे यह जानकार) मायूस नहीं हो गए कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे इनसानों को हिदायत दे देता? जिन लोगों ने ख़ुदा के साथ कुफ़्र का रवैया इख़्तियार कर रखा है उनपर उनके करतूतों की वजह से कोई न कोई आफ़त आती ही रहती है, या उनके घर के क़रीब कहीं नाज़िल होती है। यह सिलसिला चलता रहेगा यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आन पूरा हो। यक़ीनन अल्लाह अपने वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करता।

रुकू–209 (13 राद : 32–37)

وَ لَقَدِ اسۡتُہۡزِئَ بِرُسُلٍ مِّنۡ قَبۡلِکَ فَاَمۡلَیۡتُ لِلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا ثُمَّ
اَخَذۡتُہُمۡ ۟ فَکَیۡفَ کَانَ عِقَابِ ﴿۳۲﴾ اَفَمَنۡ ہُوَ قَآئِمٌ عَلٰی کُلِّ نَفۡسٍۭ

بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا
لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَ صُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
اَشَقُّ ۚ وَ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ
الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّ ظِلُّهَا ؕ تِلْكَ
عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖۗ وَّ عُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ
بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَ لَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ
اَدْعُوْا وَ اِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَ لَئِنِ
اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ
وَّلِيٍّ وَّ لَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ ع

तुमसे पहले भी बहुत-से रसूलों का मज़ाक उड़ाया जा चुका है, मगर मैंने हमेशा मुनकिरिन को ढील दी और आख़िरकार उनको पकड़ लिया, फिर देख लो कि मेरी सज़ा कैसी सख़्त थी। फिर क्या वह जो एक-एक मुतनफ़्फ़िस की कमाई पर नज़र रखता है (उसके मुक़ाबले में ये जसारतें की जा रही हैं कि) लोगों ने उसके

कुछ शरीक ठहरा रखे हैं? ऐ नबी, इनसे कहो (अगर वाकई वे खुदा के अपने बनाए हुए शरीक हैं तो) जरा उनके नाम लो कि वे कौन हैं?- क्या तुम अल्लाह को एक नई बात की खबर दे रहे हो जिसे वह अपनी ज़मीन में नहीं जानता? या तुम लोग बस यूँ ही जो मुँह में आता है कह डालते हो? हक़ीक़त यह है कि जिन लोगों ने दावते-हक़ को मानने से इनकार किया है उनके लिए उनकी मक्कारियाँ ख़ुशनुमा बना दी गई हैं और वे राहे- रास्त से रोक दिए गए हैं, फिर जिसको अल्लाह गुमराही में फेंक दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं है। ऐसे लोगों के लिए दुनिया की ज़िन्दगी ही में अज़ाब है, और आख़िरत का अज़ाब उससे भी ज़्यादा सख्त है। कोई ऐसा नहीं जो उन्हें ख़ुदा से बचाने वाला हो। ख़ुदातरस इनसानों के लिए जिस जन्नत का वादा किया गया है। उसकी शान यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल दायमी हैं और उसका साया लाज़वाल। यह अंजाम है मुत्तक़ी लोगों का। और मुनकिरीने-हक़ का अंजाम यह है कि उनके लिए दोज़ख़ की आग है। ऐ नबी, जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी वे इस किताब से, जो हमने तुमपर नाज़िल की है, ख़ुश हैं और मुख़्तलिफ़ गरोहों में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इसकी बाज़ बातों को नहीं मानते। तुम साफ़ कह दो कि ''मुझे तो सिर्फ अल्लाह की बन्दगी का हुक्म दिया गया है और इससे मना किया गया है कि किसी को उसके साथ शरीक ठहराऊँ, लिहाज़ा मैं उसी की तरफ दावत देता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ है।'' इसी हिदायत

के साथ हमने यह फ़रमाने-अरबी तुमपर नाज़िल किया है। अब अगर तुमने इस इल्म के बावजूद जो तुम्हारे पास आ चुका है, लोगों की ख़ाहिशात की पैरवी की तो अल्लाह के मुक़ाबले में न कोई तुम्हारा हामी व मददगार है और न कोई उसकी पकड़ से तुमको बचा सकता है।

रुकू–210 (13 राद : 38–43)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَ جَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّ ذُرِّيَّةً ؕ وَ مَا
كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ
كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَ يُثْبِتُ ۖۚ وَ عِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾
وَ اِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ
الْبَلٰغُ وَ عَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا
مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَ اللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَ هُوَ سَرِيْعُ
الْحِسَابِ ﴿٤١﴾ وَ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ
يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَ سَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى
الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًاۢ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ ۙ وَ مَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾

तुमसे पहले भी हम बहुत से रसूल भेज चुके हैं और उनको हमने बीवी- बच्चों वाला ही बनाया था। और किसी रसूल की भी यह

ताक़त न थी कि अल्लाह के इज़्न के बग़ैर कोई निशानी ख़ुद ला दिखाता। हर दौर के लिए एक किताब है। अल्लाह जो कुछ चाहता है मिटा देता है और जिस चीज़ को चाहता है क़ायम रखता है, 'उम्मुल किताब उसी के पास है। और ऐ नबी, जिस बुरे अंजाम की धमकी हम इन लोगों को दे रहे हैं उसका कोई हिस्सा ख़ाह हम तुम्हारे जीते जी दिखा दें या उसके ज़हूर में आने से पहले हम तुम्हें उठा लें, बहरहाल तुम्हारा काम सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचा देना है और हिसाब लेना हमारा काम है। क्या ये लोग देखते नहीं हैं कि हम इस सरज़मीन पर चले आ रहे हैं और इसका दायरा हर तरफ़ से तंग करते चले आते हैं? अल्लाह हुकूमत कर रहा है, कोई उसके फ़ैसलों पर नज़रसानी करने वाला नहीं है, और उसे हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती। इनसे पहले जो लोग हो गुज़रे हैं वे भी बड़ी-बड़ी चालें चल चुके हैं, मगर अस्ल फ़ैसलाकुन चाल तो पूरी की पूरी अल्लाह ही के हाथ में है। वह जानता है कि कौन क्या कुछ कमाई कर रहा है, और अनक़रीब ये मुनकिरीने-हक़ देख लेंगे कि अंजाम किसका बख़ैर होता है। ये मुनकिरीन कहते हैं कि तुम ख़ुदा के भेजे हुए नहीं हो। कहो, "मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है, और फिर उस शख़्स की गवाही जो किताबे-आसमानी का इल्म रखता है।"

रुकू–211 (14 इबराहीम : 1–6)

الٓرٰ ۚ قف كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ۵

بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ اِلٰى صِرَاطِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَمِيۡدِ ۙ ١ اللّٰهِ الَّذِىۡ لَهٗ مَا فِى
السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَ وَيۡلٌ لِّلۡكٰفِرِيۡنَ مِنۡ عَذَابٍ شَدِيۡدِ ۙ ٢
اۨلَّذِيۡنَ يَسۡتَحِبُّوۡنَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا عَلَى الۡاٰخِرَةِ وَ يَصُدُّوۡنَ عَنۡ
سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَ يَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِىۡ ضَلٰلٍۢ بَعِيۡدٍ ٣ وَ مَاۤ
اَرۡسَلۡنَا مِنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوۡمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمۡ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ
مَنۡ يَّشَآءُ وَ يَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَ هُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ٤ وَ لَقَدۡ
اَرۡسَلۡنَا مُوۡسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اَنۡ اَخۡرِجۡ قَوۡمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ ۙ ۚ وَ
ذَكِّرۡهُمۡ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوۡرٍ ٥ وَ
اِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهِ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ اِذۡ اَنۡجٰىكُمۡ مِّنۡ
اٰلِ فِرۡعَوۡنَ يَسُوۡمُوۡنَكُمۡ سُوۡۤءَ الۡعَذَابِ وَ يُذَبِّحُوۡنَ اَبۡنَآءَكُمۡ وَ
يَسۡتَحۡيُوۡنَ نِسَآءَكُمۡ ؕ وَ فِىۡ ذٰلِكُمۡ بَلَاۤءٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ عَظِيۡمٌ ٦ ع

अलिफ़, लाम, रा। ऐ मुहम्मद, यह एक किताब है जिसको हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों को तारीकियों से निकालकर रौशनी में लाओ, उनके रब की तौफ़ीक़ से, उस ख़ुदा के रास्ते पर जो ज़बरदस्त और अपनी जात में आप महमूद है और ज़मीन और आसमानों की सारी मौजूदात का मालिक है। और सख़्त तबाहकुन सज़ा है क़बूले-हक़ से इनकार करने वालों

के लिए जो दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर तरजीह देते हैं, जो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोक रहे हैं और चाहते हैं कि यह रास्ता (उनकी ख़ाहिशात के मुताबिक़) टेढ़ा हो जाए। ये लोग गुमराही में बहुत दूर निकल गए हैं। हमने अपने पैग़ाम देने के लिए जब कभी कोई रसूल भेजा है, उसने अपनी क़ौम ही की ज़बान में पैग़ाम दिया है ताकि वह उन्हें अच्छी तरह खोलकर बात समझाए। फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत बख़्शता है, वह बालादस्त और हकीम है। हम इससे पहले मूसा को भी अपनी निशानियों के साथ भेज चुके हैं। उसे भी हमने हुक्म दिया था कि अपनी क़ौम को तारीकियों से निकालकर रौशनी में ला और उन्हें तारीख़े-इलाही के सबक़आमोज़ वाक़िआत सुनाकर नसीहत कर। इन वाक़िआत में बड़ी निशानियाँ हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो। याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''अल्लाह के उस एहसान को याद रखो जो उसने तुम पर किया है। उसने तुमको फ़िरऔन वालों से छुड़ाया जो तुमको सख़्त तकलीफ़ें देते थे, तुम्हारे लड़कों को क़त्ल कर डालते थे और तुम्हारी लड़कियों को ज़िन्दा बचा रखते थे, इसमें तुम्हारा रब की तरफ़ से तुम्हारी बड़ी आज़माइश थी।

रुकू–212 (14 इबराहीम : 7–12)

وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَ لَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ
عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝ وَ قَالَ مُوْسٰى اِنْ تَكْفُرُوْۤا اَنْتُمْ وَ مَنْ فِي

الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٨ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۛ وَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا
يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فِيْۤ
اَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوْۤا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَ اِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا
تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝٩ قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرَكُمْ
اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ
تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠ قَالَتْ
لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١ وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى
اللّٰهِ وَ قَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَ لَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَاۤ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝١٢ ع

और याद रखो तुम्हारे रब ने ख़बरदार कर दिया था कि अगर शुक्रगुज़ार बनोगे तो मैं मैं तुमको और ज़्यादा नवाज़ूँगा और अगर कुफ़राने-नेमत करोगे तो मेरी सज़ा बहुत सख़्त है।'' और मूसा ने कहा कि ''अगर तुम कुफ़्र करो और ज़मीन के सारे रहने वाले

भी काफ़िर हो जाएँ तो अल्लाह बेनियाज़ और अपनी ज़ात में आप महमूद है।'' क्या तुम्हें उन क़ौमों के हालात नहीं पहुँचे जो तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं? क़ौमे-नूह, आद, समूद और उनके बाद आने वाली बहुत-सी क़ौमें जिनका शुमार अल्लाह ही को मालूम है? उनके रसूल जब उनके पास साफ़-साफ़ बातें और खुली-खुली निशानियाँ लिए हुए आए तो उन्होंने अपने मुहँ में हाथ दबा लिए और कहा कि ''जिस पैग़ाम के साथ तुम भेजे गए हो हम उसको नहीं मानते और जिस चीज़ की तुम हमें दावत देते हो उसकी तरफ़ से हम सख़्त ख़लजानआमेज़ शक में पड़े हुए हैं।'' उनके रसूलों ने कहा, ''क्या ख़ुदा के बारे में शक है जो आसमानों और ज़मीन का ख़ालिक है? वह तुम्हें बुला रहा है ताकि तुम्हारे कुसूर माफ़ करे और तुमको एक मुद्दते-मुक़र्रर तक मुहलत दे।'' उन्होंने जवाब दिया, ''तुम कुछ नहीं हो, मगर वैसे ही इनसान जैसे हम हैं। तुम हमें उन हस्तियों की बन्दगी से रोकना चाहते हो जिनकी बन्दगी बाप-दादा से होती चली आ रही है। अच्छा तो लाओ कोई सरीह सनद।'' उनके रसूलों ने उनसे कहा, ''वाकई हम कुछ नहीं हैं मगर तुम ही जैसे इनसान। लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है नवाज़ता है, और यह हमारे इख़्तियार में नहीं है कि तुम्हें कोई सनद ला दें। सनद तो अल्लाह ही के इज़्न से आ सकता है और अल्लाह ही पर अहले-ईमान को भरोसा करना चाहिए। और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जब कि हमारी ज़िन्दगी की राहों में उसने हमारी रहनुमाई की

है? जो अज़ीयतें तुम लोग हमें दे रहे हो उनपर हम सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों का भरोसा अल्लाह ही पर होना चाहिए।"

रुकू–213 (14 इबराहीम : 13–21)

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ
لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿١٣﴾ وَ
لَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَ
خَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ وَ اسْتَفْتَحُوْا وَ خَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۙ﴿١٥﴾ مِّنْ
وَّرَآىِٕهٖ جَهَنَّمُ وَ يُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۙ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَ لَا يَكَادُ
يُسِيْغُهٗ وَ يَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَ مِنْ
وَّرَآىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ
كَرَمَادِ اِشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا
كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ يَاْتِ بِخَلْقٍ
جَدِيْدٍ ۙ﴿١٩﴾ وَّ مَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ
الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ
مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَاۤ اَجَزِعْنَاۤ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ

مَّحِيۡصٍ ﴿٢١﴾ؑ

आख़िरकार मुनाकिरीन ने अपने रसूलों से कह दिया कि ''या तो तुम्हें हमारी मिल्लत में वापस आना होगा वरना हम तुम्हें अपने मुल्क से निकाल देंगे।'' तब उनके रब ने उनपर वहय भेजी कि ''हम इन ज़ालिमों को हलाक कर देंगे और इनके बाद तुम्हें ज़मीन में आबाद करेंगे। यह इनाम है उसका जो मेरे हुज़ूर जवाबदेही का ख़ौफ़ रखता हो और मेरी वईद से डरता हो।'' उन्होंने फ़ैसला चाहा था (तो यूँ उनका फ़ैसला हुआ) और हर जब्बार दुश्मने-हक़ ने मुहँ की खाई, फिर उसके बाद आगे उसके लिए जहन्नम है। वहाँ उसे कचलहू का-सा पानी को दिया जाएगा जिसे वह ज़बरदस्ती हलक़ से उतारने की कोशिश करेगा और मुशकिल ही से उतार सकेगा। मौत हर तरफ़ से उसपर छाई रहेगी मगर वह मरने न पाएगा और आगे एक सख़्त अज़ाब उसकी जान को लगा रहेगा। जिन लोगों ने अपने रब से कुफ़्र किया है उनके आमाल की मिसाल उस राख की-सी है जिसे एक तूफ़ानी दिन की आँधी ने उड़ा दिया हो। वह अपने किए का कुछ भी फल न पा सकेंगे। यही परले दर्जे की गुमगश्तगी है। क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह ने आसमान व ज़मीन की तख़लीक़ को हक पर कयाम किया है? वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए और एक नई ख़िल्क़त तुम्हारी जगह ले आए। ऐसा करना उसपर कुछ भी दुशवार नहीं है। और ये लोग जब इकट्ठे अल्लाह के सामने

बेनक़ाब होंगे तो उस वक़्त उनमें से जो दुनिया में कमज़ोर थे वे उन लोगों से जो बड़े बने हुए थे, कहेंगे, ''दुनिया में हम तुम्हारे ताबे थे, अब क्या तुम अल्लाह के अज़ाब से हमको बचाने के लिए भी कुछ कर सकते हो?'' वे जवाब देंगे, ''अगर अल्लाह ने हमें नजात की कोई राह दिखाई होती तो हम ज़रूर तुम्हें दिखा देते। अब तो यकसाँ है ख़ाह हम जज़ा-फ़ज़ा करें या सब्र, बहरहाल हमारे बचने की कोई सूरत नहीं।''

रुकू—214 (14 इबराहीम : 22—27)

وَ قَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ
وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَ مَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ
دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَ لُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا
بِمُصْرِخِكُمْ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ
قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۲﴾ وَ اُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿۲۳﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ
مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي
السَّمَآءِ ﴿۲۴﴾ تُؤْتِيْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَ مَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ

كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۣاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾
يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي
الْاٰخِرَةِ ۚ وَ يُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙۛ وَ يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾

और जब फ़ैसला चुका दिया जाएगा तो शैतान कहेगा, ''हकीकत यह है कि अल्लाह ने जो वादे तुमसे किए थे वे सब सच्चे थे और मैंने जितने वादे किए उनमें से कोई भी पूरा न किया। मेरा तुमपर कोई ज़ोर तो था नहीं, मैंने इसके सिवा कुछ नहीं किया कि अपने रास्ते की तरफ़ तुमको दावत दी और तुमने मेरी दावत पर लब्बैक कहा। अब मुझे मलामत न करो, अपने आप ही को मलामत करो। यहाँ न मैं तुम्हारी फ़रियादरसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी। इससे पहले जो तुमने मुझे ख़ुदाई में शरीक बना रखा था, मैं उससे बरी-उज़-ज़िम्मा हूँ, ऐसे ज़ालिमों के लिए दर्दनाक सज़ा यक़ीनी है।'' बाख़िलाफ़ इसके जो लोग दुनिया में ईमान लाए हैं और जिन्होंने नेक अमल किए हैं वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएँगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वहाँ वे अपने रब के इज़्न से हमेशा रहेंगे, और वहाँ उनका इस्तक़बाल सलामती की मुबारकबाद से होगा। क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह ने कलिमए-तय्यिबा को किस चीज़ से मिसाल दी है? उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक अच्छी ज़ात का दरख़्त जिसकी जड़ जमीन में गहरी जमी हुई हैं और शाख़ें आसमान तक पहुँची हुई हैं, हर

आन वह अपने रब के हुक्म से अपने फल दे रहा है। ये मिसालें अल्लाह इसलिए देता है कि लोग इनसे सबक लें। और कलिमए-खबीसा की मिसाल एक बदज़ात दरख़्त की सी है, जो ज़मीन की सतह से उखाड़ फेंका जाता है, उसके लिए कोई इस्तहकाम नहीं है। ईमान लेने वालों को अल्लाह एक क़ौले-साबित की बुनियाद पर दुनिया और आख़िरत, दोनों में सबात अता करता है, और ज़ालिमों को अल्लाह भटका देता है। अल्लाह को इख़्तियार है जो चाहे करे।

रुकू–215 (14 इबराहीम : 28–34)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّ أَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ
الْبَوَارِ ۙ ۲۸ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَ بِئْسَ الْقَرَارُ ۲۹ وَ جَعَلُوا لِلّٰهِ أَنْدَادًا
لِّيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۳۰ قُلْ
لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ اٰمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَ يُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ
عَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَ لَا خِلٰلٌ ۳۱ اَللّٰهُ
الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضَ وَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهٖ
مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ
بِأَمْرِهٖ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهٰرَ ۚ ۳۲ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ
دَآئِبَيْنِ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ۚ ۳۳ وَ اٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا
سَأَلْتُمُوهُ ۗ وَ إِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ

كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

तुमने देखा उन लोगों को जिन्होंने अल्लाह की नेमत पाई और उसे कुफ़राने-नेमत से बदल डाला और (अपने साथ) अपनी क़ौम को भी हलाकत के घर में झोंक दिया- यानी जहन्नम, जिसमें वे झुलसे जाएँगे और वह बदतरीन जाए-क़रार है- और अल्लाह के कुछ हमसर तजवीज़ कर लिए ताकि वे उन्हें अल्लाह के रास्ते से भटका दें? उनसे कहो, ''अच्छा मज़े कर लो, आख़िरकार तुम्हें पलटकर जाना दोज़ख़ ही में है।'' ऐ नबी, मेरे जो बन्दे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से खुले और छिपे (राहे-ख़ैर में) ख़र्च करें क़ब्ल इसके कि वह दिन आए जिसमें न ख़रीद-व-फ़रोख़्त होगी और न दोस्तनवाज़ी हो सकेगी। अल्लाह वही तो है जिसने ज़मीन और आसमानों को पैदा किया और आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके ज़रीए से तुम्हारी रिज़्करसानी के लिए तरह-तरह के फल पैदा किए। जिसने कश्ती को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया कि समुन्दर में उसके हुक्म से चले और दरियाओं को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया। जिसने सूरज और चाँद को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया कि लगातार चले जा रहे हैं और रात और दिन को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया, जिसने वह सब कुछ तुम्हें दिया जो तुमने माँगा। अगर तुम अल्लाह की नेमतों का शुमार करना चाहो तो नहीं कर सकते। हक़ीक़त यह है कि इनसान बड़ा ही बेइनसाफ़ और नाशुक्रा है।

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّ اجْنُبْنِيْ وَ بَنِيَّ
اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ؕ ﴿۳۵﴾ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ
تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَ مَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۶﴾ رَبَّنَاۤ اِنِّيْۤ
اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا
لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْۤ اِلَيْهِمْ وَ
ارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۷﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا
نُخْفِيْ وَ مَا نُعْلِنُ ؕ وَ مَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا فِي
السَّمَآءِ ﴿۳۸﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَ
اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَ
مِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖۗ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيَّ وَ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾ ع

याद करो वह वक़्त जब इबराहीम ने दुआ की थी कि ''परवरदिगार इस शहर (यानी मक्का) को अमन का शहर बना और मुझे और मेरी औलाद को बुतपरस्ती से बचा। परवरदिगार, इस बुतों ने बहुतों को गुमराही में डाला है (मुमकिन है कि मेरी औलाद को भी ये गुमराह कर दें, लिहाज़ा उनमें से) जो मेरे तरीक़े पर चले वह मेरा है और जो मेरे ख़िलाफ़ तरीक़ा इख़्तियार करे

तो यक़ीनन तू दरगुज़र करने वाला मेहरबान है। परवादिगार मैंने एक बेआब व गयाह वादी में अपनी औलाद के एक हिस्से को तेरे मोहतरम घर के पास ला बसाया है। परवरदिगार, यह मैंने इसलिए किया है कि ये लोग यहाँ नमाज़ क़याम करें, लिहाज़ा तू लोगों के दिलों को इनका मुश्ताक़ बना और इन्हें खाने को फल दे, शायद कि ये शुक्रगुज़ार बनें। परवरदिगार, तू जानता है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।''– और वाक़ई अल्लाह से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, न ज़मीन में न आसमानों में– ''शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने मुझे इस बुढ़ापे में इसमाईल और इसहाक़ जैसे बेटे दिए, हक़ीक़त यह है कि मेरा रब ज़रूर दुआ सुनता है। ऐ मेरे परवरदिगार, मुझे नमाज़ क़याम करने वाला बना और मेरी औलाद से भी (ऐसे लोग उठा जो ये काम करें)। परवरदिगार, मेरी दुआ क़बूल कर। परवरदिगार, मुझे और मेरे वालिदैन को और सब ईमान लाने वालों को उस दिन माफ़ कर दीजियो जबकि हिसाब कायम होगा।''

रुकू–217 (14 इबराहीम : 42–52)

وَ لَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ
لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۙ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا
يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ؕ﴿٤٣﴾ وَ اَنْذِرِ النَّاسَ
يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰۤى
اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَ لَمْ تَكُوْنُوْۤا

اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿۴۴﴾ وَّ سَكَنْتُمْ فِیْ مَسٰكِنِ
الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ تَبَیَّنَ لَكُمْ كَیْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَ ضَرَبْنَا
لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾ وَ قَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَ عِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَ اِنْ
كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ
وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴۷﴾ یَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ
غَیْرَ الْاَرْضِ وَ السَّمٰوٰتُ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾ وَ تَرَى
الْمُجْرِمِیْنَ یَوْمَىٕذٍ مُّقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾ سَرَابِیْلُهُمْ مِّنْ
قَطِرَانٍ وَّ تَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿۵۰﴾ لِیَجْزِیَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا
كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَ لِیُنْذَرُوْا
بِهٖ وَ لِیَعْلَمُوْۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ لِیَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۵۲﴾

अब ये ज़ालिम लोग जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह को तुम उससे ग़ाफ़िल न समझो। अल्लाह तो उन्हें टाल रहा है, उस दिन के लिए जब हाल यह होगा कि आँखें फटी की फटी रह गई हैं, सर उठाए भागे चले जा रहे हैं, नज़रें ऊपर जमी हैं और दिल उड़े जाते हैं। ऐ नबी, उस दिन से तुम इन्हें डरा दो जबकि अजाब इन्हें आ लेगा। उस वक़्त ये ज़ालिम कहेंगे कि ''ऐ हमारे रब, हमें थोड़ी-सी मुहलत और दे दे, हम तेरी दावत को लब्बैक कहेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे।'' (मगर उन्हें साफ़ जवाब दिया जाएगा

कि) ''क्या तुम वही लोग नहीं हो जो इससे पहले क़समें खा-खाकर करते थे कि हमपर तो कभी ज़वाल आना ही नहीं है? हालाँकि तुम उन क़ौमों की बस्तियों में रह-बस चुके थे जिन्होंने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया था और देख चुके थे कि हमने उनसे क्या सुलूक किया और उनकी मिसालें दे-देकर हम तुम्हें समझा भी चुके थे। उन्होंने अपनी सारी ही चालें चल देखीं, मगर उनकी हर चाल का तोड़ अल्लाह के पास था अगरचे उनकी चालें ऐसी ग़ज़ब की थीं कि पहाड़ उनसे टल जाएँ।'' पस ऐ नबी, तुम हरगिज़ ये गुमान न करो कि अल्लाह कभी अपने रसूलों से किए हुए वादों के ख़िलाफ़ करेगा। अल्लाह ज़बरदस्त है और इन्तिक़ाम लेने वाला है। डराओ इन्हें उस दिन से जब कि ज़मीन और आसमान बदलकर कुछ से कुछ कर दिए जाएँगे और सबके सब अल्लाह वाहिद क़हहार के सामने बेनक़ाब हाज़िर हो जाएँगे। उस रोज़ तुम मुजरिमों को देखोगे कि ज़ंजीरों में हाथ-पाँओ जकड़े हुए होंगे, तारकोल के लिबास पहने हुए होंगे और आग के शोले उनके चेहरों पर छाए जा रहे होंगे। यह इसलिए होगा कि अल्लाह हर मुतनफ़्फ़िस को उसके किए का बदला दे। अल्लाह को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती। यह एक पैग़ाम है सब इनसानों के लिए, और यह भेजा गया है इसलिए कि उनको इसके ज़रीए से ख़बरदार कर दिया जाए और वे जान लें कि हक़ीक़त में ख़ुदा बस एक ही है और जो अक़्ल रखते हैं वे होश में आ जाएँ।

रुकू–218 (15 हिज्र : 1–15)

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَ قُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١ رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٢ ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَ يَتَمَتَّعُوْا وَ يُلْهِهِمُ
الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٣ وَ مَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَ لَهَا كِتَابٌ
مَّعْلُوْمٌ ۝٤ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ مَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٥ وَ قَالُوْا
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝٦ لَوْ مَا تَاْتِيْنَا
بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧ مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا
بِالْحَقِّ وَ مَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝٨ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ
لَحٰفِظُوْنَ ۝٩ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٠ وَ مَا
يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ
قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٢ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ قَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَ
لَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝١٤ لَقَالُوْٓا
اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٥

अलिफ़, लाम, रा। ये आयात हैं किताबे-इलाही और कुरआने-मुबीन की। बईद नहीं कि एक वक़्त वह आ जाए जब वही लोग जिन्होंने आज (दवाते-इस्लाम को कबूल करने से) इनकार कर दिया है, पछता- पछताकर कहेंगे कि काश हमने

सरे-तसलीम ख़म कर दिया होता। छोड़ो इन्हें। खाएँ-पिएँ, मजे करें, और भुलावे में डाले रखे इनको झूठी उम्मीदें। अनक़रीब इन्हें मालूम हो जाएगा। हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी हलाक़ किया उसके लिए एक ख़ास मुहलते-अमल लिखी जा चुकी थी। कोई क़ौम न अपने वक़्ते-मुक़र्रर से पहले हलाक हो सकती है, न उसके बाद छूट सकती है। ये लोग कहते हैं, ‘‘ऐ वह शख़्स जिसपर यह जिक्र नाज़िल हुआ है, तू यक़ीनन दीवाना है। अगर तू सच्चा है तो हमारे सामने फ़रिश्तों को ले क्यों नहीं आता?’’- हम फरिश्तों को यूँ ही नहीं उतार दिया करते। वे जब उतरते हैं तो हक़ के साथ उतरते हैं, और फिर लोगों को मुहलत नहीं दी जाती। रहा यह ज़िक्र, तो इसको हमने नाज़िल किया है और हम ख़ुद इसके निगहबान हैं। ऐ नबी, हम तुमसे पहले बहुत-सी गुज़री हुई क़ौमों में रसूल भेज चुके हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ कि उनके पास कोई रसूल आया हो और उन्होंने उसका मज़ाक न उड़ाया हो। मुजरिमीन के दिलों में तो हम इस ज़िक्र को इसी तरह (सलाख़ के मानिन्द) गुज़ारते हैं। वे इसपर ईमान नहीं लाया करते। क़दीम से इस क़िमाश के लोगों का यही तरीक़ा चला आ रहा है। अगर हम उनपर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल देते और वे दिन-दहाड़े उसमें चढ़ने भी लगते तब भी वे यही कहते कि हमारी आँखों को धोका हो रहा है, बल्कि हमपर जादू कर दिया गया है।

रुकू–219 (15 हिज्र : 16–25)

وَ لَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّ زَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾ۙ وَ حَفِظْنٰهَا

مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ
شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَ الْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَ اَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَ
اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ
وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَ اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ
وَ مَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾ وَ اَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَ مَاۤ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَ اِنَّا
لَنَحْنُ نُحْيٖ وَ نُمِيْتُ وَ نَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَ لَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ
مِنْكُمْ وَ لَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ
حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

यह हमारी करफ़रमाई है कि आसमान में हमने बहुत-से मज़बूत क़िले बनाए, उनको देखने वालों के लिए (सितारों से) आरास्ता किया, और हर शैताने-मरदूद से उनको महफ़ूज़ कर दिया। कोई शैतान उनमें राह नहीं पा सकता, इल्ला यह कि कुछ सुन-गुन ले ले। और जब वह सुन-गुन लेने की कोशिश करता है तो एक शोलए-रौशन उसका पीछा करता है। हमने ज़मीन को फैलाया, उसमें पहाड़ जमाए, उसमें हर नौअ की नबातात ठीक-ठीक नपी-तुली मिक़दार के साथ उगाई, और उसमें मईशत के असबाब फ़राहम किए, तुम्हारे लिए भी और उन बहुत-सी मख़लूक़ात के लिए भी जिनके राज़िक़ तुम नहीं हो। कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके

ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और जिस चीज़ को भी हम नाज़िल करते हैं एक मुक़र्रर मिक़दार में नाज़िल करते हैं। बारआवर हवाओं को हम ही भेजते हैं, फिर आसमान से पानी बरसाते हैं, और उस पानी से तुम्हें सैराब करते हैं। इस दौलत के ख़ज़ानेदार तुम नहीं हो। ज़िन्दगी और मौत हम देते हैं, और हम ही सबके वारिस होने वाले हैं। पहले जो लोग तुममें से हो गुज़रे हैं उनको भी हमने देख रखा है, और बाद के आने वाले भी हमारी निगाह में हैं। यक़ीनन तुम्हारा रब उन सबको इकट्ठा करेगा, वह हकीम भी है और अलीम भी।

रुकू–220 (15 हिज्र : 26–44)

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۲۶﴾ وَ
الْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾ وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۲۸﴾ فَاِذَا
سَوَّيْتُهٗ وَ نَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَسَجَدَ
الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿۳۰﴾ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ
السّٰجِدِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۳۲﴾
قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ
مَّسْنُوْنٍ ﴿۳۳﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿۳۴﴾ وَّ اِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ
اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۳۵﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِیْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ

فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۙ﴿۳۷﴾ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿۳۸﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ
اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿۳۹﴾ اِلَّا
عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۴۰﴾ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿۴۱﴾
اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْغٰوِيْنَ ﴿۴۲﴾ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿۴۳﴾ لَهَا سَبْعَةُ
اَبْوَابٍ ۭ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿۴۴﴾ ع

हमने इनसान को सड़ी हुई मिट्टी के सूखे गारे से बनाया। और उससे पहले जिन्नों को हम आग की लपट से पैदा कर चुके थे। फिर याद करो उस मौके को जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि ''मैं सड़ी हुई मिट्टी के सूखे गारे से एक बशर पैदा कर रहा हूँ। जब मैं उसे पूरा बना चुकूं और उसमें अपनी रूह से कुछ फूँक दूँ तो तुम सब उसके आगे सजदे में गिर जाना।'' चुनाँचे तमाम फ़रिश्तों ने सजदा किया, सिवाए इबलीस के कि उसने सजदा करने वालों का साथ देने से इनकार कर दिया। रब ने पूछा, ''ऐ इबलीस, तुझे क्या हुआ कि तूने सजदा करने वालों का साथ न दिया?'' उसने कहा, ''मेरा यह काम नहीं है कि मैं उस बशर को सजदा करूँ जिसे तूने सड़ी हुई मिट्टी के सूखे गारे से पैदा किया है।'' रब ने फ़रमाया, ''अच्छा तो निकल जा यहाँ से क्योंकि तू मरदूद है, और अब रोज़े-जज़ा तक तुमपर लानत है।''

उसने अर्ज़ किया, ''मेरे रब, यह बात है तो फिर मुझे उस रोज़ तक के लिए मुहलत दे जबकि सब इनसान दोबारा उठाए जाएँगे।'' फ़रमाया, ''अच्छा, तुझे मुहलत है उस दिन तक जिसका वक़्त हमें मालूम है।'' वह बोला, ''मेरे रब, जैसा तूने मुझे बहकाया उसी तरह अब मैं ज़मीन में उनके लिए दिलफ़रेबियाँ पैदा करके उन सबको बहका दूँगा, सिवाय तेरे उन बन्दों के जिन्हें तूने उनमें से ख़ालिस कर लिया हो।'' फ़रमाया, ''यह रास्ता है जो सीधा मुझ तक पहुँचता है। बेशक जो मेरे हक़ीक़ी बन्दे हैं उनपर तेरा बस न चलेगा। तेरा बस तो सिर्फ़ उन बहके हुए लोगों ही पर चलेगा जो तेरी पैरवी करें, और उन सबके लिए जहन्नम की वईद है।'' यह जहन्नम (जिसकी वईद पैरुवाने- इबलीस के लिए की गई है) इसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उनमें से एक हिस्सा मख़सूस कर दिया गया है।

रुकू–221 (15 हिज्र : 45–60)

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّ عُيُونٍ ﴿٤٥﴾ اُدْخُلُوهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَ
نَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا
يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَّ مَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ
اَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَ اَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَ
نَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيمَ ﴿٥١﴾ اِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلٰمًا قَالَ
اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِیْ عَلٰۤى اَنْ مَّسَّنِیَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿۵۴﴾ قَالُوْا
بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِیْنَ ﴿۵۵﴾ قَالَ وَ مَنْ یَّقْنَطُ مِنْ
رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿۵۶﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَیُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۷﴾
قَالُوْۤا اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِیْنَ ﴿۵۸﴾ اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا
لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۵۹﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَاۤ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِیْنَ ﴿۶۰﴾

बख़िलाफ़ इसके मुत्तक़ी लोग बाग़ों और चश्मों में होंगे और उनसे कहा जाएगा कि दाख़िल हो जाओ उनमें सलामती के साथ बेख़ौफ़ व ख़तर। उनके दिलों में जो थोड़ी बहुत खोट-कपट होगी उसे हम निकाल देंगे, वे आपस में भाई-भाई बनकर आमने-सामने तख़्तों पर बैठेंगे। उन्हें न वहाँ किसी मशक्कत से पाला पड़ेगा और न वे वहाँ से निकाले जाएँगे। ऐ नबी, मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि मैं बहुत दरगुज़र करने वाला और रहीम हूँ। मगर इसके साथ मेरा अज़ाब भी निहायत दर्दनाक अज़ाब है। और इन्हें जरा इबराहीम के मेहमानों का क़िस्सा सुनाओ। जब वे आए उसके हाँ और कहा, ''सलाम हो तुमपर,'' तो उसने कहा, ''हमें तुमसे डर लगता है।'' उन्होंने जवाब दिया, ''डरो नहीं, हम तुम्हें एक बड़े सयाने लड़के की बशारत देते हैं।'' इबराहीम ने कहा, ''क्या तुम इस बुढ़ापे में मुझे औलाद की बशारत देते हो? जरा सोचो तो सही कि यह कैसी बशारत तुम मुझे दे रहे हो?'' उन्होंने जवाब दिया, ''हम तुम्हें बरहक़ बशारत दे रहे हैं, तुम मायूस न हो।'' इबराहीम ने

कहा, ''अपने रब की रहमत से मायूस तो गुमराह लोग ही हुआ करते हैं।'' फिर इबराहीम ने पुछा, ''ऐ फ़रिश्तादगाने-इलाही, वह मुहिम क्या है जिस पर आप हज़रात तशरीफ़ लाए हैं?'' ने बोले, ''हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। सिर्फ़ लूत के घर वाले मुस्तसना हैं, उन सबको हम बचा लेंगे, सिवाय उसकी बीवी के जिसके लिए (अल्लाह फ़रमाता है कि) हमने मुक़द्दर कर दिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में शामिल रहेगी ।''

रुकू–222 (15 हिज्र : 61–79)

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلُوْنَ ۙ﴿۶۱﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۶۲﴾
قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿۶۳﴾ وَ اَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ اِنَّا
لَصٰدِقُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ
وَ لَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّ امْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ قَضَيْنَآ
اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿۶۶﴾ وَجَآءَ
اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۶۷﴾ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا
تَفْضَحُوْنِ ۙ﴿۶۸﴾ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ لَا تُخْزُوْنِ ﴿۶۹﴾ قَالُوْٓا اَوَ لَمْ نَنْهَكَ عَنِ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ؕ﴿۷۱﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ
لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۷۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۙ﴿۷۳﴾
فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ؕ﴿۷۴﴾

اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّلۡمُتَوَسِّمِیۡنَ ﴿۷۵﴾ وَ اِنَّہَا لَبِسَبِیۡلٍ مُّقِیۡمٍ ﴿۷۶﴾
اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیَۃً لِّلۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿ؕ۷۷﴾ وَ اِنۡ کَانَ اَصۡحٰبُ الۡاَیۡکَۃِ
لَظٰلِمِیۡنَ ﴿ۙ۷۸﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡہُمۡ ۘ وَ اِنَّہُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِیۡنٍ ﴿ؕ۷۹﴾

फिर जब ये फ़रिस्तादे-लूत के यहाँ पहुँचे तो उसने कहा, ''आप लोग अजनबी मालूम होते हैं।'' उन्होंने जवाब दिया, ''नहीं, बल्कि हम वही चीज़ लेकर आए हैं जिसके आने में ये लोग शक कर रहे थे। हम तुम से सच कहते हैं कि हम हक़ के साथ तुम्हारे पास आए हैं। लिहाज़ा अब तुम कुछ रात रहे अपने घरवालों को लेकर निकल जाओ और ख़ुद उनके पीछे-पीछे चलो। तुम में से कोई पलटकर न देखे। बस सीधे चले जाओ जिधर जाने का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है।'' और उसे हमने अपना यह फ़ैसला पहुँचा दिया कि सुबह होते-होते उन लोगों की जड़ काट दी जाएगी। इतने में शहर के लोग ख़ुशी के मारे बेताब होकर लूत के घर चढ़ आए। लूत ने कहा, ''भाइयो, ये मेरे मेहमान हैं, मेरी फ़ज़ीहत न करो, अल्लाह से डरो, मुझे रुसवा न करो।'' वे बोले, ''क्या हम बारहा तुम्हें मना नहीं कर चुके हैं कि दुनियाभर के ठेकेदार न बनो?'' लूत ने (आजिज़ होकर) कहा, ''अगर तुम्हें कुछ करना ही है तो ये मेरी बेटियाँ मौजूद हैं!'' तेरी जान की कसम ऐ नबी, उस वक़्त उनपर एक नशा-सा चढ़ा हुआ था जिसमें वे आपे से बाहर हुए जाते थे। आख़िरकार पौ फटते ही एक ज़बरदस्त धमाके ने आ

लिया और हमने उस बस्ती को तलपट करके रख दिया और उनपर पकी हुई मिट्टी के पत्थरों की बारिश बरसा दी। इस वाक़िए में बड़ी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो साहिबे-फ़िरासत हैं। और वह इलाक़ा (जहाँ यह वाक़िआ पेश आया था) गुज़रगाहे-आम पर वाके है, इसमें सामाने-इबरत है उन लोगों के लिए जो साहिबे-ईमान हैं। और ऐका वाले ज़ालिम थे, तो देख लो कि हमने भी उनसे इन्तिक़ाम लिया, और इन दोनों क़ौमों के उजड़े हुए इलाके खुले रास्ते पर वाक़े हैं ।

रुकू–223 (15 हिज्र : 80–99)

وَ لَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِیْنَ ۙ﴿۸۰﴾ وَ اٰتَیْنٰهُمْ اٰیٰتِنَا فَكَانُوْا
عَنْهَا مُعْرِضِیْنَ ۙ﴿۸۱﴾ وَ كَانُوْا یَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا
اٰمِنِیْنَ ﴿۸۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّیْحَةُ مُصْبِحِیْنَ ۙ﴿۸۳﴾ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا
كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ؕ﴿۸۴﴾ وَ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَیْنَهُمَاۤ اِلَّا
بِالْحَقِّ ؕ وَ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِیَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِیْلَ ﴿۸۵﴾ اِنَّ
رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِیْمُ ﴿۸۶﴾ وَ لَقَدْ اٰتَیْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِیْ وَ
الْقُرْاٰنَ الْعَظِیْمَ ﴿۸۷﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَیْنَیْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا
مِّنْهُمْ وَ لَا تَحْزَنْ عَلَیْهِمْ وَ اخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۸۸﴾ وَ قُلْ
اِنِّیْۤ اَنَا النَّذِیْرُ الْمُبِیْنُ ۚ﴿۸۹﴾ كَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِیْنَ ۙ﴿۹۰﴾ الَّذِیْنَ
جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِیْنَ ﴿۹۱﴾ فَوَ رَبِّكَ لَنَسْــَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِیْنَ ۙ﴿۹۲﴾ عَمَّا

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾
اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ
فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَ لَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا
يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ كُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَ اعْبُدْ
رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

हिज्र के लोग भी रसूलों की तकज़ीब कर चुके हैं। हमने अपनी आयात उनके पास भेजीं, अपनी निशानियाँ उनको दिखाई, मगर वे सबको नज़र अंदाज़ ही करते रहे। वे पहाड़ तराश-तराशकर मकान बनाते थे और अपनी जगह बिल्कुल बेख़ौफ़ और मुत्मइन थे। आख़िरकार एक ज़बरदस्त धमाके ने उनको सुबह होते आ लिया और उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई। हमने ज़मीन और आसमानों को और उनमें सब मौजूदात को हक़ के सिवा किसी और बुनियाद पर ख़ल्क नहीं किया, और फ़ैसले की घड़ी यक़ीनन आने वाली है, पस ऐ नबी, तुम (इन लोगों की बेहूदगियों पर) शरीफ़ाना दरगुजर से काम लो। यक़ीनन तुम्हारा रब सबका ख़ालिक़ है और सब कुछ जानता है। हमने तुमको सात ऐसी आयतें दे रखी हैं जो बार-बार दोहराई जाने के लायक़ हैं, और तुम्हें कुरआन-अज़ीम अता किया है। तुम उस मताए-दुनिया की तरफ आँख उठाकर न देखो जो हमने उनमें से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को दे रखी है, और न इनके हाल पर अपना दिल

कुढ़ाओ। इन्हें छोड़कर ईमान लाने वालों की तरफ़ झुको और (न मानने वालों से) कह दो कि ‘‘मैं तो साफ़-साफ़ तंबीह करने वाला हूँ।’’ यह उसी तरह की तंबीह है जैसी हमने उन तफ़र्क़ा-परदाज़ों की तरफ़ भेजी थी जिन्होंने अपने क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला है। तो क़सम है तेरे रब की, हम ज़रूर इन सबसे पूछेंगे कि तुम क्या करते रहे हो। पस ऐ नबी, जिस चीज का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है उसे हाँके-पुकारे कह दो और शिर्क करने वालों की ज़रा परवाह न करो। तुम्हारी तरफ़ से हम इन मज़ाक उड़ाने वालों की ख़बर लेने के लिए काफ़ी हैं जो अल्लाह के साथ किसी और को भी ख़ुदा क़रार देते हैं। अनक़रीब इन्हें मालूम हो जाएगा। हमें मालूम है कि जो बातें ये लोग तुमपर बनाते हैं उनसे तुम्हारे दिल को सख़्त कोफ़्त होती है। (इसका इलाज यह है कि) अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करो, उसकी जनाब में सजदा बजा लाओ, और उस आख़िरी घड़ी तक अपने रब की बन्दगी करते रहो जिसका आना यक़ीनी है।

रुकू—224 (16 अन—नह्ल : 1—9)

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ۝١ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ

فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿۴﴾ وَ الْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّ
مَنَافِعُ وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۵﴾ وَ لَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَ
حِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ﴿۶﴾ وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ
اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۷﴾ وَّ الْخَيْلَ وَ الْبِغَالَ
وَ الْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ زِيْنَةً ؕ وَ يَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾ وَ عَلَى اللّٰهِ
قَصْدُ السَّبِيْلِ وَ مِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَ لَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹﴾

आ गया अल्लाह का फ़ैसला, अब इसके लिए जल्द न मचाओ। पाक है वह और बाला व बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग कर रहे हैं। वह इस रूह को अपने जिस बन्दे पर चाहते है अपने हुक्म से मलाइका के ज़रीए नाज़िल फ़रमा देता है (इस हिदायत के साथ कि लोगों को) ''आगाह कर दो, मेरे सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं है, लिहाज़ा तुम मुझी से डरो।'' उसने आसमान व ज़मीन को बरहक पैदा किया है, वह बहुत बाला व बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। उसने इनसान को एक जरा-सी बुँद से पैदा किया और देखते-देखते सरीहन वह एक झगड़ालू हस्ती बन गया। उसने जानवर पैदा किए जिनमें तुम्हारे लिए पोशाक भी है और ख़ुराक भी, और तरह-तरह के दूसरे फ़ायदे भी। उनमें तुम्हारे लिए जमाल है जबकि सुबह तुम उन्हें चरने के लिए भेजते हो और जब कि शाम उन्हें वापस लाते हो। वे तुम्हारे लिए बोझ

ढोकर ऐसे-ऐसे मक़ामात तक ले जाते हैं जहाँ तुम सख़्त जाँफ़िशानी के बगैर नहीं पहुँच सकते। हकीकत यह है कि तुम्हारा रब बड़ा ही शफ़ीक़ और मेहरबान है। उसने घोड़े और खच्चर और गधे पैदा किए ताकि तुम उनपर सवार हो और वे तुम्हारी ज़िन्दगी की रौनक़ बनें। वह और बहुत-सी चीज़ें (तुम्हारे फ़ायदे के लिए) पैदा करता है जिनका तुम्हें इल्म तक नहीं है। और अल्लाह ही के ज़िम्मे है सीधा रास्ता बताना जबकि रास्ते टेढ़े भी मौजूद हैं। अगर वह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता।

रुकू–225 (16 अन–नह्ल : 10–21)

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّ مِنْهُ شَجَرٌ
فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝١٠ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَ الزَّيْتُوْنَ وَ النَّخِيْلَ وَ
الْاَعْنَابَ وَ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١١ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ۙ وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ وَ
النُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝١٢ وَ
مَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّذَّكَّرُوْنَ ۝١٣ وَ هُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّ
تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ
وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝١٤ وَ اَلْقٰى فِي الْاَرْضِ
رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَ اَنْهٰرًا وَّ سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٥ وَ

عَلٰمٰتٍؕ وَ بِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۶﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا
يَخْلُقُؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَاؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ
الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّ هُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿۲۰﴾ؕ
اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۲۱﴾ؑ

वही है जिसने आसमान से तुम्हारे लिए पानी बरसाया जिससे तुम खुद भी सैराब होते हो और तुम्हारे जानवरों के लिए भी चारा पैदा होता है। वह उस पानी के ज़रीए से खेतियाँ उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और तरह-तरह के दूसरे फल पैदा करता है। इसमें एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर व फ़िक्र करते हैं। उसने तुम्हारी भलाई के लिए रात और दिन को और सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र कर रखा है और सब तारे भी उसी के हुक्म के मुसख़्ख़र हैं। इसमें बहुत निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं। और ये जो बहुत-सी रंग-बिरंग की चीज़ें उसने तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा कर रखी हैं, इनमें भी ज़रूर निशानी है उन लोगों के लिए जो सबक हासिल करने वाले हैं। वही है जिसने तुम्हारे लिए समुन्दर को मुसख़्ख़र कर रखा है ताकि तुम उससे तर व ताज़ा गोश्त लेकर खाओ और उससे ज़ीनत की वे चीजें निकालो जिन्हें तुम पहना करते हो। तुम देखते हो कि कश्ती समुन्दर का सीना चीरती हुई चलती है।

ये सब कुछ इसलिए है कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो और उसके शुक्रगुजार बनो। उसने ज़मीन में पहाड़ों की मेख़ें गाड़ दीं ताकि ज़मीन तुमको लेकर ढुलक न जाए। उसने दरिया जारी किए और कुदरती रास्ते बनाए ताकि तुम हिदायत पाओ। उसने जमीन में रास्ता बनाने वाली अलामतें रख दी, और तारों से भी लोग हिदायत पाते हैं। फिर क्या वह जो पैदा करता है और वे जो कुछ भी पैदा नहीं करते, दोनों यकसाँ हैं? क्या तुम होश में नहीं आते? अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते, हक़ीक़त यह है कि वह बड़ा ही दरगुज़र करने वाला और रहीम है, हालाँकि वह तुम्हारे खुले से भी वाक़िफ़ है और छिपे से भी। और वे दूसरी हस्तियाँ जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं, वे किसी चीज़ की भी ख़ालिक़ नहीं हैं, बल्कि खुद मख़लूक़ हैं। मुर्दा हैं, न कि ज़िन्दा। और उनको कुछ मालूम नहीं है कि उन्हें कब (दोबारा ज़िन्दा करके) उठाया जाएगा।

रुकू–226 (16 अन–नह्ल : 22–25)

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّ
هُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا
يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّا ذَآ
اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ۙ لِيَحْمِلُوْۤا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً
يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَ مِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا

سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾ ع

तुम्हारा ख़ुदा बस एक ही ख़ुदा है। मगर जो लोग आख़िरत को नहीं मानते उनके दिलों में इनकार बसकर रह गया है और वे घमंड में पड़ गए हैं। अल्लाह यक़ीनन इनके सब करतूत जानता है, छिपे हुए भी और खुले हुए भी। वह उन लोगों को हरगिज़ पसन्द नहीं करता जो ग़ुरुरे-नफ़्स में मुब्तला हों। और जब कोई उनसे पूछता है कि तुम्हारे रब ने यह क्या चीज़ नाज़िल की है, तो कहते हैं, ''अजी वे तो अगले वक़्तों की फ़रसूदा कहानियाँ हैं।'' ये बातें वे इसलिए करते हैं कि क़ियामत के रोज़ अपने बोझ भी पूरे उठाएँ, और साथ-साथ कुछ उन लोगों के बोझ भी समेटें जिन्हें ये बर बिनाए-जिहालत गुमराह कर रहे हैं। देखो! कैसी सख़्त ज़िम्मेदारी है जो ये अपने सर ले रहे हैं।

रुकू–227 (16 अन–नह्ल : 26–34)

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ
عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ اَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَ يَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ
الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ
الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَ السُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾ لا الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى

إِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ
اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ
الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَ لَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَ لَنِعْمَ دَارُ
الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۰﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۱﴾ الَّذِيْنَ
تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا
الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَ
مَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَ لٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۳۳﴾ فَاَصَابَهُمْ
سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۴﴾ ع

इनसे पहले भी बहुत-से लोग (हक़ को नीचा दिखने के लिए) ऐसी ही मक्कारियाँ कर चुके हैं, तो देख लो कि अल्लाह ने उनके मक्र की इमारत जड़ से उखाड़ फेंकी और उसकी छत ऊपर से उनके सर पर आ रही और ऐसे रुख़ से उनपर अज़ाब आया जिधर से उसके आने का उनको गुमान तक न था। फिर क़ियामत के रोज़ अल्लाह उन्हें ज़लील व ख़ार करेगा। और उनसे कहेगा, ''बताओ अब कहाँ हैं मेरे वे शरीक जिनके लिए तुम (अहले-हक से झगड़े

किया करते थे?- जिन लोगों को दुनिया में इल्म हासिल था वे कहेंगे, ''आज रुसवाई और बदबख़्ती है काफ़िरों के लिए।'' हाँ, उन्हीं काफ़िरों के लिए जो अपने नफ़्स पर जुल्म करते हुए जब मलाइका के हाथों गिरिफ़्तार होते हैं तो (सरकशी छोड़कर) फ़ौरन डगें डाल देते हैं और कहते हैं, ''हम तो कोई कुसूर नहीं कर रहे थे।'' मलाइका जवाब देते हैं, ''कर कैसे नहीं रहे थे! अल्लाह तुम्हारे करतूतों से ख़ूब वाक़िफ़ है। अब जाओ, जहन्नम के दरवाजों में घुस जाओ। वहीं तुमको हमेशा रहना है।'' पस हक़ीक़त यह है कि बड़ा ही बुरा ठिकाना है मुतकब्बिरों के लिए। दूसरी तरफ़ जब ख़ुदातरस लोगों से पुछा जाता है कि यह क्या चीज़ है जो तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल हुई है, तो वे जवाब देते हैं कि ''बेहतरीन चीज़ उतरी है।'' इस तरह के नेकूकार लोगों के लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत का घर तो ज़रूर ही उनके हक़ में बेहतर है। बड़ा अच्छा घर है मुत्तकियों का, दायमी कियाम की जन्नतें, जिनमें वे दाख़िल होंगे, नीचे नहरें बह रही होंगी, और सब कुछ वहाँ ऐन उनकी ख़ाहिश के मुताबिक़ होगा। यह जज़ा देता है अल्लाह मुत्तक़ियों को। उन मुत्तक़ियों को जिनकी रूहें पाकीज़गी की हालत में जब मालाइका कब्ज़ करते हैं तो कहते हैं, ''सलाम हो तुमपर, जाओ जन्नत में अपने आमाल के बदले।'' ऐ नबी, अब जो ये लोग इन्तिज़ार कर रहे हैं तो इसके सिवा अब और क्या बाक़ी रह गया है कि मलाइका ही आ पहुंचें, या तेरे रब का फ़ैसला सादिर हो जाए? इसी तरह की

ढिटाई इनसे पहले बहुत-से लोग कर चुके हैं। फिर जो कुछ उनके साथ हुआ वह उनपर अल्लाह का ज़ुल्म न था, बल्कि उनका अपना ज़ुल्म था जो उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर किया। उनके करतूतों की ख़राबियाँ आख़िरकार उनकी दामनगरी हो गई और वही चीज़ उनपर मुसल्लत होकर रही जिसका वे मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

रुकू–228 (16 अन–नह्ल : 35–40)

وَ قَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ
نَّحْنُ وَ لَآ اٰبَآؤُنَا وَ لَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَ لَقَدْ
بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ
فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَ مِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا
فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ
تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَ مَا لَهُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ
مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ
نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٠﴾ ۧ

ये मुशरिकीन कहते हैं, ''अगर अल्लाह चाहता तो न हम और न हमारे बाप-दादा उसके सिवा किसी और की इबादत करते और न उसके हुक्म के बगैर किसी चीज़ को हराम ठहराते।'' ऐसे ही बहाने इनसे पहले के लोग भी बनाते रहे हैं। तो क्या रसूलों पर साफ़-साफ़ बात पहुँचा देने के सिवा और भी कोई ज़िम्मेदारी है? हमने हर उम्मत में एक रसूल भेज दिया, और उसके ज़रीए से सबको ख़बरदार कर दिया कि ''अल्लाह की बन्दगी करो और तागूत की बन्दगी से बचो।'' इसके बाद उनमें से किसी को अल्लाह ने हिदायत बख़्शी और किसी पर ज़लालत मुसल्लत हो गई। फिर ज़रा ज़मीन में चल-फिरकर देख लो कि झुटलाने वालों का क्या अंजाम हो चुका है- ऐ नबी, तुम चाहे इनकी हिदायत के लिए कितने ही हरीस हो, मगर अल्लाह जिसको भटका देता है फिर उसे हिदायत नहीं दिया करता और इस तरह के लोगों की मदद कोई नहीं कर सकता। ये लोग अल्लाह के नाम से कड़ी-कड़ी कसमें खाकर कहते हैं कि ''अल्लाह किसी मरने वाले को फिर से ज़िन्दा करके न उठाएगा''- उठाएगा क्यों नहीं? यह तो एक वादा है जिसे पूरा करना उसने अपने ऊपर वाजिब कर लिया है, मगर अकसर लोग जानते नहीं हैं। और ऐसा होना इसलिए ज़रूरी है कि अल्लाह इनके सामने इस हक़ीक़त को खोल दे जिसके बारे में ये इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं और मुनकिरिने-हक को मालूम हो जाए कि वे झूटे थे (रहा उसका इमकान, तो) हमें किसी चीज को वुजूद में लाने के लिए इससे ज़्यादा कुछ करना नहीं होता कि उसे हुक्म दें ''हो जा'' और बस वह हो जाती है।

रुकू–229 (16 अन–नह्ल : 41–50)

وَ الَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً ؕ وَ لَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۴۱﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا
وَ عَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْۤ
اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۴۳﴾ بِالْبَيِّنٰتِ وَ
الزُّبُرِ ؕ وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَ
لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۴۴﴾ اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ السَّيِّاٰتِ السَّيِّاٰتِ اَنْ
يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۙ﴿۴۵﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۙ﴿۴۶﴾ اَوْ
يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۷﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا
اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَ الشَّمَآئِلِ
سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَ هُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ لِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي
الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ يَخَافُوْنَ
رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ السجدة

जो लोग ज़ुल्म सहने के बाद अल्लाह की ख़ातिर हिजरत कर गए हैं उनको हम दुनिया ही में अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का अज्र तो बहुत बड़ा है। काश, जान लें वे मजलूम जिन्होंने सब्र

किया है और जो अपने रब के भरोसे पर काम कर रहे हैं (कि कैसा अच्छा अंजाम उनका मुन्तज़िर है)। ऐ नबी, हमने तुमसे पहले भी जब कभी रसूल भेजे हैं आदमी ही भेजे हैं जिनकी तरफ़ हम अपने पैग़ामात वहय किया करते थे, अहले-ज़िक्र से पूछ लो अगर तुम लोग ख़ुद नहीं जानते पिछले रसूलों को भी हमने रौशन निशानियाँ और किताबें देकर भेजा था, और अब यह जिक्र तुमपर नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों के सामने उस तालीम की तशरीह व तौजीह करते जाओ जो उनके लिए उतारी गई है, और ताकि लोग (ख़ुद भी) गौर व फ़िक्र करें। फिर क्या वे लोग जो (दावते-पैग़म्बर की मुख़ालिफ़त में) बदतर से बदतर चालें चल रहे हैं इस बात से बिल्कुल ही बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह उनको ज़मीन में धँसा दे, या ऐसे गोशे से उनपर अज़ाब ले आए जिधर से उसके आने का उनको वहम व गुमान तक न हो, या अचानक चलते-फिरते उनको पकड़ ले, या ऐसी हालत में उन्हें पकड़े जबकि उन्हें ख़ुद आने वाले मुसीबत का खटका लगा हुआ हो और वे उससे बचने की फ़िक्र में चौकन्ने हों? जो कुछ भी करना चाहे ये लोग उसको आजिज़ करने की ताक़त नहीं रखते। हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब बड़ा ही नर्म-ख़ू और रहीम है। और क्या ये लोग अल्लाह की पैदा की हुई किसी चीज़ को भी नहीं देखते कि उसका साया किस तरह अल्लाह के हुज़ूर सजदा करते हुए दाएँ और बाएँ गिरता है? सबके सब इस तरह इज़हारे-अज्ज कर रहे हैं। ज़मीन और आसमानों में जिस क़दर जानदार मख़लूक़ात हैं और जितने

मलाइका, सब अल्लाह के आगे सर बसुजूद हैं। वे हरगिज़ सरकशी नहीं करते अपने रब से जो उनके ऊपर है, डरते हैं और जो कुछ हुक्म दिया जाता है उसी के मुताबिक काम करते हैं।

रुकू–230 (16 अन–नह्ल : 51–60)

وَ قَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْۤا اِلٰهَیْنِ اثْنَیْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِیَّایَ
فَارْهَبُوْنِ ۝٥١ وَ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَهُ الدِّیْنُ وَاصِبًا ؕ
اَفَغَیْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ۝٥٢ وَ مَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا
مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَیْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ۝٥٣ ۚ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا
فَرِیْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ یُشْرِكُوْنَ ۝٥٤ ۙ لِیَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٥٥ وَ یَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا یَعْلَمُوْنَ نَصِیْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ
تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ۝٥٦ وَ یَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ
سُبْحٰنَهٗ ۙ وَ لَهُمْ مَّا یَشْتَهُوْنَ ۝٥٧ وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰی
ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِیْمٌ ۝٥٨ ۚ یَتَوَارٰی مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ
مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَیُمْسِكُهٗ عَلٰی هُوْنٍ اَمْ یَدُسُّهٗ فِی التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ
مَا یَحْكُمُوْنَ ۝٥٩ لِلَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَ لِلّٰهِ
الْمَثَلُ الْاَعْلٰی ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝٦٠ ع

अल्लाह का फ़रमान है कि ‘‘दो खुदा न बना लो, ख़ुदा तो बस

एक ही है, लिहाज़ा तुम मुझी से डरो।" उसी का है वह सब कुछ जो आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और ख़ालिसन उसी का दीन (सारी कायनात में) चल रहा है। फिर क्या अल्लाह को छोड़कर तुम किसी और से तकवा करोगे? तुम को जो नेमत भी हासिल है अल्लाह ही की तरफ से है। फिर जब कोई सख़्त वक़्त तुमपर आता है तो तुम लोग खुद अपनी फ़रियादें लेकर उसी की तरफ़ दौड़ते हो। मगर जब अल्लाह उस वक़्त को टाल देता है तो यकायक तुममें से एक गरोह अपने रब से साथ दूसरों को (इस मेहरबानी के शुक्रिए में) शरीक करने लगता है, ताकि अल्लाह के एहसान की नाशुक्री करे। अच्छा, मज़े कर लो, अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। ये लोग जिनकी हक़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं हैं उनके हिस्से हमारे दिए हुए रिज़्क़ से मुक़र्रर करते हैं- खुदा की क़सम, ज़रूर तुमसे पूछा जाएगा कि ये झूट तुमने कैसे गढ़ लिए थे? ये खुदा के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते हैं। सुब्हान-अल्लाह! और इनके लिए वह जो ये खुद चाहें? जब इनमें से किसी को बेटी के पैदा होने की खुशख़बरी दी जाती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह बस खून का-सा घूँट पीकर रह जाता है। लोगों से छिपता फिरता है कि इस बुरी ख़बर के बाद क्या किसी को मुँह दिखाए। सोचता है कि ज़िल्लत के साथ बेटी को लिए रहे या मिट्टी में दबा दे?- देखो कैसे बुरे हुक्म हैं जो ये खुद के बारे लगाते हैं। बुरी सिफ़ात से मुत्तासिफ़ किए जाने के लायक़ तो वे लोग हैं जो आखिरत का यकीन नहीं

रखते। रहा अल्लाह तो उसके लिए सबसे बरतर सिफ़ात हैं, वही तो सबपर ग़ालिब और हिकमत में कामिल है।

रुकू–231 (16 अन–नह्ल : 61–65)

وَ لَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ لٰكِنْ
يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ
سَاعَةً وَّ لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَ يَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَ تَصِفُ
اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَ
اَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ
لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَ لَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا
فِيْهِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَ اللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ ع

अगर कहीं अल्लाह लोगों को उनकी ज़्यादती पर फ़ौरन ही पकड़ लिया करता तो रुए-ज़मीन पर किसी मुतनफ़्फ़िस को न छोड़ता। लेकिन वह सबको एक वक़्ते-मुक़र्रर तक मुहलत देता है, फिर जब वह वक़्त आ जाता है तो उससे कोई एक घड़ी भर भी आगे-पीछे नहीं हो सकता। आज ये लोग वे चीज़ें अल्लाह के लिए तजवीज़

कर रहे हैं जो ख़ुद अपने लिए इन्हें नापसन्द हैं, और झूट कहती हैं उनकी ज़बानें कि उनके लिए भला ही भला है। उनके लिए तो एक ही चीज़ है, और वह है दोज़ख़ की आग। ज़रूर ये सबसे पहले उसमें पहुँचाए जाएँगे। ख़ुदा की क़सम, ऐ नबी, तुमसे पहले भी बहुत-सी क़ौमों में हम रसूल भेज चुके हैं (और पहले भी यही होता रहा है कि) शैतान ने उनके बुरे करतूत उन्हें ख़ुशनुमा बनाकर दिखाए (और रसूलों की बात उन्होंने मानकर न दी) वही शैतान आज इन लोगों का भी सरपरस्त बना हुआ है और ये दर्दनाक सज़ा के मुस्तहिक बन रहे हैं। हमने यह किताब तुमपर इसलिए नाज़िल की है कि तुम उन इख़ातिलाफ़ात की हक़ीक़त इनपर खोल दो जिनमें ये पड़े हुए हैं। यह किताब रहनुमाई और रहमत बनकर उतरी है उन लोगों के लिए जो इसे मान लें। (तुम हर बरसात में देखते हो कि) अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया और यकायक मुर्दा पड़ी हुई ज़मीन में उसकी बदौलत जान डाल दी। यक़ीनन उसमें एक निशानी है सुनने वालों के लिए।

रुकू–232 (16 अन–नह्ल : 66–70)

وَ اِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ
فَرْثٍ وَّ دَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَ مِنْ ثَمَرٰتِ
النَّخِيْلِ وَ الْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِىْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَ اَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ

اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَ مِمَّا یَعْرِشُوْنَ ﴿۶۸﴾ ثُمَّ
كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ یَخْرُجُ مِنْۢ
بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِیْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ
ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ یَتَوَفّٰىكُمْ ۙ۫ وَ
مِنْكُمْ مَّنْ یُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَیْ لَا یَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَیْـًٔا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ ﴿۷۰﴾

और तुम्हारे लिए मवेशियों में भी एक सबक़ मौजूद है। उनके पेट से गोबर और ख़ून के दरमियान हम एक चीज तुम्हें पिलाते हैं, यानी ख़ालिस दूध, जो पीने वालों के लिए निहायत ख़ुशगवार है। (इसी तरह) खजूर के दरख़्तों और अंगूर की बेलों से भी हम एक चीज़ तुम्हें पिलाते हैं जिसे तुम नशाआवर भी बना लेते हो और पाक रिज़्क भी। यक़ीनन इसमें एक निशानी है अक़्ल से काम लेने वालों के लिए। और देखो, तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर यह बात वहय कर दी कि पहाड़ों में, और दरख़्तों में, और टट्टियों पर चढ़ाई हुई बेलों में, अपने छत्ते बना, और हर तरह के फलों का रस चूस, और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चलती रह। इस मक्खी के अन्दर से रंग-बिरंग का एक शर्बत निकलता है जिसमें शिफ़ा है लोगों के लिए। यक़ीनन इसमें भी एक निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर व फ़िक्र करते हैं।

وَ اللّٰهُ فَضَّلَ بَعۡضَكُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ فِى الرِّزۡقِ‌ۚ فَمَا الَّذِيۡنَ فُضِّلُوۡا
بِرَآدِّىۡ رِزۡقِهِمۡ عَلٰى مَا مَلَـكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَهُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ‌ ؕ
اَفَبِنِعۡمَةِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ۝٧١ وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَـكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ
اَزۡوَاجًا وَّ جَعَلَ لَـكُمۡ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ بَنِيۡنَ وَحَفَدَةً وَّ رَزَقَكُمۡ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ‌ ؕ اَفَبِالۡبَاطِلِ يُؤۡمِنُوۡنَ وَ بِنِعۡمَتِ اللّٰهِ هُمۡ يَكۡفُرُوۡنَ ۙ ۝٧٢ وَ
يَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمۡلِكُ لَهُمۡ رِزۡقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَ
الۡاَرۡضِ شَيۡـئًا وَّ لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ‌ ۚ ۝٧٣ فَلَا تَضۡرِبُوۡا لِلّٰهِ الۡاَمۡثَالَ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
يَعۡلَمُ وَ اَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝٧٤ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبۡدًا مَّمۡلُوۡكًا لَّا
يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّ مَنۡ رَّزَقۡنٰهُ مِنَّا رِزۡقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنۡفِقُ مِنۡهُ
سِرًّا وَّ جَهۡرًا‌ ؕ هَلۡ يَسۡتَوٗنَ‌ ؕ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ‌ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا
يَعۡلَمُوۡنَ ۝٧٥ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيۡنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبۡكَمُ لَا يَقۡدِرُ
عَلٰى شَىۡءٍ وَّ هُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوۡلٰٮهُ ۙ اَيۡنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاۡتِ بِخَيۡرٍ‌ ؕ
هَلۡ يَسۡتَوِىۡ هُوَ ۙ وَ مَنۡ يَّاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ‌ ۙ وَ هُوَ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝٧٦ ع

और देखो, अल्लाह ने तुमको पैदा किया फिर वह तुमको मौत देता है और तुम में से कोई बदतरीन उम्र को पहुँचा दिया जाता है

ताकि सब कुछ जानने के बाद फिर कुछ ना जाने। हक़ यह है कि अल्लाह ही उनमें भी कामिल है और क़ुदरत में भी। और देखो, अल्लाह ने तुममें से बाज़ को बाज़ पर रिज़्क़ में फ़ज़ीलत अता की है। फिर जिन लोगों को यह फ़ज़ीलत दी गई है वे ऐसे नहीं हैं कि अपना रिज़्क अपने ग़ुलामों की तरफ़ फेर दिया करते हों ताकि दोनों इस रिज़्क़ में बराबर के हिस्सेदार बन जाएँ। तो क्या अल्लाह ही का एहसान मानने से इन लोगों को इनकार है? और वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए तुम्हारी हम-जिन्स बीवियाँ बनाई और उसी ने इन बीवियों से तुम्हें बेटे-पोते अता किए और अच्छी-अच्छी चीज़ें तुम्हें खाने को दीं। फिर क्या ये लोग (ये सब कुछ देखते और जानते हुए भी) बातिल को मानते हैं और अल्लाह के एहसान का इनकार करते हैं और अल्लाह को छोड़कर उनको पूजते हैं जिनके हाथ में न आसमानों से इन्हें कुल भी रिज़्क़ देना है न ज़मीन से, और न यह काम वे कर ही सकते हैं? पस अल्लाह के लिए मिसालें न घड़ो, अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते। अल्लाह एक मिसाल देता है। एक तो है ग़ुलाम, जो दूसरे का ममलूक है और ख़ुद कोई इख़्तियार नहीं रखता। दूसरा शख़्स ऐसा है जिसे हमने अपनी तरफ़ से अच्छा रिज़्क़ अता किया है और वह उसमें से खुले और छिपे ख़ूब ख़र्च करता है। बताओ, क्या ये दोनों बराबर हैं?- अलहम्दु-लिल्लाह, मगर अकसर लोग (इस सीधी बात को) नहीं जानते। अल्लाह एक और मिसाल देता है। दो आदमी हैं। एक गूँगा-बहरा है, कोई काम नहीं कर सकता,

अपने आक़ा पर बोझ बना हुआ है, जिधर भी वह उसे भेजे कोई भला काम उससे बन न आए। दूसरा शख़्स ऐसा है कि इनसाफ़ का हुक्म देता है और ख़ुद राहे-रास्त पर क़ायम है। बताओ क्या ये दोनों यकसाँ हैं?

रुकू–234 (16 अन–नह्ल : 77–83)

وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ
الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۷۷﴾ وَ اللّٰهُ
اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَیْـًٔا ۙ وَّ جَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمْ یَرَوْا اِلَى
الطَّیْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِیْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِیْ
ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُیُوْتِكُمْ
سَكَنًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُیُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا یَوْمَ
ظَعْنِكُمْ وَ یَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَ مِنْ اَصْوَافِهَا وَ اَوْبَارِهَا وَ اَشْعَارِهَاۤ
اَثَاثًا وَّ مَتَاعًا اِلٰى حِیْنٍ ﴿۸۰﴾ وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ
جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ سَرَابِیْلَ تَقِیْكُمُ
الْحَرَّ وَ سَرَابِیْلَ تَقِیْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَیْكُمْ
لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَیْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۸۲﴾
یَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ یُنْكِرُوْنَهَا وَ اَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۳﴾ ع

और ज़मीन व आसमान की पोशीदा हक़ाइक़ का इल्म तो अल्लाह ही को है। और क़ियामत के बरपा होने का मामला कुछ देर न लेगा मगर बस इतनी कि जिसमें आदमी की पलक झपक जाए, बल्कि इससे भी कुछ कम। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है। अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला इस हालत में कि तुम कुछ न जानते थे, उसने तुम्हें कान दिए, आँखें दीं और सोचने वाले दिल दिए, इसलिए कि तुम शुक्रगुज़ार बनो। क्या इन लोगों ने कभी परिन्दों को नहीं देखा है कि फ़िज़ा-ए-आसमानी में किस तरह मुसख़्ख़र है? अल्लाह के सिवा किसने उनको थाम रखा है? इसमें बहुत निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को जाए-सुकून बनाया। उसने जानवरों की खालों से तुम्हारे लिए ऐसे मकान पैदा किए जिन्हें तुम सफ़र और क़ियाम दोनों हालतों में हलका पाते हो। उसने जानवरों के सूफ़ और ऊन और बालों से तुम्हारे लिए पहनने और बरतने की बहुत-सी चीज़ें पैदा कर दीं जो ज़िन्दगी की मुद्दते-मुक़र्रर तक तुम्हारे काम आती हैं। उसने अपनी पैदा की हुई बहुत-सी चीज़ों से तुम्हारे लिए साए का इन्तिज़ाम किया, पहाड़ो में तुम्हारे लिए पनाहगाहें बनाई, और तुम्हें ऐसी पोशाकें बख़्शीं जो तुम्हें गर्मी से बचाती हैं और कुछ दूसरी पोशाकें जो आपस की जंग में तुम्हारी हिफ़ाज़त करती हैं। इस तरह वह तुमपर अपनी नेमतों की तकलीम करता है शायद कि तुम फ़रमाँबरदार बनो। अब अगर ये लोग मुँह मोड़ते हैं तो ऐ

नबी, तुमपर साफ़-साफ़ पैग़ामे हक़ पहुँचा देने के सिवा और कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। ये अल्लाह के एहसान को पहचानते हैं, फिर उसका इनकार करते हैं। और इनमें बेशतर लोग ऐसे है जो हक़ मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

रुकू–235 (16 अन–नह्ल : 84–89)

وَ يَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ
لَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ اِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمْ وَ لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَ اِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ
قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا
اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَ اَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ﹰالسَّلَمَ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۸۷﴾ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَ
يَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ
شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ
هُدًى وَّ رَحْمَةً وَّ بُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿۸۹﴾

(इन्हें कुछ होश भी है कि उस रोज़ क्या बनेगी) जबकि हम हर उम्मत में से एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर काफ़िरों को न हुज्जतें पेश करने का मौक़ा दिया जाएगा, न उनसे तौबा व इस्तिग़फ़ार ही

का मुतालबा किया जाएगा। ज़ालिम लोग जब एक दफ़ा अज़ाब देख लेंगे तो उसके बाद न उसके अज़ाब में कोई तख़फ़ीफ़ की जाएगी और न उन्हें एक लम्हाभर मुहलत दी जाएगी। और जब वे लोग जिन्होंने दुनिया में शिर्क किया था अपने ठहराए हुए शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे, ''ऐ परवरदिगार, यही हैं हमारे वे शरीक जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारा करते थे।'' इसपर उनके वे माबूद उन्हें साफ़ जवाब देंगे कि ''तुम झूटे हो, उस वक़्त ये सब अल्लाह के आगे झुक जाएँगे और इनकी वे सारी इफ़तरा परदाज़ियाँ रफूचक्कर हो जाएँगी जो ये दुनिया में करते रहे थे। जिन लोगों ने ख़ुद कुफ़्र की राह इख़्तियार की और दूसरों को अल्लाह की राह से रोका उन्हें हम अज़ाब पर अज़ाब देंगे उस फ़साद के बदले जो वे दुनिया में बरपा करते रहे। (ऐ नबी, इन्हें उस दिन से ख़बरदार कर दो) जबकि हम हर उम्मत में ख़ुद उसी के अन्दर से एक गवाह उठा खड़ा करेंगे जो उसके मुक़ाबले में शहादत देगा, और इन लोगों के मुक़ाबले में शहादत देने के लिए हम तुम्हें लाएँगे। और (यह उसी शहादत की तैयारी है कि) हमने यह किताब तुमपर नाज़िल कर दी है जो हर चीज़ की साफ़-साफ़ वज़ाहत करने वाली है और हिदायत व रहमत व बशारत है उन लोगों के लिए जिन्होंने सरे-तस्लीम ख़म कर दिया है।

रुकू–236 (16 अन–नह्ल : 90–100)

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَائِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى
عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾ وَ

اَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَ لَا تَنْقُضُوا الْاَیْمَانَ بَعْدَ
تَوْكِیْدِهَا وَ قَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَیْكُمْ كَفِیْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِیْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ
تَتَّخِذُوْنَ اَیْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَیْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِیَ اَرْبٰى مِنْ
اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا یَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَ لَیُبَیِّنَنَّ لَكُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ مَا
كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ
لٰكِنْ یُّضِلُّ مَنْ یَّشَآءُ وَ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَ لَا تَتَّخِذُوْۤا اَیْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَیْنَكُمْ فَتَزِلَّ
قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَ تَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِیْلِ
اللّٰهِ ۚ وَ لَكُمْ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۹۴﴾ وَ لَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ
اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۵﴾ مَا عِنْدَكُمْ
یَنْفَدُ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَ لَنَجْزِیَنَّ الَّذِیْنَ صَبَرُوْۤا اَجْرَهُمْ
بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى
وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْیِیَنَّهٗ حَیٰوةً طَیِّبَةً ۚ وَ لَنَجْزِیَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ
بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۹۷﴾ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ﴿۹۸﴾ اِنَّهٗ لَیْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ

عَلٰی رَبِّہِمۡ یَتَوَکَّلُوۡنَ ﴿۹۹﴾ اِنَّمَا سُلۡطٰنُہٗ عَلَی الَّذِیۡنَ یَتَوَلَّوۡنَہٗ وَ الَّذِیۡنَ
هُمۡ بِہٖ مُشۡرِکُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾

अल्लाह अदल व एहसान और सिल-रहमी का हुक्म देता है और बदी व बेहयाई और ज़ुल्म व ज़्यादाती से मना करता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम सबक लो। अल्लाह के अहद को पूरा करो जबकि तुमने उससे कोई अहद बाँधा हो, और अपनी क़समें पुख़्ता करने के बाद तोड़ न डालो जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर गवाह बना चुके हो। अल्लाह तुम्हारे सब अफ़आल से बाख़बर है। तुम्हारी हालत उस औरत की-सी न हो जाए जिसने आप ही मेहनत से सूत काता और फिर आप ही उसे टुकड़े-टुकड़े कर डाला। तुम अपनी कसमों को आपस के मामलात में मक्र व फ़रेब का हथियार बनाते हो ताकि एक क़ौम दूसरे क़ौम से बढ़कर फ़ायदे हासिल करे। हालाँकि अल्लाह इस अहद व पैमान के ज़रीए से तुमको आज़माइश में डालता है, और ज़रूर वह क़ियामत के रोज़ तुम्हारे तमाम इख़्तिलाफ़ात की हकीक़त तुमपर खोल देगा। अगर अल्लाह की मशीयत यह होती (कि तुममें कोई इख़्तिलाफ़ न हो) तो वह तुम सबको एक ही उम्मत बना देता, मगर वह जिसे चाहता है गुमराही में डालता है और जिसे चाहता है राहे-रास्त दिखा देता है, और ज़रूर तुमसे तुम्हारे आमाल की बाज़-पुर्स होकर रहेगी। (और ऐ मुसलमानो!) तुम अपनी क़स्मों को आपस में एक-दूसरे को धोखा देने का ज़रिआ न बना लेना, कहीं ऐसा न

हो कि कोई क़दम जमने के बाद उखड़ जाए और तुम इस जुर्म की पादाश में कि तुमने लोगों को अल्लाह की राह से रोका, बुरा नतीजा देखो और सज़ा भुगतो। अल्लाह के अहद को थोड़े-से फ़ायदे के बदले न बेच डालो, जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुम जानो। जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़र्च हो जाने वाला है और जो कुछ अल्लाह के पास है वही बाक़ी रहने वाला है, और हम ज़रूर सब्र से काम लेने वालों को उनके अज्र उनके बेहतरीन आमाल के मुताबिक देंगे। जो शख़्स भी नेक अमल करेगा ख़ाह वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि हो वह मोमिन, उसे हम दुनिया में पाकीज़ा ज़िन्दगी बसर कराएँगे और (आख़िरत में) ऐसे लोगों को उनके अज्र उनके बेहतरीन आमाल के मुताबिक बख़्शेंगे। फिर जब तुम कुरआन पढ़ने लगो तो शैताने-रजीम से ख़ुदा की पनाह माँग लिया करो। उसे उन लोगों पर तसल्लुत हासिल नहीं होता जो ईमान लाते और अपने रब पर भरोसा करते हैं। उसका ज़ोर तो उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसको अपना सरपरस्त बनाते और उसके बहकाने से शिर्क करते हैं।

रुकू–237 (16 अन–नह्ल : 101–110)

وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ
مُفْتَرٍ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ
رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَ

لَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِیْ
يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِیٌّ وَّ هٰذَا لِسَانٌ عَرَبِیٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۳﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَ لَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾ اِنَّمَا يَفْتَرِی الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ
اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَ لٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ
صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا
يَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ وَ
سَمْعِهِمْ وَ اَبْصَارِهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ
فِی الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ
مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَ صَبَرُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ ع

जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत नाज़िल करते हैं- और अल्लाह बेहतर जानता है कि वह क्या नाज़िल करे- तो ये लोग कहते हैं कि तुम यह क़ुरआन ख़ुद घड़ते हो। अस्ल बात यह है कि उनमें से अकसर लोग हक़ीक़त से नावाक़िफ़ हैं। उनसे कहो

कि उसे तो रुहुल-कुदुस ने ठीक-ठीक मेरे रब की तरफ़ से बतदरीज नाज़िल किया है ताकि ईमान लाने वालों के ईमान को पुख़्ता करे और फ़रमाँबरदारों को ज़िन्दगी के मामलात में सीधी राह बताए और उन्हें फ़लाह व सआदत की ख़ुशखबरी दे। हमें मालूम है ये लोग तुम्हारे मुताल्लिक़ कहते हैं कि उस शख़्स को एक आदमी सिखाता-पढ़ाता है, हालाँकि उनका इशारा जिस आदमी की तरफ़ है उसकी ज़बान अजमी है और यह साफ़ अरबी ज़बान है। हक़ीक़त यह है कि जो लोग अल्लाह की आयात को नहीं मानते अल्लाह कभी उनको सही बात तक पहुँचने की तौफ़ीक़ नहीं देता और ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अजाब है। (झूटी बातें नबी नहीं घड़ता, बल्कि) झूट वे लोग घड़ रहे हैं जो अल्लाह की आयात को नहीं मानते, वही हक़ीक़त में झूटे हैं। जो शख़्स ईमान लाने के बाद कुफ़्र करे (वह अगर) मजबूर किया गया हो और दिल उसका ईमान पर मुत्मइन हो (तब तो ख़ैर) मगर जिसने दिल की रज़ामन्दी से कुफ़्र को कबूल कर लिया उसपर अल्लाह का ग़ज़ब है और ऐसे सब लोगों के लिए बड़ा अज़ाब है। यह इसलिए कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया, और अल्लाह का क़ायदा है कि वह उन लोगों को राहे-नजात नहीं दिखाता जो उसकी नेमत का कुफ़रान करें। ये वे लोग हैं जिनके दिलों और कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है, ये ग़फ़लत में डूब चुके हैं। ज़रूर है कि आख़िरत में यही ख़सारे में रहें। बख़िलाफ़ इसके जिन लोगों का हाल यह है

कि जब (ईमान लाने की वजह से) वे सताए गए तो उन्होंने घर-बार छोड़ दिए, हिजरत की, राहे-खुदा में सख़्तियाँ झेलीं और सब्र से काम लिया, उनके लिए यक़ीनन तेरा रब ग़फ़ूर व रहीम है।

रुकू–238 (16 अन–नह्ल : 111–119)

يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا
عَمِلَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ
اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ
بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَ الْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا
يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ وَ هُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّ
اشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ
الْمَيْتَةَ وَ الدَّمَ وَ لَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَ مَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَا
تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ ﴿١١٦﴾ مَتَاعٌ
قَلِيْلٌ ۪ وَّ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَ عَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا
قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ مَا ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا
مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

(इन सबका फ़ैसला उस दिन होगा) जबकि हर मुतनफ़्फ़िस अपने ही बचाव की फ़िक्र में लगा हुआ होगा और हर एक को उसके किए का बदला पूरा-पूरा दिया जाएगा और किसी पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म न होने पाएगा। अल्लाह एक बस्ती की मिसाल देता है। वह अमन व इत्मीनान की जिन्दगी बसर कर रही थी और हर तरफ़ से उसको बफ़राग़त रिज़्क़ पहुँच रहा था कि उसने अल्लाह की नेमतों का कुफ़रान शुरू कर दिया। तब अल्लाह ने उसके बाशिन्दों को उनके करतूतों का यह मज़ा चखाया कि भूक और ख़ौफ़ की मुसीबतें उनपर छा गईं। उनके पास उनकी अपनी क़ौम में से एक रसूल आया। मगर उन्होंने उसको झुटला दिया। आख़िरकार अज़ाब ने उनको आ लिया जबकि वे ज़ालिम हो चुके थे। पस ऐ लोगो, अल्लाह ने जो कुछ हलाल और पाक रिज़्क़ तुमको बख़्शा है उसे खाओ और अल्लाह के एहसान का शुक्र अदा करो। अगर तुम वाक़ई उसी की बन्दगी करने वाले हो। अल्लाह ने जो कुछ तुमपर हराम किया है वह है मुर्दार और ख़ून और सूअर का गोश्त और वह जानवर जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो। अलबत्ता भूक से मजबूर और बेकरार होकर अगर कोई इन चीज़ों को खा ले, बगैर इसके कि वह क़ानूने-इलाही की ख़िलाफ़वर्ज़ी का ख़ाहिशमन्द हो या हद्दे-जरूरत से तजावुज़ का

मुर्तकिब हो, तो यक़ीनन अल्लाह माफ़ करने और रहम फ़रमाने वाला है। और यह जो तुम्हारी ज़बानें झूटे अहकाम लगाया करती हैं कि यह चीज़ हलाल है और वह हराम, तो इस तरह के हुक्म लगाकर अल्लाह पर झूट न बाँधो। जो लोग अल्लाह पर झूटे इफ़तरा बाँधते हैं वे हरगिज़ फ़लाह नहीं पाया करते। दुनिया का ऐश चन्द रोज़ा है। आख़िरकार उनके लिए दर्दनाक सज़ा है। वे चीज़ें हमने ख़ास तौर पर यहूदियों के लिए हराम की थीं जिनका ज़िक्र इससे पहले हम तुमसे कर चुके हैं और यह उनपर हमारा ज़ुल्म न था, बल्कि उनका अपना ही ज़ुल्म था जो वे अपने ऊपर कर रहे थे। अलबत्ता जिन लोगों ने जहालत की बिना पर बुरा अमल किया और फिर तौबा करके अपने अमल की इस्लाह कर ली तो यक़ीनन तौबा व इस्लाह के बाद तेरा रब उनके लिए ग़फ़ूर और रहीम है।

रुकू–239 (16 अन–नह्ल : 120–128)

إِنَّ إِبْرٰهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيفًا ۗ وَ لَمْ يَكُ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۗ اجْتَبٰهُ وَ هَدٰهُ إِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٢١﴾ وَ اٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَ إِنَّهُ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ
الصّٰلِحِينَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرٰهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَ
مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾ إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا
فِيهِ ۗ وَ إِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ

يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ
الْحَسَنَةِ وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ
ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَ اِنْ عَاقَبْتُمْ
فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۭ وَ لَىِٕنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ
لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَ اصْبِرْ وَ مَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَ لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَ
لَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِيْنَ
هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾ ع

वाक़िआ यह है कि इबराहीम अपनी ज़ात से एक पूरी उम्मत था, अल्लाह का मुतीए-फ़रमान और यकसू। वह कभी मुशरिक न था। अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करने वाला था। अल्लाह ने उसको मुन्तख़ब कर लिया और सीधा रास्ता दिखाया। दुनिया में उसको भलाई दी और आख़िरत में वह यक़ीनन सालिहीन में से होगा। फिर हमने तुम्हारी तरफ़ यह वहय भेजी कि यकसू होकर इबराहीम के तरीक़े पर चलो और वह मुशरिकों में से न था। रहा 'सब्त', तो वह हमने उन लोगों पर मुसल्लत किया था जिन्होंने उसके अहकाम में इख़्तिलाफ़ किया, और यक़ीनन तेरा रब क़ियामत के दिन उन सब बातों का फ़ैसला कर देगा जिनमें वे इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं। ऐ नबी, अपने रब के रास्ते की तरफ़ दावत दो हिकमत और उम्दा नसीहत के साथ, और लोगों से

मुबाहिसा करो ऐसे तरीक़े पर जो बेहतरीन हो। तुम्हारा रब ही ज़्यादा बेहतर जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और कौन राहे-रास्त पर है। और अगर तुम लोग बदला लो तो बस उसी क़दर ले लो जितनी तुमपर ज़्यादती की गई हो। लेकिन अगर तुम सब्र करो तो यक़ीनन यह सब्र करने वालों ही के हक़ में बेहतर है। ऐ नबी, सब्र से काम किए जाओ- और तुम्हारा यह सब्र अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है- उन लोगों की हरकात पर रंज न करो और न उनकी चालबाज़ियों पर दिल तंग हो। अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़्वा से काम लेते हैं और एहसान पर अमल करते हैं।